RNI No- UPHIN/2017/74520

त्रैमासिक पत्रिका

साहित्य सरोज

माह अक्टूबर 2021 से दिसम्बर 2021

वर्ष 7 अंक 4 मूल्य 30

7वाँ गोपाल राम गहमरी साहित्यकार सम्मेलन एवं सम्मान समारोह 2021 विशेषांक

साहित्य सरोज

एक सम्पूर्ण साहित्यिक पत्रिका

वर्ष–7 अंक –4

RNI No- UPHIN/2017/74520

माह अक्टूबर 2021 से दिसम्बर 2021

संस्थापिका –ः स्व०श्रीमती सरोज सिंह

संरक्षक –ः श्रीमती कान्ति शुक्ला ‘‘उर्मि’’ भोपाल

प्रकाशक –ः अखंड प्रताप सिंह‘‘अखंड गहमरी’’

संपादक –ः डा० अखंड प्रताप सिंह, गहमर, गाजीपुर

प्रधान कार्यालय –ः

मेन रोड,गहमर, गाजीपुर

मो० 9451647845

ईमेल sarojsahitya55@gmail.com

बेवसाइट–ः https://www.sarojsahitya.page/

मोबाइल अप्लीकेशन प्ले स्टोर– साहित्य सरोज

प्रति अंक –३०रूपये मात्र, चार वर्ष शुल्क –ः ५०० रूपये मात्र, आजीवन ५००० रूपये मात्र

स्वत्वाधिकारी,मुद्रक, प्रकाशक अखंड प्रताप सिंह, रधुवर सिंह का कटरा, मेन रोड, ग्राम व पोस्ट गहमर, तहसील जमानियाँ, जनपद गाजीपुर, उ०प्र० पिन २३२३२७ द्वारा पंकज प्रकाशन आमघाट,गाजीपुर से मुद्रित एवं अखण्ड प्रताप सिंह द्वारा प्रकाशित।

पत्रिका में छपे लेख,कहानीयाँ एवं अन्य विषयक सामाग्री लेखक के अपने विचार है, इनका किसी व्यक्ति या स्थान से मिलना संयोग मात्र है। किसी विवाद का निपटारा गाजीपुर न्यायालय में होगा।

तकनीकि पक्ष–ः कम्पोजिंग, डिजाइनिंग, कवर डिजाइनिंग अखंड प्रताप सिंह‘‘अखंड गहमरी’’ प्रिटिंग पंकज प्रकाशन आमघाट गाजीपुर चित्र –गूगल ईमेज द्वारा।

साहित्य सरोज के पाठक सदस्य बने और मोबाइल अपप्लिकेशन का प्रयोग कर सीधे साहित्य सरोज एवं साहित्यकारो की दुनिया में रचना भेजें।

साहित्य सारोज की संस्थापिका श्रीमती सरोज सिंह की प्रथम पुण्य तिथि 02 अप्रैल को मनावे विश्व जननी हरियाली दिवस के रूप में करें एक पौधा माँ का समर्पित!

अखंड गहमरी

आपके नाम

साहित्य सरोज पत्रिका के सातवें वर्ष का चतुर्थ अंक आप सभी के हाथों में पहुँच चुका है। 7वॉं गोपाल राम गहमरी साहित्यकार सम्मेलन एवं सम्मान समारोह 2021 बीत चुका है। इस कार्यक्रम को विस्तार से आप इस अंक में न सिर्फ पढ़ेगे बलिक उसकी तस्वीरों से भी रूबरू होगें।

मैं कान्ति शुक्ला इस पत्रिका की प्रधान संपादिका होने के कारण हमेशा से इस बात से चिंतित रहती हूँ कि कैसे आज की नई पीढ़ी में लेखन की क्षमता को बढ़ाया जाये। आज की नई पीढ़ी मोबाइल में डूब कर पढ़ने की कला ही भूल चूकि है, और जब तक हम एक दूसरे को पढ़ेगें नहीं किसी भी कीमत पर लेखन में धार नहीं ला सकेगें। हम अपने गोपाल राम गहमरी साहित्यकार सम्मेलन में नये रचनाकारों के साथ स्थापित रचनाकारों को बैठा कर सीखने-सीखाने का मौका इसी उद्धेश्य की पूर्ति के लिए देते है।

गोपाल राम गहमरी साहित्यकार सम्मेलन 2021 में पत्रिका के विकास के लिए नये संपादक सहित कुछ नये पदाधिकारी भी नियुक्त किये गये हैं, जो आपके बीच आकर आप को लेखन के प्रेरित करेगें और पत्रिका के स्तर को बढ़ाने में हमारी मदद करेगें।

इसके साथ पत्रिका ने अपनी संस्थापिका श्रीमती सरोज सिंह के पुण्य तिथि 02 अप्रैल 2022 को शार्टफिल्म दिवस के रूप में मनाने का फैसला किया है। जिसके विषय में विस्तृत जानकारी 15 जनवरी को पत्रिका के बेवसाइट पर मिलेगी।

अंत में आप सभी से निवेदन करती हूँ कि पत्रिका के उत्थान में सहयोग करने की कृपा करें।

कान्ति शुक्ला
प्रधान संपादक साहित्य सरोज

इस अंक में

संस्मरण	कान्ति माँ के कलम से	कान्ति शुक्ला	04
प्रेरणा	पंखों के बिना हौसले	किशोर श्रीवास्तव	05
कविता	राजाकांता राज पटना व जमुनाकृष्ण राज चेन्नई		08
कविता	संगीता सूर्यप्रकाश व मंजू राय शर्मा		09
कविता	निवेदिता सिन्हा भागलपुर व लाल देवेन्द्र बस्ती		10
संस्मरण	मैं और गोपाल राम गहमरी	उ0नि0 रणजीत यादव	11
कविता	दूसरे देश के मतदाता	राम भोल शर्मा पागल	12
व्यंग्य	पोमेरेनियन खरगोश	मीना अरोड़ा	13
कविता	गैर तो गैर	शालू सिंह	14
संस्मरण	मैं और गोपालराम गहमरी	राम भोले शर्मा पागल	15
कविता	उम्मीद	नीलम शर्मा	15
समाचार	सोशल मीडिया मैत्री सम्मेलन	किशोर श्रीवास्तव	16
संस्मरण	हिमाचल की यात्रा भाग एक	डॉ आलोक प्रेमी	17
चिंता	आत्महत्या	सन्नी कुमारी	19
दुदर्शा	बेचारा खंडवा	घनश्याम मैथिल अमृत	20
कहानी	मैं कायर हूँ	डॉ पूरन सिंह	23
कहानी	सफर से हमसफ़र	अंकुर सिंह	29
कविता	नेहा नाहटा दिल्ली व प्रज्ञा देवले खरगोन		30
लेख	लव जिहाद	ज्योति राय	31
कविता	सूर्यद्वीप वाराणसी व मानसी शर्मा दिल्ली		32
कविता	मुकेश अमन बाड़मेड़ व उमेश पाठक बक्सर		33
कविता	अंशु अडमानी		40

7वें गोपाल राम गहमरी साहित्यकार सम्मेलन एवं सम्मान समारोह 2021 पर एक रिपोर्ट – 34

अखंड गहमरी की कलम से गोपाल राम गहमरी साहित्यकार सम्मेलन एवं सम्मान समारोह 2021 – 37

सातवें गोपाल राम गहमरी साहित्यकार सम्मेलन की खास बातें – 40

एआईझ्रएम" इंटरनेशनल डिजिटल शार्ट फिल्म फेस्टिवल (इंडिया) 2020 एक रिपोर्ट – 41

संस्मरण

कांति माँ की कलम से

यह अंक आपको कैसा लगा 7068990410पर वाटस्एप करें

बात **23** दिसम्बर **2017** की है। अनायास ही बाजार में अपनी एक सखी सुधा से भेंट हो गई। देखकर सुखद आश्चर्य हुआ। हमने तो कल्पना भी नहीं की थी कि इतने दिनों बाद कभी ऐसे भी जीवन के इस मोड़ पर मिलना हो जायेगा। हम दोनों अपनी खरीदारी का मोह त्याग कर एक रेस्टोरेंट में आकर बैठ गए। बातों का सिलसिला चल निकला। कितनी बातें थीं कहने-सुनने को, कितने अविस्मरणीय पल थे जो हमें पुनः जीने थे। बातचीत के मध्य मैंने गौर किया कि बात करते करते सुधा बीच में कहीं गुम सी हो जाती है जैसे किसी चिंता से ग्रस्त हो। पूछने पर पता चला कि बेचारी अपनी सासू माँ से परेशान है। हमारे यहाँ अधिकांश विशेष तौर से दो ही प्रकार की बहुएं हैं- एक वे जो सास के अत्याचारों से पीड़ित हैं, दूसरी वे जो स्वंय सास की नाक में दम किए हैं। बीच की राह चलने वाले प्राणी अब विलुप्त श्रेणी में प्रवेश कर रहे हैं। तो बात त्रस्त भीत सुधा की है जिसकी सास इन दिनों उस के साथ हैं।

तीन कमाऊ श्रवणकुमारों की माँ - बारी-बारी से जहाँ मन चाहा, उसी बेटे के पास पहुँच जाती हैं और शेष दोनों बहुओं की घोर निंदा का रसास्वादन जिस बहू के साथ होतीं हैं नियमपूर्वक करातीं रहतीं हैं। यह चक्र अनवरत चलता रहता है और क्रमानुसार प्रत्येक बहू इस निंदा का शिकार बनती है। निंदा भी कैसी- पेट भर खाने को नहीं देती, गर्म रोटी को तरस जाते हैं, बड़ी कंजूस है, फल मेवा कम देती है, दस बार कहो तब दूध ,चाय, नींबू पानी बनाकर देती है।जब देखो तब अपने मायके वालों से फोन पर गपियाती रहती है। बच्चों को सिखाए है दादी से बात मत करो, एकदम संस्कारहीन है - आदि-आदि। जबकि हकीकत यह है कि हर बहू सामर्थ्य भर उनकी सेवा में कमी नहीं रखती और वे ७० वर्ष की आयु में पूर्णतः स्वस्थ हैं। अभी अपने बेटे से कह कर पूरा चैकअप करवाया ,२५००० लग गए, कुछ नहीं निकला। यहाँ तक कि बीपी शुगर भी नहीं जो इस आयु में स्वाभाविक है। खाने का नियम यह है कि सुबह की शुरूआत शहद डले नींबू पानी से होती है। फिर चाय के साथ बादाम,अखरोट, मुनक्का और मिश्री का मिश्रण। नाश्ते में घी के पराठे के साथ एक गिलास दूध, लंच में गर्मागर्म रोटी ,दाल,सब्जी ,दही परमावश्यक है। इसके बाद फल। शाम की चाय स्नैक्स के साथ और डिनर में भी सब्जी गर्म रोटी और कुछ मीठा। सोते समय दूध भी अन्यथा रोना शुरू हाय पैरों में जान नहीं रही, कोई हमारा ख्याल नहीं रखता। बीच बीच में अन्य फर्माइशें - मोती भस्म ला दो, हाय च्यवनप्राश खतम हो गया, घुटनों में लगाने का तेल और टहनिक लाने की इस घर में किसी को याद नहीं, - ऊपर से दूध का गिलास भी पूरा भर कर नहीं दिया जाता बहू से। किसी के दुख सुख से मतलब नहीं उन्हें सिर्फ अपने खाने-पहनने की चिंता। यदि बच्चों की पढ़ाई के समय टीवी धीमा करने की कह दो तो फौरन चिल्लाना शुरू- हाय मेरे ही बेटे के घर में टीवी देखने की इजाज़त नहीं। फिर खुद ही मोबाइल पर रिश्तेदारों से शिकायतें करना शुरू कर देतीं हैं। अपने हाथ तो सब सेवा करने के बाद भी केवल बुराई ही आती है।

अब आज एक नई समस्या आ गई है जो मुझे चिंता में डाले है- सुधा रुंधे स्वर में कह रही थी। क्यों ऐसा क्या हो गया, मैंने पूछा तो बोली, आज उन्होंने अल्टीमेटम दे दिया है कि उन्हें भी लैपटाप चाहिए। कई दिनों से पति और बच्चों को अपने-अपने लैपटहप पर काम करते घूर- घूर कर देखतीं थीं पर परिणाम यह निकलेगा, मैंने सोचा भी नहीं था। अब तुम्हीं बताओ - मात्र अक्षर ज्ञान वाली मेरी सासू माँ लैपटाप का क्या करेंगी, विचारणीय प्रश्न है। लेकिन उन्हें चाहिए ही क्योंकि सबके पास है और वे किसी से कमतर नहीं रहना चाहतीं। एक तो सुरसा जैसी मुख फाड़ महंगाई, ऊपर से उनकी जिद - क्या करें। ऐसी स्थिति में उनके आज्ञाकारी बेटे तटस्थ हो परमहंस बनकर बैठ जाते हैं। मुझे सुधा की बात सुनकर हँसी आ गई- अब क्या करेगी, लेकर देगी क्या। हाँ, उदास लहज़े में सुधा बोली, छोटा बेटा इस साल दसवीं कक्षा में है, उसकी कोचिंग के लिए कुछ रुपए बचा कर रखे हैं उन्हीं से ले दूँगी वर्ना जीना मुश्किल कर देंगी।

मैने भारी मन से सुधा से विदा ली। अपने घर आते समय रास्ते भर यही प्रश्न मेरे मन को आंदोलित करता रहा कि आज जब लोग बुजुर्गों के प्रति 'सम्मान करें, उनका ध्यान धरें' की बात करते हैं ,यह उचित भी है जिन बुजुर्गों के आशीर्वाद से हमें सुखी और समृद्ध जीवन मिला है, उनकी यथोचित सेवा हमारा धर्म और कर्तव्य है पर ऐसे बुजुर्गों को भी अपने बच्चों की भावनाओं और आवश्यक आवश्यकताओं का ख्याल रखने की मंशा नहीं रखनी चाहिए क्या ?

कान्ति शुक्ला
प्रधान संपादक
साहित्य सरोज, भोपाल

प्रेरणा

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटसएप करें

परवों के बिना हौसलों की उड़ान

किन्हीं शारीरिक अक्षमताओं के बावजूद किसी व्यक्ति के मन में यदि जीवन जीने के प्रति उत्साह हो और मन में कुछ कर गुजरने की इच्छा शक्ति हो तो शरीर की किन्हीं कमियों को भी उस व्यक्ति के सामने नतमस्तक होकर घुटने टेकने पर मजबूर होना पड़ता है। देश-दुनिया में ऐसे लोगों की एक लम्बी फेहरिश्त है जिन्होंने शारीरिक अक्षमता को धत्ता बताते हुए कुछ ऐसे गज़ब और अनूठे कारनामें करके दुनिया को अचंभित किया जो शायद किसी सक्षम व्यक्ति के लिए भी कर पाना संभव नहीं होता। विश्व चैंपियन खिलाड़ी भरत कुमार,बैडमिंटन चैंपियन गिरीश शर्मा हों, नृत्यांगना सुधा चंद्रन, अभिनेता टह्म क्रूज़, रह्बन विलियम्स, लेखिका हेलेन केलर, माउंट एवरेस्ट विजेता अरुणिमा सिन्हा हों और या वैज्ञानिक स्टीफन हाकिंग अथवा अलबर्ट आइन्स्टीन; इन और इन जैसे अनेक लोगों ने ज़िन्दगी के अँधेरे कोने से निकलकर और विभिन्न कीर्तिमान रचकर न केवल दुनिया के सामने एक नयी मिसाल पेश की अपितु लाखों-करोड़ों लोगों के प्रेरणाश्रोत भी बने।यहाँ हम कुछ ऐसे ही भारतीयों के बारे में पाठकों को बताना चाहेंगे जिन्होंने बेशक कोई बहुत बड़ा विश्व कीर्तिमान न रचा हो लेकिन निराशा के बीच से खुद को उबार कर और खुद में एक उम्मीद जगा कर उन्होंने अनेक लोगों को प्रेरित करने का काम अवश्य किया है।

इनमें से पहली कहानी जीवन के ६० बसंत देख चुके कोटा रेलवे में अधिकारी के पद से स्वैच्छिक सेवा निवृति ले चुके कोटा निवासी श्री सुरेश चन्द्र सर्वहारा की है जो मूलतः एक कवि हैं । बच्चों एवं बड़ों के लिए आपके अब तक बाईस काव्य संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं। देश की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में आपकी कविताओं का प्रकाशन भी होता रहता है । उदयपुर (राजस्थान) में जन्में श्री सर्वहारा के शब्दों में, 'उन दिनों हमारा परिवार किराए के एक कमरे में रहता था। घर की आर्थिक स्थिति डाँवाडोल थी और किसी सम्बन्धी से किसी प्रकार का सहारा नहीं था । ६ भाई-बहनों में दो मुझसे बड़े और तीन छोटे थे । जीवन अभावों में ही सही, अच्छे भविष्य की आशा में चल ही रहा था कि चार वर्ष की अवस्था में मैं लकवे का शिकार हो गया । इस घातक बीमारी ने मेरे बचपन की आजादी को हमेशा के लिए छीन लिया । उस समय माता-पिता और बड़े भाई बहन ही मुझे उठाकर कहीं इधर-उधर ले जाते और मन बहलाने का भरसक प्रयास करते । बाद में मैं दीवार के सहारे बैठने लगा और आवश्यकता के अनुसार थोड़ा-थोड़ा सरकने भी लगा । तमाम शारीरिक परेशानियों के बावजूद मैंने अपनी लगन और मेहनत के बल पर आठवीं तक की सभी कक्षाएँ अच्छे अंकों के साथ उत्तीर्ण की और ग्रामीण प्रतिभावान खोज परीक्षा में भाग लेकर प्रथम स्थान भी प्राप्त किया । आगामी तीन सालों के लिए मुझे सरकार की ओर से पढ़ाई हेतु छात्रवृत्ति भी मिलने लगी । वर्ष १९७७ में दसवीं की परीक्षा कला वर्ग से ७८ प्रतिशत अंकों से एवं १९७८ में ग्यारहवीं कक्षा ७९ प्रतिशत अंकों से उत्तीर्ण की । ग्यारहवीं की परीक्षा में माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, अजमेर (राज.) की योग्यता सूची में नवाँ स्थान प्राप्त किया। यह पढ़ाई चिमनी और लालटेन की रोशनी में ही पूरी हुई । आगामी उच्च शिक्षा के लिए कोटा महाविद्यालय में प्रवेश लिया, किन्तु एक वर्ष के उपरान्त ही स्वास्थ्य ठीक नहीं होने के कारण स्वयं पाठी के तौर पर स्नातक तक की परीक्षा पास की। फिर स्नातकोत्तर परीक्षा संस्कृत विषय में प्रथम श्रेणी में उत्तीर्ण की । इसके बाद खाली समय में राजस्थान प्रशासनिक अधीनस्थ सेवा परीक्षा एवं महाविद्यालय के व्याख्याता पद हेतु राजस्थान लोक सेवा आयोग की परीक्षाएँ उत्तीर्ण की, लेकिन शारीरिक विकलांगता अधिक होने के कारण साक्षात्कार में मेरा चयन नहीं हो सका । हालाँकि कुछ अपनी मेहनत और कुछ ईश्वर की मेहरबानी रही कि नियोजन कार्यालय, कोटा के माध्यम से ११ सितम्बर १९८७ को पश्चिम रेलवे, कोटा जंक्शन पर लेखा लिपिक के लिए मेरा चयन हो गया । कार्यस्थल आवास से दस किलोमीटर दूर था । आटोरिक्शा के माध्यम से आने-जाने की व्यवस्था हुई । कार्यालय में एक तरफ से खुली कुर्सी का हत्था पकड़ कर बैठ व उतर जाता था । धीरे-धीरे विभागीय परीक्षाएँ उत्तीर्ण कर अनुभाग अधिकारी (लेखा) केपद पर पदोन्नत हो गया सेवाकाल में ही रहकर एम. ए. (हिन्दी) की परीक्षा उत्तीर्ण की ।रेल सेवा में रहते हुए मण्डल एवं मुख्यालय स्तर के कई पुरस्कार भी मिले । शारीरिक स्वास्थ्य में गिरावट के कारण सेवा के २२ वर्ष पूर्ण होने पर ३१ अक्टूबर २००६ को मैंने स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ले ली । अविवाहित होने से विशेष उत्तरदायित्व नहीं है, अतः पेंशन राशि से भली भाँति निर्वाहन हो जाता है । अब घर पर ही रहकर अध्ययन लेखन चलता रहता है ।

यह दूसरी कहानी दिल्ली के श्री एस. जी. एस. सिसोदिया जी की है । दिल्ली सरकार के शिक्षा विभाग में अनुभाग अधिकारी के पद पर कार्यरत एवं साहित्यिक अभिरुचि के श्री सिसोदिया कहने को नेत्रहीन हैं लेकिन उनकी दूर दृष्टि

प्ररेणा

और ऊँची उड़ान अक्सर दंग करने वाली होती है। १५ जुलाई १६७० को उत्तर प्रदेश के मथुरा में जन्में श्री सिसोदिया की प्रारम्भिक शिक्षा मथुरा के ही ग्राम छटीकरा के एक प्राथमिक विद्यालय में हुयी परन्तु सात वर्ष की आयु में ही चेचक के प्रकोप के चलते आपके आँखों की ज्योति पूर्ण रूपेण चली गयी । इस कारण उन्हें वृन्दावन के एक छोटे-से दृष्टिबाधितों के विद्यालय में प्रवेश लेना पड़ा । बाद में आपने अजमेर के मशहूर महाविद्यालय गवर्मेंट कालेज आफ अजमेर (जी.सी.ए.) से स्नातक एवं सन २००० में हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय (शिमला) से हिन्दी विषय में स्नातकोत्तर की डिग्री प्राप्त की । आपकी पढ़ाई यहीं नहीं रुकी । आपने "आल इंडिया कन्फेडरेशन आफ दि ब्लाइंड" दिल्ली से हिन्दी आशुलिपिक प्रशिक्षण प्राप्त कर उसी संस्थान में एक वर्ष तक अवैतनिक रूप से अपनी सेवाएँ भी दीं । मई १६६४ में आपने सरकारी सेवा में बतौर आशुलिपिक कार्यभार ग्रहण किया और फिर तरक्की करते हुए २००८ में सहायक रोज़गार अधिकारी के पद तक पहुंचे।जहाँ तक आपकी साहित्यिक यात्रा की बात है तो आपकी रुचि बचपन से ही कविताएं, गीत, गज़लें तथा मुक्तक एवं गद्य लिखने में रही । विभिन्न छोटी बड़ी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशन के अलावा विभिन्न संस्थाओं की गोष्ठियों एवं कवि सम्मेलनों में भी आप सक्रिय रूप से भाग लेते रहे ।विभिन्न साझा संग्रहों के अलावा आपकी अनेक कहानी, लघुकथा और उपन्यास आदि की अनेक एकल पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं । पाँच पुस्तकें दृष्टिबाधित व्यक्तियों हेतु ब्रेल लिपि में प्रकाशित तथा इसी प्रकार ये पुस्तकें अहृडियो फार्मेट में भी उपलब्ध हैं। अपने उत्कृष्ट लेखन के चलते ही आपको देश की विभिन्न संस्थाओं द्वारा अनेक बार सम्मानित होने का अवसर भी मिला है ।

आप "इंडियन एसोसिएशन आफ दि ब्लाइंड" के माध्यम से लगातार दृष्टिबाधित व्यक्तियों के शैक्षणिक एवं सामाजिक उत्थान के प्रयास भी करते रहे हैं। खेल आयोजनों के अलावा संस्था द्वारा एक निःशुल्क अहृडियो लाइब्रेरी भी चलाई जा रही है । श्री सिसोदिया "प्रणेता" नामक संस्था के माध्यम से नवोदित साहित्यकारों को मंच उपलब्ध कराने का पुनीत कार्य भी कर रहे हैं।

हमारी अगली और तीसरी कहानी पीयूष जी की है । उत्तर प्रदेश के फतेहपुर जनपद के एक ग्राम में अपने ननिहाल में जन्में पीयूष द्विवेदी अभी मात्र १४ माह के ही हुए थे कि उन्हें

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटसएप करें

एक रोज़ तेज़ बुखार आया तथा डायरिया हो गया। इलाज़ के दौरान एक गलत इंजेक्शन के चलते उनका शरीर विकलांगता ग्रस्त हो गया। पीयूष की विकलांगता ने उनकी माँ के लिए भी मुसीबत खड़ी कर दी क्योंकि सम्पन्नता के बावजूद उनके ससुराल वालों ने उन्हें अनेक आरोपों के साथ घर से ही बेदखल कर दिया ।खड़े होने में असमर्थ और हाथों व घुटनों के बल घिसटकर चलने के बावजूद पीयूष की याददास्त बहुत अच्छी थी जिसके चलते घर एवं गाँव में यह बालक कौतुहल का विषय बनता चला गया था । इनकी प्रारंभिक शिक्षा ननिहाल के ही गाँव में सरकारी प्राथमिक विद्यालय में मुश्किल से पूरी हुई। अनेक संघर्ष के बाद पीयूष ने ननिहाल में रहते हुए ही इंटर किया और उसके बाद बी.ए. की पढ़ाई हेतु चित्रकूट स्थित जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय में प्रवेश लिया। हालाँकि भीषण शारीरिक असमर्थता के चलते पूर्व के स्कूलों की तरह वहां भी इन्हें बहुत हतोत्साहित किया गया लेकिन अंततः बी.ए. तथा एम.ए.(हिंदी) में सर्वोच्च अंक प्राप्त कर और स्वर्गीय गंगानारायण त्रिपाठी स्वर्ण पदक हासिल कर इन्होंने सबकी बोलती बंद कर दी थी । यही नहीं लगातार पाँच बार विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू.जी.सी) द्वारा आयोजित राष्ट्रीय पात्रता परीक्षा (नेट) क्वालीफाई करके भी इन्होंने सबको अचरज में डाल दिया। २०१३ ई. में हिंदी में परास्नातक की उपाधि स्वर्ण पदक सहित हासिल करने के बाद पीयूष अभी और पढना चाहते थे लेकिन २०१४ ई. में जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में असिस्टेंट प्रोफेसर के रूप में नियुक्ति होने के कारण उनकी यह मंशा अधूरी रह गयी । इस नियुक्ति के लिए भी पीयूष को कम पापड़ नहीं बेलने पड़े। उन्हें चार महीने तक अवैतनिक रूप से अध्यापन का कार्य करना पड़ा क्योंकि विश्वविद्यालय के तत्कालीन कुलपति को इनकी योग्यता पर संदेह था । इसका कारण भी इनकी विकलांगता ही थी। पीयूष सेरेबल पाल्सी (प्रमस्तिष्कीय पक्षाघात) से ग्रस्त थे जिसमें व्यक्ति अपने अंगों पर समुचित नियंत्रण नहीं कर पाता जिसकी वजह से आवाज में स्पष्टता कम होती है।पीयूष बताते हैं कि मुझे इस मुकाम को हासिल करने में बहुत मुश्किलों का सामना करना पड़ा। वो कहते हैं-मैं जब विद्यालय जाता था तो कुछ लोग मुझे अपशकुन मानकर तरह-तरह की बातें करते थे। हमारे पड़ोस में एक महिला थी जो मेरी ट्राईसाइकिल देखकर अक्सर कहती थी

प्रेरणा

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटसएप करें

लंगडवा का विमान आ रहा है। ऐसी अवस्था में मुझे मामा जी का एक ही वाक्य सहारा देता, वो कहते थे - "अगर हार नहीं मानोगे तो हार पहनोगे।" इस समय पीयूष अध्यापन के साथ-साथ पी.एच.डी. भी कर रहे हैं। उन्होंने अपने शोध का विषय हिंदी "साहित्य में विकलांग विमर्श" को बनाया है। उन्हें अपने विकलांग होने का तनिक भी अफ़सोस नहीं बल्कि उन्हें लगता है कि यदि वह एक सामान्य व्यक्ति होते तो शायद अपने जीवन में इतना कुछ नहीं कर पाते। वैसे तो उन्हें अपनी पढाई और साहित्यिक रुचियों के चलते अनेक संस्थाओं से पुरस्कार और सम्मान मिले हैं परन्तु एम.ए. में उत्तर प्रदेश के मंत्री जी से स्वर्ण पदक प्राप्त करना उनके लिए विशिष्ट अवसर रहा है।

हमारी आज की चौथी और अंतिम कहानी श्री संदीप तोमर की है। एक मध्यमवर्गीय परिवार में जन्में श्री संदीप को 11 महीने की अल्पायु में पोलियों हुआ तो चलने-फिरने में अक्षम हो गए। नौ वर्ष की उम्र में पहली बार स्कूल देखा जब उन्हें सीधे पाँचवी कक्षा में प्रवेश का अवसर मिला। अपनी तीक्ष्ण बुद्धि और पढ़ाई के चलते लोगों को उनकी मेधा और पूत के पाँव पालने वाली कहावत का परिचय जल्द ही मिल गया था। उन्हें चलने फिरने में अत्यंत असुविधा अवश्य थी लेकिन इन कमियों को उन्होंने अपने जीवन में कभी आड़े नहीं आने दिया और अपने हौसलों को कभी पस्त भी नहीं होने दिया। आगे चलकर उन्होंने विज्ञान विषय का चुनाव किया जो यद्यपि उनके लिए आसान नहीं था लेकिन उनके पाँव थमें नहीं। शारीरिक कमजोरी के चलते कितनी ही बार स्कूल, कहलेज जाते हुए वह ठोकर खाकर गिर जाते, तो हफ़्तों/महीनों तक उनकी पढ़ाई बाधित रहती। अंततः शिक्षक की ट्रेनिंग लेकर भविष्य के सपने संजोकर वह अपना गाँव-शहर छोड़कर दिल्ली महानगर में आए लेकिन दुर्भाग्य ने यहाँ भी उनका पीछा नहीं छोड़ा। एक दिन चलती बस से गिर जाने के चलते कुल्हे की हड्डियाँ टूटी, जिसके चलते उन्हें वापिस अपने गाँव जाना पड़ा। बिस्तर से न हिलने की डाक्टर की हिदायत थी तो समय काटने के लिए स्केच बनाने का शौक चर्राया। उसी दौरान टूटी-फूटी कविता, शायरी भी डायरी में लिखनी शुरू की, जहां से उनमें लेखन के अंकुर फूटे।उत्तर प्रदेश में जिला बोर्ड की शिक्षक की नौकरी मिली लेकिन मात्र दो महीने बाद ही ज़ाब छोड़ दिल्ली विश्वविद्यालय में पढ़ने आ गए। उच्च शिक्षा की कई बड़ी डिग्रियाँ हासिल कर पुनः अध्यापन कार्य शुरू किया। फोटोग्राफी, भ्रमण के शौक के चलते कहानी, कविता और उपन्यास जैसी विधाओं के कथानक तलाशते-तलाशते संदीप जल्द ही एक स्थापित साहित्यकार भी बन गए लेकिन ये सफर इतना आसान नहीं था, खुद को साबित करने के लिए संदीप तोमर हमेशा जीवन की चुनौतियों को स्वीकार करते रहे। नौकरी में यूनियन का काम हो या फिर समाजसेवा, हर जगह उन्होंने अपने विशिष्ट कार्यों से एक अलग छाप छोड़ी और अनूठा मुकाम हासिल किया। गरीब बच्चों की फीस से लेकर, पुस्तकें, वर्दी इत्यादि का खर्च अपनी जेब से देकर उन्हें असीम सुख की अनुभूति होती है। वह अक्षर ज्ञान अभियान से जुड़कर वंचित वर्ग के बच्चों को शिक्षित करने के अभियान से भी वह जुड़े हुए हैं। आज वह दिल्ली प्रशासन से जुड़े दिव्यांग शिक्षकों की एक आवाज भी हैं। दिल्ली दिव्यांग शिक्षक संघ की स्थापना कर उन्होने दिव्यांग शिक्षकों के हक की लड़ाई लड़ने का बीड़ा भी उठा रखा है। उनकी आत्मकथा "एक अपाहिज की डायरी" का विमोचन नेपाल की पावन धरती पर हो चुका है। आपकी कहानी, उपन्यास आदि की अब-तक उनकी नौ पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं।

किशोर श्रीवास्तव,
पूर्व केंद्र सरकार प्रथम श्रेणी अधिकारी
/संपादक/कलाकमद्ध
।-207, अजनारा ली गार्डन, सेक्टर 16 बी,
जिला-गौतम बद्घुनगर-201318, उ.प्र.
मो. 9599600313, 8447673015
email- kishor47@live-com

कविता

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटस्एप करें

नूतन वर्ष

भोर का स्पर्श हो
कृष्ण तेरा दर्श हो
नई किरण की आस में
मंगलमय नूतन वर्ष हो।

गर नहीं विकल्प हो
दृढ़ निश्चय संकल्प हो
समृध्दि की झोलियों में
अल्प बाधा,संघर्ष हो।

सत्य अहिंसा संग हो
जटिल कोई जंग हो
सब प्रेम से रहे यहाँ
मन सदा हर्ष हो ।

जिंदगी संघर्ष है
आ रहा नया वर्ष है
नयी उमंगें नई तरंगें
हर्षित मन हर वर्ष हो।

नई सोंच नया जोश हो
कामना परितोष हो
रिस्तों की बादल से बरसे
प्रेम फुहारें सहर्ष हो।

राजकांता राज
पटना

नव वर्ष

इस नव वर्ष में आओ हाथ से हाथ मिलाएं।
मानवता की सेवा को हम इस जीवन का लक्ष्य बनाएं।।

बाईस हज़ार खेतों को सींचकर आओ इस देश को समृद्ध बनाएं।
संगणकों,उद्योगों से आओ, इस देश को सुख-संपन्न बनाएं।।

भूख से तड़पते हज़ारों बच्चे,आओ उनकी भूख मिटाएं।
शिक्षा और दीक्षा से आओ,उनके मन में ज्योति जलाएं।।

भटक रहे हर डूबे मन को संस्कृति का हम पाठ पढ़ाएं।
प्यार भरी बातों से आओ, हज़ारों दिल में प्रेम जताएं।।

टैंक,बंदूक,तोप न अणुबम, अहिंसा का हम मार्ग दिखाएं।
पशु-पक्षी व प्रकृति के संग, आओ हम आनंद मनाएं।।

हर देश पौधा, हर मानव सुमन।
आओ इस संसार को इक सुंदर उद्यान बनाएं।।

डॉ. जमुना कृष्णराज,
चेन्नइ्र
9444400820.

कविता

"नव वर्ष"

दो हजार इक्कीस।
बिदाई काल आया।
दो हजार बाईस।
नववर्ष आया।

संग अपने अपार।
खुशियाँ लाया।
पुराने दुख-दर्द भुलवाया।

नव उर्जा नव उत्साह।
संचार लाया।
सबके मन खूब भाया।

नव उमंग संग।
नव संदेशा लाया।
नव जीवन सतर्कता।
संग बिताना।
बतलाया।

अपने खोए परिजनों को।
भूलना सिखलाया।
नव ज्योति प्रकाश।
फैला निराशा तिमिर।
हरने आया।

नव रंग में डूब।
नव संगीत।
गुनगुनाते रहना।
सिखाने आया ।

श्रीमती संगीता सूर्यप्रकाश
मुरसेनिया
शिक्षिका भोपाल मध्यप्रदेश

कविता

काश तुम पास होते

काश !
काश ! जो तुम पास होते तो ,
ज़िन्दगी कितनी खूबसूरत होती ?
फूलों में ताजगी ,
हवाओं में खुशबू ,
साँसों की तार में ,
मेरी हर आवाज में ,
काश! तुम्हारी ही बात होती तो ,
ज़िन्दगी कितनी खूबसूरत होती ?

मेरे सपनों का रंग,
सप्तरंगी आसमा सा ,
मेरी माथे की बिन्दिया में ,
चेहरा तुम्हारा चाँद सा ,
काश! मेरी हर बात तुमसे शुरू औ खत्म होती ,
तो ज़िन्दगी कितनी खूबसूरत होती ?

ज़माने के तुफान में ,
मंजील से पहले बीच राह में ,
जख्म से भरी उस रात में ,
कश्ती को फँसाकर बीच राह में ,
काश ! तुम यूँ मुख मोड़ न जाते तो ,
ज़िन्दगी कितनी खूबसूरत होती ?

मंजू राय शर्मा

कविता

सुन्दर

ईश्वर की हर रचना सुन्दर
चाहे मानव हो या प्रकृति
उसने अपनी हर रचना में
अपनी अनुपम सुन्दर छवि डाली
नदियाँ की बहती धारा सुन्दर
आकाश में उड़ते खग सुन्दर
उमड़ते मेघों की छायी घटा सुन्दर
आकाश को छुते पर्वत के ऊंचे शिरवर सुन्दर
धरती पर छायी हरयाली सुन्दर
रंग बिरंगें अनोखे फूल सुन्दर
उसपर मडरातें भौरें संग तितलियाँ सुन्दर
धरती पर विचरते हर प्राणी सुन्दर
पर सबमें ईश्वर की सबसे
अनोखी रचना मानव सुन्दर
जिसमें ईश्वर ने अपनी हर विधा डाली
पर मानव ने ही अपनी भूल से
प्रकृति संग अपनी भी
सुन्दर छवि बिगाड़ डाली
भूलकर मानवता
दिखाता अकसर दानवता
कपड़ो से दिखाते अपने रूप
मन से होते कुरूप
संग साथ निभाने की जगह
अकसर एक दूजे को गिराने की
कोशिश में लगे रहते
भूलकर अपनी छवि सुन्दर
देख प्रकृति भी सिसकती अन्दर
जाने कहाँ खो गया ईश्वर का बनाया ?
हर स्वरूप सुन्दर ॥

निवेदिता सिन्हा
भागलपुर, बिहार

कविता

हमारी अभिलाषाएँ...

अनंत अभिलाषाएँ, मृग मरीचिकाएँ..
जीवन में नई नई आशाएँ..
मनुज गढ़ना चाहता है नए प्रतिमान..
आकाश तक पल्लवित पुष्पित हो हमारी पहचान..

प्रौढ़ता की जंजीरों में लिपट पर..
वक्त ज्यों-ज्यों आगे बढ़ता है..
वो जकड़ता जाता है जिम्मेदारियों से..
उसके आदर्श धड़ाम से नीचे गिरते हैं
और वो भौतिकता के मकड़जाल..
शनैः शनैः फँसता जाता है..
स्वार्थपन और दिखावेपन का..
झूठे नक्काशी गढ़ता है..

उसकी पंगु हो जाती हैं धमनियाँ और शिराएँ..
लाल रक्त वर्ण का प्रवाह रुक रुक कर बहता है..
औ फिर फड़कती क्रांतिकारी भुजाएँ..
और कदम के चाल धीरे पड़ने लगते हैं..
फ़िर उसी धारा में बहने लगते हैं हमारे विचार..
उसी चाल में हम भी चल पड़ते हैं लगातार..

लड़खड़ाकर कभी तो गिर पड़ते हैं..
हम भी समाज की भाषा बोलने लगते हैं..
हमारे आदर्श का हो जाता है बंटाधार..
ढुल मुल हो जाता है व्यवहार..
सपने न हो पाते साकार..

लाल देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव
कैतहा-बस्ती
मोबाइल 7355309428

संस्मरण

मैं और गोपालराम गहमरी सम्मेलन

एशिया के सबसे बड़े गाँव गहमर में आयोजित हो रहे साहित्य सम्मेलन का आमंत्रण पत्र जरिये मेल प्राप्त हुआ था। तीन दिवसीय इस कार्यक्रम में किसी तरह अवकाश लेकर इस कार्यक्रम की शुरुआत होने के एक दिन बाद यानी 25 दिसम्बर को पहुँच सका था।

24 तारीख को मा० मुख्यमंत्री जी के अयोध्या आने के कारण सुरक्षा डयूटी लग गयी थी। रात 10 बजे अयोध्या से ट्रेन पकड़कर वाराणसी जंकशन रात 2.30 पहुचने के उपरांत वहाँ से दूसरी ट्रेन पकड़कर दिलदारनगर होते हुए एशिया के सबसे बड़े गाँव गहमर के रेलवे स्टेशन सुबह 4.30 बजे पहुँच गया। स्टेशन पर उतरने से पहले मुझे लगा था कि स्टेशन पर उतरने वाले यात्रियों में सिर्फ अकेला मैं ही हूँ। परन्तु ट्रैन से उतरने पर स्टेशन पर काफी चहल पहल मिला। इसके बाद स्टेशन पर लगे गहमर के बोर्ड के साथ सेल्फी लेने से बरबस खुद को रोक न सका। फिर संकोच करते हुए इतनी सुबह को कार्यक्रम के आयोजक अखंड गहमरी जी को काल किया। उन्होंने इतनी सुबह होने के बाद भी तुरन्त काल रिसीव किया और स्टेशन पर रिसीव करने के लिए आ गए।

सच में पहली बार जब अखण्ड गहमरी जी से मिला तो लगा कि कोई 60 वर्षीय पुराने साहित्यकार हैं,क्योंकि इतनी सुबह ठंड के मारे काफी ओढे हुए थे मुँह ढके हुए अंधेरे में ऐसे ही दिख रहे थे। उसके बाद उनके पास दो पुरुष और एक महिला भी नजदीक आ गयें। अखंड गहमरी ने उम्रदराज दिख रहे व्यक्ति के लपककर पैर छूकर आशीर्वाद लिया शेष दोनों लोगो से नमस्कार कर अभिवादन किया। चाय की चुस्कियों के बाद हम लोग पैदल ही आगे सड़क की तरफ चलने लगे। कुछ दूर जाने पर अखंड गहमरी जी के संबोधन के बाद पता चला कि हमारे साथ चल रहे लोगों में से सुभाष चन्दर सर भी मौजूद थे। मैंने सर का बड़ा नाम सुना था आज अचानक से मुलाकात भी संयोगवश हो गया। मन बड़ा प्रभुल्लित हुआ। एक छोटे से अदना लेखक के सामने बड़ा सा प्रसिद्ध साहित्यकार हो इससे ज्यादा खुशी और क्या हो सकती है। फिर क्या था सुभाष सर और मेरे वार्तालाप का सिलसिला चलता रहा हम लोग बातों में इतना तल्लीन हो गए थे चलते हुए हम अपने ठहरने के स्थान से आगे निकलने लगे तो आवाज देकर हम लोगों को रोका गया। हमारे ठहरने के इंतजाम अखंड जी ने गहमर इंटर कालेज गहमर में कर रखा था। गहमर इंटर कालेज इनके घर के सामने ही था। लगभग 7 बजे चाय के बाद नास्ता सभी लोगों ने किया। उसके उपरांत एक दूसरे से परिचय और फोटोग्राफी का दौर शुरू हुआ।

कविता लघुकथा और कहानी पर वर्कशाप हुआ। कवि सम्मेलन का दौर भी खूब जोर शोर से चलता रहा। इस दौरान बीच बीच मे चाय पानी और भोजन की व्यवस्था समय समय से होती रही। आज 25 दिसम्बर को कार्यक्रम का दूसरा दिन समाप्त हो चुका था। 26 दिसम्बर का दिन ज्यादा ही मजेदार रहा सुबह सुबह सभी लोगों ने गंगा घाट पहुँच कर स्नान किया उसके बाद कामख्या देवी का दर्शन सभी लोगों का मन मोह लिया। इस दौरान अभिनेता विजय कुमार मिश्र दानिश ने अपनी कलाकारी और उम्दा शायरी से खूब गुदगुदाया। सुभाष चन्दर सर का साथ तो मानों खुदा के मिलना जैसे हो। फ़िल्म निर्माता प्रबुद्ध घोष ने अपनी फोटोग्राफी और फ़िल्म दिखाकर मन मोह लिया। अखण्ड गहमरी का पूरा परिवार हम सभी साहित्यकारों की सेवा और सम्मान में लगा था। अतिथि देवो भवः की परिकल्पना इनके परिवार के हर सदस्य में झलकती है, बच्चा हो बुजुर्ग, महिला हो पुरुष हर कोई आगन्तुकों का सम्मान करता हुआ नजर आया। कवि सम्मेलन और सम्मान समारोह के साथ एक सफल कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

उ०नि० रणजीत यादव
अयोध्या

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटसएप करें

कविता

यह अंक आपको कैसा लगा 7068990410पर वाटसएप करें

दूसरे देश के मतदाता

दो परिचित बेवड़े पी रहे थे।
दिन में कोई सपना जी रहे थे।।

हमने कहा आप लोग बच्चों पर थोड़ा ध्यान दीजिए। ।
आजकल शिक्षा ही उन्नति का साधन है जान लीजिए ।।

उन्होंने कहा मास्साब मेरा मुंह न खुलवाइये।
जहाँ जाते हो कृपा करके चुपचाप जाइये।।

हमारे बच्चे तो कहीं भी मजदूरी करेंगे,कमाएंगे खाएंगे।
हमने छोड़ दी तो तुम्हारे बच्चे अवश्य भूखे मर जायेंगे।।

देश की अर्थव्यवस्था में हमारा कितना बड़ा योगदान है?
हमारी वजह से ही आप जैसों की जिंदगी वरदान है।।

मदिरा तो समुद्र मंथन से निकले चौदह रत्नों में एक है।
ड्रिंक तो आप भी करते हैं किन्तु आप तथाकथित नेक हैं।।

हम अपनी मेहनत की गाढ़ी कमाई से दारू लाते हैं।
आप तो रोज हमें यहीं दिखते हैं!स्कूल कब जाते हैं।।

उसकी बेबाक बातों में माना बड़ी कडुवाहट थी।
किन्तु अब एक कवि के हृदय में अकुलाहट थी।।

जब पेट्रोल और डीजल की कीमतें बढ़ती हैं।
प्याज की वजह से लोगों की आंखें जलती हैं।।

राजनैतिक पार्टियां सड़क पर उतरती हैं।।
टीवी से लेकर ट्रेनों तक डिबेट्स चलती है।।
किन्तु इस वर्ग का ख्याल कभी किसी को नहीं आता है।
जैसे वे भारत नही वरन किसी दूसरे देश के मतदाता हैं।
इनकी देश में कितनी बड़ी आबादी है?
फिर भी बेचारे जुल्म सहने के आदी हैं।।
सरकार शराबियों पर कितना जुल्म ढा रही है।।
जब जितनी चाहे पौवे की कीमत बढ़ा रही है।।

उसके बाद ये ठेके वालों का सितम झेलते हैं।
जो कि एक पौवे में चौथाई पानी पेलते हैं।।
किन्तु कभी कोई धरना-प्रदर्शन नहीं।
कभी किसी नेता को कोई ज्ञापन नहीं।।

लहक डाउन में बेईमानों ने इनका कितना शोषण किया है।
इन लतमारों ने अस्सी रुपये का पांडव हैं।
सहिष्णुतम होने से ही झेलते कौरवी तांडव है।।

बहुत नाइंसाफी है भाई।
और इसकी एक ही है दवाई।।

चूंकि इन के द्वारा अब तक कोई संघ नहीं बनाया गया है।
इसीलिए इनकी समस्याओं पर गौर नहीं फ़रमाया गया है।।

आर बी शर्मा पागल
हरदोई

साहित्य सरोज शार्ट फिल्म योजना के तहत कलाकारों की खोज

9451647845

कहानी

यह अंक आपको कैसा लगा 7068990410पर वाटस्एप करें

पोमेरेनियन खरगोश'

'

एक बहुत सुन्दर जंगल था, जहां सरल सच्चे सीधे स्वभाव के बुद्धिमान खरगोश, विनम्र बुद्धिजीवी हिरन तथा अन्य सुशील जानवर रहते थे। जंगल में चारों ओर दूब घास फैली थी।समृद्धि तथा आनंद ही आनंद था।जंगल में बहुत सौहार्द और आपसी भाईचारा था। कभी कोई हिंसा,झड़प के समाचार न मिलते यदि कोई मन मुटाव हो भी जाता तो सब मिलकर हल निकाल लेते।खरगोश बच्चों की माएं अपने नौनिहालों को उनके पूर्वजों की वीरता की कहानियां सुनाया करतीं थीं।शेर जैसे जानवरो को कुएं में धकेले जाने वाली कहानियां खरगोश के बच्चों को खूब भातीं। कहानियां सुनकर वे मन ही मन वीर बनने का दृढ़ संकल्प लेते।

धीरे धीरे उस जंगल की खूबियों के चर्चे सारी धरती पर फैलने लगे। एक दिन अचानक दूसरे जंगल के कुत्तों ने वहां आक्रमण कर दिया। उन जंगली कुत्तों ने खरगोशों का शिकार करना आरंभ कर दिया। यकायक हुए इस हमले के लिए खरगोश तैयार न थे क्योंकि वे तो बेधड़क जंगल में घूमा करते थे।कुछ बुद्धिमान खरगोशों ने जल्दी जल्दी जमीन खोद कर बिल बनाया और दुबक गए। एक नन्हें खरगोश ने जब यह सब नजारा देखा तो उसने अपनी मां से कहाः-"मां,हम भले ही बुद्धिमान हैं पर कुत्ते शक्तिशाली हैं। उन्होंने हम सबको छिपने पर विवश कर दिया है। मैं बड़े होकर कुत्ता बनना चाहता हूं।" बेटे की बात सुनकर मां का हृदय कांप उठा।उसने बेटे के मुख पर हाथ रख दिया।उस समय नन्हा खरगोश शांत हो गया।

कुछ दिन बाद फिर से कुत्तों का झुंड उस जंगल की ओर चला आया और इस बार भी बहुत से खरगोशों को मारकर खा गया। अब न केवल जंगली कुत्ते अपितु साधारण कुत्ते भी खरगोश मार कर खाने लगे।नन्हें खरगोश ने फिर से अपनी मां से कहाः-" मां यदि हम कुत्ते बन जाएं तो कुत्ते हमें नहीं खाएंगे।"

मां ने कहा :-"नहीं बेटा हम कुत्ते नहीं बन सकते हम खरगोश हैं और खरगोश ही रहेंगे, तुम भी कुत्ता बनने का प्रयास ना करो।" लेकिन खरगोश नहीं माना और जिद में अड़ गया। उसने कहाः-" मैं खरगोश जैसी नरम दिल जाति से खुद को अलग करना चाहता हूं। मैं कुत्ता बनकर शान से जीऊंगा और कुत्ता बनकर कुत्ते की मौत मरूंगा।"

खरगोश की मां ने उससे कहांः-" बेटा जब तू हठ पकड़े बैठा है तो जा बन जा कुत्ता लेकिन जाते जाते अपने बड़ो का आशीर्वाद ले लेना।" मां की आज्ञानुसार खरगोश बुजुर्गों के पास चला गया। नेक बुजुर्गो ने उसे आशीर्वाद देते हुए कहाः-" तू अपनी जात बदल रहा है इसलिए हम तेरा स्वरुप खरगोशों से थोड़ा भिन्न कर देते हैं।" ऐसा कह कर उन्होंने एक मंत्र बुदबुदाया और खरगोश को सफेद कुत्ते सा रुप देते हुए कहाः-"बेटा,आज से तुझे पोमेरेनियन के रुप में जाना जायेगा।भविष्य में हो सकता है तू हमारा नहीं रहे पर हमारा आशीर्वाद सदैव तेरे साथ रहेगा।"

पोमेरेनियन बना खरगोश खुशी से फूला न समाया।उसे प्रसन्न देखकर उसको जन्म देने वाली मां बहुत दुखी हुई। मां तो मां होती है वह उसे एक बार फिर से समझाते हुए बोलीः-"बेटा,हिंसक शिकारी कुत्ते हमें मार रहे हैं एक दिन हम समाप्त हो जायेंगे पर यह शिकार करना नहीं छोड़ेंगे और तब ये जंगली जानवर तुम्हें भी मार डालेंगे।मेरे बच्चे तुम भी जीवित नहीं रह पाओगे। मैं तुम्हें तुम्हारी सुरक्षा की दृष्टि से एक उपाय बता रही हूं हो सके तो अमल करना, जैसे हम यहां बिल में छिप कर अपनी जान बचा रहे हैं ऐसे तुम भी पहले पहल किसी सुरक्षित स्थान से छिपकर भौंकना।।"खरगोश ने मां की बात गांठ बांध ली।

साधारण कुत्तों ने उसके बदले स्वरूप का स्वागत किया और उसे भौंकने की कला का ज्ञान दिया और एक नेक सलाह देते हुए कहाः-" देख भाई,उस जंगल की और मत जाना जहां शिकारी कुत्ते रहते हैं। हम साधारण कुत्तों को भी जंगली कुत्ते से भय लगता है वे हमें भी चीर फाड़ कर खा जाते हैं और तुम्हारा तो पता नहीं क्या हाल करेंगे।" खरगोश ने उनके हुक्म की तामील करते हुए सिर हिलाया।साधारण कुत्तों से प्रशिक्षण प्राप्त कर खरगोश ने उछल उछल कर भौंकना आरंभ कर दिया।

कुछ दिन बीत जाने पर खरगोश अभिमानी हो गया वह अपने ही बुजुर्गों को लताड़ने लगा। उन्हें उनके खरगोश होने का ताना देने लगा।वे सब उसे नादान समझ कर माफ करने लगे।अपनों की माफी उसको बददिमाग और उद्दंड बनाने लगी।

यह अंक आपको कैसा लगा 7068990410पर वाटसएप करें

समय बीतने के साथ उसने खुद से खुद को कुत्तों का प्रतिनिधि मान लिया और अब वो उठते बैठते भौं भौं करने लगा।उसे हर समय भौंकता देख जिन कुत्तों ने उसे प्रक्षिशित किया था वह भी सोच में पड़ गये और एक दूसरे से कहने लगे-भाई यह तो हमसे भी ज्यादा बढ़िया भौंकता है और इसकी सबसे अच्छी विशेषता यह है कि यह सिर्फ अपनों पर ही जम कर भौंकता है।" उसकी हर मामले में टांग अड़ाने की आदत पर एक रोज कुछ गुंडे टाइप के कुत्तों को गुस्सा आ गया उन्होंने उसे जमकर कूटा।

पोमेरेनियन को अपनी मां का कथन याद आ गया वह सुरक्षा की दृष्टि से मनुष्यों के घरों में जा छिपा। मनुष्यों से स्नेह पाकर वह और अधिक बड़बोला, बदतमीज हो गया।वह स्नेह करने वाले मनुष्यों को भी काटने को दौड़ता। कुछ चतुर मनुष्यों ने सम्मान स्वरूप उसके गले में पट्टा पहना दिया। सम्मान पाकर वह फूला नहीं समाया।वह भागा भागा खरगोश बिरादरी से मिलने जा पहुंचा। वहां जाकर उसने ढींगें हांकी और कहा मनुष्य उससे प्रभावित होकर उसका सम्मान करते हैं और जंगली तथा साधारण कुत्ते उसके सामने दुम हिलाते हैं।

मनुष्य समाज मे उसका सम्मान देखकर तथा उसकी बड़बोलेपन की बातें सुनकर उसके कुछ खरगोश साथियों ने भी फैसला किया कि वे भी कुत्ता ही बनेंगे।बस फिर क्या था देखते ही देखते पोमेरेनियन कुत्तों का समूह तैयार हो गया। जंगली कुत्तों का गुणगान करते-करते पोमेरेनियनों की जुबां न थकती। धीरे-धीरे नब्बे फीसदी खरगोश प्रजाति पोमेरेनियन कुत्तों में विलुप्त गयी और सर्वत्र कुत्तों का साम्राज्य स्थापित हो गया।

चतुर मनुष्यों ने उनकी बेवजह भौंकने की कला का भरपूर लाभ उठाना आरंभ कर दिया। अब हर घर में एक पोमेरेनियन पलने लगा।एक ओर पोमेरेनियन के गले में बंधे पट्टों पर मोती टंकते गए दूसरी ओर समृद्ध जंगल की हरी दूब घास लाल होती गयी। असहाय निर्बल बचे खुचे खरगोश बिल से झांक कर जंगल के नजारे देखते और फिर दुबक जाते। पोमेरेनियन कुत्तों की खरगोश माएं दिन रात उनकी सलामती की दुआ ईश्वर से करतीं लेकिन एक रोज मांओं की दुआएं ईश्वर ने कबूल करनी बंद कर दीं शायद ईश्वर का यह संदेश था कि ' वेश बदलने से हकीकत नहीं बदलती।'

और फिर एक रोज.........

पोमेरेनियन बेहताशा चीखते चिल्लाते जंगल की ओर दौड़ रहे थे उनके पीछे-पीछे जंगली कुत्तों की फौज भाग रही थी।

मीना अरोड़ा, हल्द्वानी

कविता

गैर तो गैर

खिलौना आदमी ये दुनिया सब झमेला है
अकेले आता है और जाता भी अकेला

गैर तो गैर हैं अपनों को भूल जाना है
खता किस किस की कहूँ एक सा जमाना है
मेरे नसीब ने ही खेल मुझसे खेला है
खिलौना आदमी ये दुनिया सब झमेला है

करीब थे जो दिल के वो भी तो अपने न हुए
लाख देखे थे मगर सच मेरे सपने न हुए
हमने देखा यहाँ मतलब का सारा मेला है
खिलौना आदमी ये दुनिया सब झमेला है

मुझे सदमा हुआ धोखा मिला जमाने से
गैर तो गैर मिलें हम मिले बेगाने से
कैसा कुदरत का ये विधान भी अलबेला है
खिलौना आदमी ये दुनिया सब
अकेले आता है और जाता भी अकेला

शालू लसह चौहान
सीतापुर

संस्मरण

मैं और गोपालराम गहमरी सम्मेलन

गोपालराम गहमरी साहित्य सम्मेलन एशिया के सबसे बड़े गाँव वीरभूमि/सहित्यभूमि गहमर(गाजीपुर) में हिन्दी साहित्य में जासूसी उपन्यास के जनक गोपालराम गहमरी की स्मृति में आयोजित होने वाला साहित्यक महाकुम्भ है।गहमर पतित पावनी मां गंगा के उद्गमस्थल और विलयस्थल के ठीक मध्य में स्थित है।जहां भक्तों पर मां कामाख्या अपनी नित्य कृपा बरसा रही है।भक्त और साहित्यकार यहाँ आकर स्वयं को धन्यवाद ज्ञापित करते हैं।यहां लघु कथा ,कहानी छंदमुक्त कविता,पर साहित्यिक महारथियों द्वारा परिचर्चा ,पुस्तक विमोचन,कवि सम्मेलन से लेकर फ़िल्म प्रदर्शनी तक विभिन्न प्रकार की कार्यशालाएं आयोजित होती हैं ।

इस भगीरथ कार्य की जिम्मेदारी विगत कई वर्षों से हिंदी साहित्य के उत्थान के लिए निःस्वार्थ भाव से समर्पित एक नौजवान ने अपने कंधों पर उठा रखी है जिसका नाम है, अखण्ड प्रताप सिंह गहमरी या अखण्ड गहमरी।जो कि आगन्तुक साहित्यकार बन्धुओं को रेलवे स्टेशन से रिसीव करने स्वयं पहुंचते हैं।गहमर प्रवास के दौरान किसी को भी यह एहसास नहीं होने देते कि वह अपने घर में नहीं है,क्योंकि आवास से लेकर खाने-पीने की सुव्यवस्था आपको कुछ ऐसा ही सोचने पर विवश करती है।आजके ज़माने में जहां संस्कारों और मूल्यों का ह्रास द्रुतगति से हो रहा है वहां अखण्ड गहमरी का पारिवारिक परिवेश आपको यह सोचने पर विवश करता है कि वास्तव में भारतीय संस्कृति क्या है?ईश्वर इस परिवार को बुरी नजर से बचाए।अन्त में यह कहना चाहूँगा कि यदि हिंदी के ऐसे ही कुछ शुभचिंतक और हो जाएं तो निश्चित अपने ही घर मे दोयम दर्जे का जीवन जीने को विवश हिन्दी भी अपना वास्तविक अधिकार पा जाए इसमें कोई दो रे नहीं है।जय माँ गंगा, जय माँ का कामाख्या ,जय गहमर और जय अखण्ड.'

आर बी शर्मा पागल,हरदोईझ्र

कविता

उम्मीद

हौंसले से मिलती है सबको मंजिल,
यूँ कभी जिंदगी में घबराना नहींद्य
कभी लगे मुश्किल मंजिल को पाना,
तो अपने अन्दर झांकना घबराना नहींद्य
मुश्किलें राह की हटाओगे तुम खुद ही,
अपने हौंसलों से कभी डगमगाना नहींद्य
कहना बहुत आसान करना है मुश्किल,
जानते हैं सभी ये कोई नयी बात नहींद्य
कहा मैंने वही जो करके देखा जाना,
यूँ ही बातें बनाना मेरा काम नहींद्य
दूसरों की ओर तकना निराश होना,
छोड़ो यूँ हताश होना ठीक बात नहींद्य
हौंसला खुद का तुम खुद ही बढाओ,
तुमसे बढकर तुम्हारा कोई और मीत नहींद्य
पा न सको जो मंजिल तो इतना समझ लो,
राह गलत चले तुम या मंजिल ठीक नहींद्य
किसी भी हाल में न छोडो दामन आस का,
मिलती है जीत उन्हीं को जो मन से हारे नहींद्य

नीलम शर्मा
विकासनगर देहरादून
उत्तराखंड

कार्यक्रम सम्पन्न

यह अंक आपको कैसा लगा 7068990410पर वाटसएप करें

८,९वां सोशल मीडिया मैत्री सम्मेलन सम्पन्न

नई दिल्ली। हम सब साथ साथ, दिल्ली द्वारा सहयोगी संस्थाओं के साथ मिलकर इस बार कोरोना परिस्थितियों के चलते तीन दिवसीय ८,९वां सोशल मीडिया मैत्री सम्मेलन, प्रतिभा प्रदर्शन व सम्मान समारोह आभाषी रूप में २५ से २७ दिसम्बर,२१ तक आकर्षक रूप में मनाया गया। इसमें देश-विदेश से विभिन्न कला क्षेत्रों की सौ से भी अधिक चयनित प्रतिभायें शामिल रहीं।

२५ दिसम्बर,२१ को पहला सत्र जूम इंडिया न्यूज के दिल्ली स्थित कार्यालय में सामान्य औपचारिकताओं के बाद भाईचारा गीत व प्रतिभागियों के परिचय से प्रारंभ हुआ। इसमें देश, विदेश से चयनित प्रतिभाओं का एक-दूसरी प्रतिभाओं से ऑनलाइन परिचय कराया गया। इसके अलावा सायंकालीन सत्रों में परिचर्चा, लघुकथा और गैर हिंदी भाषी कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। ऑनलाइन सत्र में नह्वे से श्री सुरेश चंद्र शुक्ल, दिल्ली से श्री विनोद बब्बर, श्री बलराम अग्रवाल, कनाडा से श्री सरन घई, कोटा से डा. रघुनाथ मिश्र और ग्वालियर से श्री प्रकाश सिंह निमराजे ने अतिथि के रूप में शामिल होकर समारोह को संबोधित किया। मौके पर उपस्थित अतिथियों में सर्वश्री सुधाकर पाठक, राखी बिष्ट, कनुप्रिया और प्रदीप आर्यन जी की पूरी कैमरा टीम शामिल थी। विभिन्न सत्रों के संयोजन में शामिल भारत के अन्य लोगों में सर्वश्री उमाशंकर मिश्र, सुरेंद्र सिंह राजपूत, सुषमा भंडारी, रीता सिंह और नेपाल से संगीता ठाकुर इस आयोजन में अभाषी रूप में शामिल रहीं।

अगले दिन हिंदी कवि सम्मेलन का आयोजन श्रीमती अंजू मोटवानी (इंदौर) और कार्यक्रम संयोजक श्री किशोर श्रीवास्तव के संचालन में सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर अतिथि के रूप में देश के प्रसिद्ध कवि सर्वश्री डा. सागर त्रिपाठी और प्रमोद कुमार कुश (मुम्बई) से उपस्थित थे। इस सत्र में विभिन्न स्थानों से शामिल कवियों ने अपनी बेहतरीन रचनाओं का पाठ करते हुए खूब समा बांधा।

अंतिम दिन सांस्कृतिक कार्यक्रम और योग सत्र का बेहतरीन आयोजन किया गया। जिसमें नेपाल, भूटान, शिकागो और भारत के कोने-कोने से शामिल गीत, नृत्य, अभिनय और योग के छोटे-बड़े कलाकारों ने अपने एक से बढ़कर एक उम्दा प्रदर्शन से दर्शकों को मंत्र- मुग्ध कर दिया। इस सत्र के अतिथियों में सर्वश्री मुमताज़ अज़ीज़ नाज़ा (मुम्बई), नित्यानंद तिवारी और सुधा उपाध्याय (दिल्ली) उपस्थित रहीं। सांस्कृतिक सत्र का अत्यंत मनभावन संचालन लखनऊ की कलाकार श्रीमती जया श्रीवास्तव और विद्या भूषण सोनी ने किया। इस अवसर पर संयोजक मंडल की सदस्य श्रीमती आशा शर्मा (बीकानेर) के द्वारा स्व. गोवर्धन लाल चौमाल विशिष्ट कार्यक्रम सहयोगी पुरस्कार नेपाल की श्रीमती संगीता ठाकुर और दिल्ली के श्री पी. के. आर्यन को देने की घोषणा की गई।

अंत में आयोजन के राष्ट्रीय संयोजक श्री किशोर श्रीवास्तव ने सभी का आभार व्यक्त किया।

संस्मरण

यह अंक आपको कैसा लगा 7068990410पर वाटस्एप करें

हिमाचल की यात्रा भाग 1

घूमने का शौक आखिर किसे नहीं होता, अक्सर लोग समय मिलते ही कहीं न कहीं घूमने का विचार बनाने लगते हैं। कुछ लोग समय के अभाव में, तो कुछ लोग जानकारी, वही कुछ लोग पैसे के अभाव में बहुत सी मनमोहक जगहों को देखने वंचित रह जाते हैं। मुझे जैसे ही घुमने का मौका मिलता है उसे छोड़ता नहीं हूँ। इसी कड़ी में एक साथी के विशेष अनुरोध पर "बहु-विषयक अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी" में भाग लेने साधना स्थली, कुल्लू (हिमाचल) रवाना हुआ। अंदर से बहुत रोमांचित हो रहा था। हो भी क्यों नहीं जिसे किताबों, मानचित्रों टीवी, फिल्मों आदि में देखने,पढ़ने को मिलता था,उसे खुद यात्रा कर करीब से देखने, समझने जानने का मौका मिले गा।यूँ तो दिल्ली तक कई बार गया हूँ, पर दिल्ली से आगे जाने का यह पहला मौका था।

मैं भागलपुर से प्रत्येक दिन खुलने वाली ट्रेन विक्रमशिला एक्सप्रेस से आनन्द विहार (दिल्ली) के लिए रवाना हुआ। प्राचीन काल के तीन प्रमुख विश्वविद्यालयों तक्षशिला, नालन्दा और विक्रमशिला में से एक विश्वविद्यालय भागलपुर में ही था, जिसे हम विक्रमशिला के नाम से जानते हैं। उसी विक्रमशिला विश्वविद्यालय के नाम पर इस ट्रेन का नाम पड़ा है। वहीं पुराणों के अनुसार भागलपुर का पौराणिक नाम भगदतपुरम् था। जिसका अर्थ है वैसा जगह जो की भाग्यशाली हो।आज का भागलपुर बिहार में पटना के बाद दुसरे विकसित शहरों में है।ट्रेन में बैठे खिड़की के द्वारा तेजी से भागते दृश्यों के साथ मन में लिए कई तरह की बातों को सोचते चला जा रहा था। सफर घर के बने पराठे, सब्जी, चुड़ा फ्राई,मिठाई के साथ करना था।गुफा के बाद पकौड़े-पकौड़े की आवाज से अंजान यात्रियों को भी पता चल जाता होगा कि जमालपुर आ गया। मैं तो अक्सर चलने वालों में हूँ, सो जर्रे-जर्रे से परिचित हूँ। 'जमालपुर में एशिया का प्रथम रेल इंजन कारखाना ०८ फरवरी, १८६२ को अंग्रेजों के द्वारा स्थापित किया गया था।' जमालपुर और बिहार का दुर्भाग्य है कि आजाद भारत में बिहार के नौ रेल मंत्री हुए लेकिन कारखाना के ढ़हते भविष्य को इनमें से किसी ने भी संजोने का प्रयास नहीं किया।यह कारखाना कभी भारतीय रेल की नाक हुआ करती थी,आज अपनी बदहाली पर आंसू बहा कर अपने तारणहार की प्रतीक्षा में है। कारखाने के कारण यहां सभी ट्रेनें कुछ ज्यादा देर रूकती है। कुछ लोग इसका फायदा पकोड़े खाकर लेते हैं। पुरुष यात्री इसका आनन्द लेने ट्रेन से उतरकर प्लेटफार्म पर भी चले जाते हैं। परिवार के साथ सफर करने वाले यात्री ट्रेन में बैठे बैठे ही पकोड़े का स्वाद लेना उचित समझते हैं।मेरे बगल वाले सीट पर इसी तरह के एक परिवार चटनी के साथ पकोड़े बड़े मजे से खा रहे थे।उसमें से एक व्यक्ति पकोड़े को इतने आनंदित होकर खा रहे थे कि उस जगह बैठे अन्य यात्रियों को भी उस पकोड़े के स्वाद का एहसास करा रहा था।

जमालपुर से निकले के बाद ट्रेन चलती रही, रुकती रही, स्टेशन निकलते गये, यात्री चढ़ते रहे, उतरते रहे। ट्रेन बिल्कुल ठीक समय पर किऊल जंक्शन पहुंच गई।विक्रमशिला एक्सप्रेस अपने आदत के अनुरूप भागलपुर से क्यूल तक सभी स्टेशनों पर रुकते हुए,यूँ कहिए पटना तक के सभी स्टेशनों पर सवारी गाड़ी के तरह रुकते हुए बिल्कुल समय पर पहुँच जाना, सफर कर रहे यात्रियों के लिए सुकून देने वाली बात थी। झारखंड के गिरिडीह से निकलने वाली एक नदी का नाम किऊल है,जो बिहार के जमुई-लखीसराय जिले से गुजरते हुए गंगा में मिल जाती है।किऊल नदी लाल बालू के लिए बिहार में प्रसिद्ध है। पानी से अधिक बालू को लेकर इसकी महत्ता है।नदी के एक छोर पर लखीसराय है, तो दूसरे छोर पर किऊल स्टेशन है। किऊल स्टेशन का नाम इसी किऊल नदी से पड़ा। खैर जो भी हो किऊल तक दिल्ली जाने वाले लगभग सभी यात्री आ चुके थे और अपने-अपने जगहों पर बैठकर निश्चित नजर आ रहे थे।कुछ यात्री घर परिवार से दूर जाने के कारण उसकी यादों में खोये खोये से दिखाई दे रहे थे। मुझे यह अच्छा नहीं लग रहा था,मै उन्हें उनके घर- परिवार की यादों से निकालना चाहता था। यादों को निकाले के लिए मेरे दिमाग में कई तरह की बातें आ रही थी, इसमें राजनीति की बातें सबसे टिकाऊ और लम्बी लग रही थी, सो लगा मैं बीजेपी की तारीफ करने।फिर क्या था कई लोग बीजेपी के पक्ष में तो कई विपक्ष में बोलने लगा।विभिन्न तरह की बातें हो ही रही थी कि तभी मैंने कांग्रेस की बड़ाई कर दी।एक बार फिर से कुछ लोग कांग्रेस के साथ नजर आने लगे तो कुछ विरोध में।मैं अब कुछ देर के लिए चुप ही रहना उचित समझा,पर अन्य यात्रियों में जोरदार बहस होने लगी। इस बहस को कांग्रेस बीजेपी तक की सीमित रखना

अच्छा नहीं लग रहा था। लगे हाथ लालू,नीतीश का भी तारीफ कर ही दिया मैंने।मेरा काम तो सिर्फ तारीफ करने का था, बाकी अन्य काम अन्य यात्री जोरदार बहस के साथ कर रहे थे।अब बहस इस तरह से होने लगा कि मानों विधानसभा या संसद भवन में बहस हो रहा हो। मैं शांत होकर चुपचाप मजे लिए जा रहा था,कि तभी जमालपुर में बड़े स्वाद से पकोड़े खाने वाले व्यक्ति अपने बातों से इस बहस को वेस्वाद कर दिए! वे मेरे से सवाल भरे लहजों में बोले आप किस पार्टी से हैं,जो सभी पार्टियों का तारीफ किए जा रहे हैं और इन लोगों को आपस में लड़ाये जा रहे हैं? उस जगह बहस कर रहे यात्रियों का एका-एक मेरे तरफ ध्यान आ गया। मैं बस मुस्कुरा भर दिया। तब तक विभिन्न स्टेशनों पर रुकते हुए ट्रेन पटना पहुंचने ही वाली थी। बहुत देर से एक ही जगह बैठे-बैठे मेरे पांव भी चहल-कदमी करना चाह रहा था,सो वहाँ से उठ कर चला जाना ही उचित प्रतित हुआ।

बिहार के दूसरे बड़े शहर भागलपुर से यात्रा प्रारंभ करने के बाद मैं अब बिहार के सबसे बड़े शहर राजधानी पटना में था। कहा जाता है कि 'पटना संसार के गिने-चुने उन विशेष प्राचीन नगरों में से एक है जो अति प्राचीन काल से आज तक आबाद है। पूर्व रेलवे ने १ अक्टूबर १ ६ ४८ को एक विशेष रूप से तीसरी श्रेणी के एक्सप्रेस ट्रेन को 'जनता एक्सप्रेस' के रूप में चलाना शुरू किया था। यह शुरू में पटना और दिल्ली के बीच चल रहा था और बाद में इसे १ ६ ४ ६ में दिल्ली से हावड़ा तक बढ़ा दिया गया था। यह भारत में पहली जनता एक्सप्रेस ट्रेन थी।'

शाम के ६:०० बज चुके थे, ट्रेन पटना से खुल चुकी थी।पटना तक सवारी गाड़ी के तरह चलने वाली विक्रमशिला एक्सप्रेस सही मायने में पटना के बाद ही एक्सप्रेस का रूप धारण करती है।भागलपुर से दिल्ली तक २१घंटों में(अगर समय से चले तो) सफर पूरा करने वाली विक्रमशिला एक्सप्रेस टोटल २१ स्टेशनों पर रूकती है,जिसमें से १८ पटना के पहले तो वही पटना के बाद मात्र दो मुगलसराय और कानपुर सेंट्रल स्टेशनों में रूकती है। ट्रेन में हुए इस बदलाव से साय साय की आवाज के अलावे कुछ और सुन पाना संभव नहीं था,अतः सभी लोगों को शांत होकर बैठ जाना ही ठीक लगा। कुछ लोग ताश के साथ तो कुछ लोग अपने मोबाइल के साथ व्यस्त हो गए। मेरा अपर बर्थ था सो मैं भी वहह जाकर अपने मोबाइल मैं व्यस्त हो गया। कुछ देर के बाद भूख की एहसास होते ही खाना खाकर सो गया। अगले दिन यानि ७ सितंबर २०१६ को लगभग ३ घंटे की लेट से मेरी ट्रेन आनंद विहार टर्मिनल में थी। मेरी अगली ट्रेन पुरानी दिल्ली रेलवे स्टेशन से शाम को ७:३५ में थी। आनंद विहार टर्मिनल से बाहर निकल कर पुरानी दिल्ली स्टेशन जाना के लिए बस पकड़ ली।

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटसएप करें

दिल्ली से आगे जाने की उत्सुकता मेरे उपर इस कदर हावी हो रही थी कि रात ६.०० दिल्ली स्टेशन आने वाली कालका मेल ट्रेन के लिए मैं दोपहर दो बजे ही प्लेटफार्म पर जाने लगा,वैसे भी बाहर रहकर समय नहीं कट रहा था। गेट पर जाते ही मुझे यह कहकर रोक दिया गया कि आप शाम ७.०० के पहले अंदर नहीं जा सकते हैं। मायूस होकर सात बजने का इंतजार करने लागा। कभी इधर जाता, कभी उधर जाता। समय उसके बाद भी कटते नहीं कटता। अब तो मोबाइल भी पावर की तलाश में व्याकुल हो रहा था। ६:०० बजे के आसपास एक बार पुनः प्लेटफार्म पर प्रवेश करना चाहा, इस बार किसी ने नहीं रोका।अंदर जाते ही मोबाइल चार्ज करने के लिए जगह की तलाश करने लगा। सामने खाली पड़े चार्जिंग पहइंट देखते ही झट से मोबाइल को चार्ज में लगा दिया। चार्ज में लगाते ही मेरे मोबाइल की पावर व्याकुलता तो खत्म हो गई, पर मुझे अभी भी इंतजार था अपने उस ऐतिहासिक ट्रेन जिसका नाम नेताजी सुभाष चन्द्र बोस के साथ भी जुड़ा है। धनबाद और गया के बीच स्थित गोमो स्टेशन पर नेताजी इसी ट्रेन में १८ जनवरी,१६४१ को सवार होकर अंग्रेज हुकूमत की आँखों में धूल झोंककर गायब हो गए थे। हावड़ा कालका मेल भारतीय रेल की सबसे पुरानी ट्रेनों में से एक है। 'एक जनवरी १८६६ को कालका मेल पहली बार चली थी। उस वक्त इस ट्रेन का नाम ६३ अप हावड़ा पेशावर एक्सप्रेस था।' इस ऐतिहासिक ट्रेन के इंतजार में मैं कभी कुर्सी पर बैठ रहा था, तो कभी चहल कदमी करने लगता।इसी बीच में घोषणा की गई कि हावड़ा कालका मेल लगभग २ घंटे की विलंब से दिल्ली स्टेशन आये गी।घोषणा से मुझे कोई ज्यादा हैरानी नहीं हुई।भारतीय ट्रेनों की यह तो आदत सी है, उसके अनुरूप यह भी चल रही है।

हावड़ा कालका मेल २ घंटे की विलंब से रात्रि के ११ बजे खचा-खच भरे डिब्बों के साथ पुरानी दिल्ली स्टेशन प्लेटफार्म संख्या ५ पर आकर खड़ी हो गई।भीड़ देखकर लगा शायद आज आरामदायक सफर नहीं होने वाला है, पर वह भीड़ दिल्ली तक के लिए ही थी। बंगाल झारखंड बिहार उत्तर प्रदेश के यात्रियों को लेकर कालका तक जाने वाली कालका मेल के ज्यादातर यात्री राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में ही उतर जाते हैं।यात्रियों के उतर जाने के बाद मैं -७ के ३६ नंबर सीट पर अभी बैठा ही था, कि तभी एक सुंदर सी लड़की कर्कश आवाज में बोलती है "हटिए यह सीट मेरा है।" यह बोलकर वह अपने साथ लाए हुए बहुत सारे सामानों को सीट के नीचे रखने लगी। कोमल सी दिखने वाली पूर्णिमा के चॉद सा चेहरे के गोल मुख से झन्नाटेदार आत्मविश्वास भरे आवाज नें मेरे आत्मविश्वास में सेंध लगा दिया, और मुझे सोचने पर मजबूर कर दिया कि कहीं मैं दूसरे ट्रेन में तो नहीं चढ़ गया। सोचते हुए बड़ी विनम्रता से बोला यह कौन सी ट्रेन है ? एक बार पुनः झन्नाटेदार आवाज मेरे कानों से स्पर्श होते ही मुझे मजबूर कर दिया अपने सीट पर बैठे रहने के लिए। वे मेरे सवालों का जवाब देते हुए बोली 'ट्रेन का नाम तक नहीं पता और चले हैं ट्रेन में सफर करने वह भी

संस्मरण

दूसरे के सीट पर, हटते हैं कि टीटी को बुलाऊँ। यह ट्रेन कालका मेल है।और मुझे कालका जाना है।' इस बार मैंने भी थोड़े कड़े आवाज में कह दिया कि जाइए आप टीटी को ही बुला लाइये। वे तनतनाना के मुड़ी और टीटी को बुलाने चली गई। टीटी भाई साहब भी लगा बगल में ही थे, क्योंकि वे भी बड़े जल्दी आ गए। वे आते ही मेरे टिकट को बिना देखें उस सीट को छोड़ देने का फरमान सुना दिया। ऐसी स्थिति में मैं भी कहाँ रुकने वाला था? तपाक से बोल ही दिया, यह सीट मेरा है और कालका तक मुझे किसी को दम नहीं है उठाने का। मेरी बातों से टीटी भाई साहब को बुरा लग गया।वे कुछ बोलते इसके पहले वह लड़की अपने टिकट को दिखाते हुए एक बार फिर से वही कर्कश आवाज में कहती है, यह टिकट मेरा है, और मैं आपको अभी यहाँ से उठाऊंगी।आप उठकर यहाँ से जाएगें भी। तब तक मैं भी अपना टिकट निकाल चुका था।टिकट देखते ही टीटी भाई साहब उस लड़की पर झलाते हुए अपने डिब्बे में जाने को बोल कर अपने पुराने स्थान के लिए प्रस्थान कर गए। इस बात को सुनते ही वह अपने टिकट को गौर से देखने लगी। जिसमें साफ-साफ दिखाई दे रहा था, सीट नंबर तो वही है। पर डिब्बा े-३ है।अब उस लड़की का उतरा हुआ चेहरा मुझसे देखा नहीं जा रहा था।अच्छा भी नहीं लग रहा था। इसी बीच मीठे आवाज में सहरी बोल कर वे वहाँ से जाने लगी। मैं उनकी परेशानियों को समझ रहा था। एक तो वह अकेले थी, उसके बाद बहुत सारा समान भी। े-७ से े-३ तक इन सामानों को ले जाते जाते उनको बहुत कठिनाइयों से गुजरना पड़ता। इसलिए मैंने फैसला किया कि क्यों नहीं मैं ही उसके सीट पर चला जाऊ। वैसे भी मुझे सोना ही था। मैंने उनसे कहा अगर आपको यहीं रहना है तो रह जाए। मैं आपके सीट पर चला जाता हूँ। उसने मेरे तरफ आशा भरी निगाहों से देखा। और कुछ छन में ही थैंकयू बोलकर मेरे जाने का इंतजार करने लगी। मैंने अपना बैग लिया और चल दिया े-३ की ओर! अब ट्रेन भी पूरे रफ्तार में चल रही थी। मैं उसके सीट पर आकर बहुत सारी बातें सोचने लगा। सोचते सोचते पता ही नहीं कब अहृंख लग गई!

डॉ. आलोक प्रेमी भागलपुर
9504523693

भाग-2 में पढ़े कैसे प्रति की सुंदरता देखते थक गया।

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटस्एप करें

आत्महत्या

दिन व दिन आत्महत्याएं रफ़्तार की गति से बढ़ती जा रही है कारण हज़ारों है और मौत की गिरफ्त में खुदकुशी का शिकार होने वाले लाखों जब वह इंसान जिंदगी से हार मान कर मौत को गले लगाने की सोच रहा होगा तो वह किस अवस्था, से गुजर रहा होगा उसकी मनोदशा कितनी ही पीड़ा दायक होगी इसका आंकलन करना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है ! इस तरह की घटनाएं होने के बाद लोगों की आपसी बातचीत इतने ही गुस्से में था तो कहीं चला जाता कुछ दिनों के लिए वगैरह ,वगैरह।

मैं किसी को गलत नहीं कह रहीं। जब कोई दूसरा किसी तकलीफ या बिपरीत परिस्थितियों में होता है तो उसे हम तरह-तरह के सलाह-मशविरा देते हैं वहीं जब बात खुद पर आती है तो दिमाग भन्ना उठता है। जरा सोचिए जिस समय वह उस मनोदशा से गुजर रहा होगा उसकी स्थिति कैसी होगी क्योंकि उस क्षण वह दबाव ,उलझन न जाने कितनी संवेदनाओं से घिरा होगा जिसके कारण उसके सोचने समझने की क्षमता खत्म हो जाती हैं ऐसे कई लोग आपके आस-पास होंगे जो दूसरों को मशविरा देकर खुद वहीं कदम उठा बैठते हैं ! क्योंकि उस समय हम वास्तविकता से परे हालातों से टूटे हुए होते हैं लेकिन जब बात दूसरो की होती है तो ठीक इसके विपरीत। लेकिन एक सच्चाई ।

जाने वाले चले गये लेकिन उसके पीछे?अगर किसी की माँ ने ऐसा किया तो उसके बच्चे की सबसे बड़ी जिल्लत उनके सामने पेट भरने के लिए रोटी तो डाल दी जाती है कभी इधर से कभी उधर से लेकिन माँ जैसी दुलार प्यार से खिलाने वाला हाथ नहीं होता और अन्य बाते जिससे सभी परिचित हैं।

अगर किसी के पिता ने ऐसा किया तो उन बच्चो की परवरिश जैसी होनी है एक माँ हर परिस्थिति से लड़कर करेगी लेकिन उस घर पर दुनिया की गिद्ध भरी नजरे टिकी रहेंगी तरह-तरह के लान्छन गिरी नियत ,सोच मजबूरी का फायदा उठाने वालों से वह घर घिरा होगा !आपकी कितनी ही अत्यंत तकलीफ पीड़ा हो सामने वाला चाहे कितना ही करीबी, अपना हो जो बेचैनी आप महसूस कर रहे हैं वो कर ही नहीं सकता कभी भी नहीं यह एक कटु सत्य है। लेकिन इस तरह के कदम उठाने से पहले एक बार पिछे मुड़ उन चेहरों और आपकी तरफ बढ़ी हाथो को जरूर देख लीजियेगा वो मंजर की झलक आपको दिख जायगी !!!
निःशब्द हूँ।

सन्नी कुमारी
पटना, बिहार

दुदर्शा

यह अंक आपको कैसा लगा 7068990410पर वाटस्एप करें

बेचारा खंड़वा

खंडवा यूँ तो बचपन से खंडवा का नाम खूब सुन रखा था अग्रज साहित्यकार पत्रकार स्वतंत्रता संग्राम सेनानी यानी 'एक भारतीय आत्मा : दादा माखनलाल चतुर्वेदी ' की कर्मभूमि के कारण , ख्यातिप्राप्त पार्श्वगायक अभिनेता किशोर कुमार की जन्मभूमि के कारण साथ ही महान आध्यत्मिक सन्त दादा धूनी वाले की पावन तपस्थली एवम लीला- भूमि के कारण ,इसके साथ ही साहित्यकार पद्मश्री रामनारायण उपाध्याय और प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री रहे सादगी से भरे जनसेवक श्री भगवंतराव मंडलोई के नगर के रूप में सदैव इस नगर के प्रति एक आत्मीय और भावनात्मक लगाव रहा है द्य

अनेक बार मुम्बई जाना हुआ तो सदैव खंडवा को रेलवे स्टेशन पर गाड़ी खड़े होने पर अपलक निहारा है और उसे अपने में महसूस किया है ,यहां की समृद्ध सांस्कृतिक ,साहित्यिक विरासत को सदैव ह्रदय से अपने में अनुभव किया है द्य ट्रेन जैसे ही छूटती तो लगता जैसे अपना कुछ छूट रहा है ,मन करता कि आगे की यात्रा निरस्त कर यहीं उतर जाऊं और खंडवा की गलियों सड़कों पर घूमूं , और मन मसोस कर रह जाता द्य

फिर एक बार खंडवा जाने का अवसर मिला तो मित्र की शादी में परन्तु यह यात्रा भी केवल एक वैवाहिक यात्रा वह भी चन्द घण्टों की होकर रह गयी और खण्डवा को जीने खण्डवा को अनुभव करने की साध फिर अधूरी की अधूरी ,फिर एक बार सुयोग बना खंडवा उतरना हुआ जब साहित्य अकादमी मध्यप्रदेश सँस्कृति परिषद द्वारा ओंकारेश्वर में आयोजित पाठक मंच कार्यशाला में अग्रज कीर्तिशेष गीतकार और निराला सृजनपीठ के निदेशक दिवाकर वर्मा के साथ इस आयोजन में जाना हुआ और खंडवा से बस पकड़कर ओंकारेश्वर रवाना हुए ,यानी खंडवा भूमि का बार-बार स्पर्श होता पर खंडवा से मुलाकात नहीं हो पा रही थी द्य

आखिर मन की मुराद पूरी हुई और विगत रविवार को खंडवा निवासी मित्र श्री जितेंद उपाध्याय के आमंत्रण पर दादा धूनी वाले के दरबार में उनके दर्शनों का सुयोग बना ,और मैं अपने एक अन्य मित्र पूर्व में खंडवा निवासी और वर्तमान भोपालवासी मित्र संजय विन्चनकर और पत्नी श्रीमती मेघा मैथिल ,बिटिया वृष्टि तथा बेटे विकल्प के साथ सुबह ७ बजे अपनी गाड़ी से खंडवा रवाना हुए ,और लगभग २७५ किलोमीटर की शानदार आरामदायक , शांत सघन वनों से आच्छादित टेडी-मेडी ,सुरम्य पहाड़ियों से घिरी सड़क मार्ग यात्रा आष्टा से खातेगांव ,पुनासा,इंदिरासागर बांध,मूंदी होते हुए लगभग दोपहर १२ बजे खंडवा पहुंचे द्य

खंडवा में सर्वप्रथम माँ जगदम्बा तुलजा भवानी के प्राचीन मंदिर के दर्शन किये ,ततपश्चात दादा धूनी वाले के आश्रम में दर्शन-पूजन कर टिक्कड़ का प्रसाद पाया द्य दादा जी ने चमत्कारिक लीलाएं दिखाते हुए यहीं १६३० में समाधि ले ली थी उनके द्वारा प्रज्वलित धूनी आज भी यहां प्रज्वलित है खंडवा का लगभग हर नागरिक 'दादा धूनी वाले ' को अपना आराध्य मानता है,उनका जयकारा लगाता है ,प्रत्येक वर्ष गुरुपूर्णिमा को यहां देश विदेश से लाखों दादा जी के भक्त आते हैं ,तब खण्डवा का दादा के प्रति समर्पण त्याग और आदरभाव देखते ही बनता है ,यहां दादा जी और उनके शिष्य छोटे दादा जी के समाधि स्थल और उनके द्वारा उपयोग की गई दुर्लभ वस्तुओं को देखना बड़ा विस्मयकारी अनुभव है द्य

दादा जी धाम से निकलकर हम पहुंचे महान पार्श्व गायक किशोर कुमार के स्मारक स्थल जहां आजकल विश्राम-घाट भी बना हुआ है ,यहां उपस्थित केयर-टेकर ने दोपहर में समाधि-स्थल के मुख्य- द्वार पर ताला जड़ रखा था द्य वह हमें अंदर प्रवेश करने से मना कर रहा था ,फिर हमारे खण्डवा निवासी मित्रों के अनुरोध और भोपाल से आने की बात कहने पर उसने जैसे तैसे ताला खोला द्य वह कह रहा था साहब क्या करें यहां आवारा और असामाजिक तत्वों का जमावड़ा लगा रहता है इसलिए ताला बन्द कर रखना पड़ता है ,हमने किशोर दा के यादगार चित्रों से सजे छोटे किंतु हरे-भरे स्मारक स्थल में प्रवेश कर किशोर दा को नमन किया द्य स्मारक अभी नया बना है पर देखरेख का अभाव और जागरूकता की कमी के चलते उसपर पीपल के बड़े- बड़े पेड़ उग आए हैं और टाइल्स उखड़ने लगे हैं ,और दुःख की बात है जो

दुदर्शा

यह अंक आपको कैसा लगा 7068990410पर वाटस्एप करें

चौकीदार हमसे दिया-बाती और अगरबत्ती के लिए कुछ पैसे मांग रहा था ,और आसामाजिक लोगों के आने की बात कह रहा था वही अंदर समाधि स्थल के बगल में बैठे कुछ लोग मदिरा-पान करते दिखे ,हमें देख वे अपने गिलास और नमकीन छिपाने लगे ,बाद में स्थानीय लोगों ने बताया ' बागड़ ही खेत को खा रही है यहां की सुरक्षा और साफ-सफाई के लिए जो व्यक्ति तैनात है ,वही खुद लोगों के साथ बैठकर यहां दारू पीता हैद्य 'जानकर बहुत दुःख हुआ द्य हम कहाँ से कहां जा रहे हैं और तुच्छ स्वार्थों के लिए अपना सर्वोच्च कुछ भी दांव पर बेशर्मी से लगाने को तैयार हैं द्य

हमने स्मारक स्थल के सामने एक भोजनालय में मालवा का सुप्रसिद्ध सुस्वादु दाल-बाफले-चूरमा का भरपेट तृप्ति-दायक भोजन किया ,देशी घी और अपनेपन से तर होटल मालिक विकास भाई दवे ने मात्र ७० रुपये थाली में जो भोजन अपनेपन की आत्मीयता से करवाया वह लंबे समय तक याद रहेगा।

यहां से हम बहम्बे बाजार स्थित किशोर दा के घर पहुंचे तो खण्डवा में हमारा दिल खण्ड-खण्ड (टुकड़े-टुकड़े) हो गया द्य घने बाजार में स्थित अपनी दुर्दशा पर आँसू बहाता हुआ यह किशोर दा का जन्मस्थल इतना उपेक्षित ,अपनी आंखों पर जैसे विश्वास ही नहीं हुआ तब सहसा गीतकार नीरज के लिखे और किशोर दा के 'गैम्बलर' फ़िल्म का देवानन्द पर फिल्माया यह गाना ओठों पर आया -'दिल आज शायर है गम आज नगमा है शब ये ग़ज़ल है सनम..!' पूरा गाना हवेली की दुर्दशा पर सटीक बैठता है।

आभास कुमार गांगुली जो फिल्मों के रुपहले संसार में किशोर कुमार के नाम से मशहूर हुए उन्होंने इसी घर में ४ अगस्त १६२६ को प्रसिद्ध वकील कुंजीलाल और माँ गौरी के घर जन्म लिया ,आज भी घर के लोहे के दरवाजे पर 'गांगुली-हाउस' के साथ 'गौरी-कुंज' अंकित है द्य सारा मकान जर्जर हो चुका है जगह-जगह पेड़ उग आए हैं ,यह स्थानीय प्रशासन द्वारा खतरनाक घोषित हो चुका है जो कभी भी भरभराकर गिर कर बीता हुआ इतिहास बनने को तैय्यार है द्य

कितने दुःख की बात है जिस मस्तमौला किशोरकुमार की सांस-सांस में खण्डवा बसता था ,जो मुम्बई में रहकर भी कभी मुम्बई के नहीं बन पाए,जो अपनी जननी और जन्मभूमि और वहां के लोगों बचपन के मित्रों को तहेदिल से याद करते रहे तथा अपने आपको गर्व से सदैव 'किशोर कुमार खंडवा वाला ' कहते रहे ,तथा 'दूध जलेबी खाएंगे खण्डवा में बस जाएंगे' कहते हुए कभी नहीं अघाते थे ,जिन्होंने अपनी वसीयत में अपने अंतिम संस्कार की इच्छा खण्डवा में करने की जताई थी उस खण्डवा के लोगों ने इतना उपेक्षित कैसे कर दिया अपने प्यारे किशोर को द्य

किशोर दा के गौरी-कुंज में घुसते ही एक जर्जर तखत पड़ा हुआ है और कुछ धूल-धूसरित दैनिक उपयोग का बहुत ज़रूरी सामान वहीं किशोर दा के कुछ चित्र लगे हैं ,यह सामान है किशोर दा के पुराने मित्र और यहां की देखरेख करने वाले बुजुर्ग सीताराम का जो वर्षों से यहाँ रह रहे हैं और किशोर दा के साथ दीवार पर अपना टँगा हुआ चित्र शान से दिखाते हुए उनकी बुझी हुई आंखे कुछ देर के लिए चमक सी जाती हैं ,वे किशोर दा से जुड़े अनेक किस्से सुनाते है कि साल में एक दो बार जब भी किशोर दा अपने घर आते थे तो कैसी महफिलें जमा करती थी और किशोर अपने बचपन के मित्रों को कैसे नाम ले लेकर बुलाया करते थे ,वे भले कोई छोटा सा भी काम करते हों उन्हें बाहों में भर लेते थे द्य

हमारी उपेक्षा संवेदनहीनता का इससे बड़ा उदाहरण क्या होगा कि महान किशोर दा की इस पावन जन्मभूमि की एक दीवार पर लाल अक्षरों से लिखा है "यहां पेशाब करना मना है द्य" यह चेतावनी यहां लिखने की क्या ज़रूरत आन पड़ी तो वहां उपस्थित बुजुर्ग चौकीदार सीताराम ने बड़े दुःख के साथ बताया कि साहब यह बाजार है और मकान सूना मौका देखकर लोग पेशाब करने से बाज नहीं आते मैं बूढ़ा आदमी किस किस से लड़ूँ द्य अब भला यह भी कोई लड़ने की बात है ,यह मकान कोई साधारण मकान नहीं यह मकान कोई ईंट-गारे से बनी इमारत भर नहीं यह मकान हमारी श्रद्धा का केंद्र हैं ,जिस मकान को दुनिया भर लोग एक नज़र देखना चाहते है ,इस द्वार की चौखट पर माथा टेककर स्वयम को धन्य समझते हैं ,वहां कोई इतना कृतघ्न भी हो सजता है की वहाँ थूके मूते या गंदगी फैलाये द्य

रफी-मुकेश-मन्नाडे की तिकड़ी के बीच अपनी जगह

दुदर्शा

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटस्एप करें

बनाने वाले अभिनय के साथ हजारों हिंदी के साथ ही बंगाली,भोजपुरी ,मराठी,गुजराती,उड़िया सहित अनेक भाषाओं यादगार गीतों के अमर गायक जिनके नाम पर प्रतिवर्ष किशोर कुमार सम्मसन दिया जाता हैं ,सँस्कृति विभाग लाखों रुपये फूँकता है,उस महान कलाकार का जन्मस्थान इतना उपेक्षित सरकार, खण्डवा के जनप्रतिनिधि ,समाजसेवी ,व्यापारी आगे आएं ,इस भवन को अधिग्रहीत करें ,जो भी है जिस हाल में है उसे संरक्षित करें ,आपने पोरबन्दर स्थित बापू की जन्मस्थली देखी होगी ,प्रयाग में नेहरू जी का निवास आनन्द भवन ,कितने दुरुस्त हैं जब हम रख-रखाब से हजारों साल पुराने ताजमहल, कुतुबमीनार सहित कई प्राचीन धरोहरों को सुरक्षित रख सकते हैं तो क्या किशोर दा के मकान को उसके मूल स्वरूप में सुरक्षित नहीं रख सकते द्य

'अमर प्रेम' में सही गाना गाया था किशोर दा ने ' चिंगारी कोई भड़के तो सावन उसे बुझाए,जो सावन आग लगाये उसे कौन बुझाये द्य ' यहां तो उनके घर को अपने खण्डवा के लोग ही मिटाने को उतारू हैं फिर उसे कौन बचाये द्य यहां से निकलकर कुछ देर बगल में स्थित खण्डवा के साहित्यिक तीर्थ माणिक्य वाचनालय भी गए,जहां दादा माखनलाल चतुर्वेदी,महादेवी वर्मा, बालकवि बैरागी सहित अनेक नामचीन हस्तियां आती रहीं जहां दुर्लभ पुस्तकों का अनूठा विपुल भंडार है ,चलते-चलते कभी साप्ताहिक 'कर्मवीर' के कार्यालय रहे और अनेक कालजयी रचनाओं के साक्षी दादा माखनलाल का घर भी देखा,जहां आज बड़ा सा भवन बन गया है ,पद्मश्री दादा रामनारायण उपाध्याय के निवास को भी दूर से चलते-चलते प्रणाम किया द्य

आज भी यहां सुप्रसिद्ध निबंधकार डह्र श्रीराम परिहार , कवि लेखक श्री गोविंद गुंजन, व्यंग्यकार श्री कैलाश मण्डलेकर ,दोहाकार कवि श्री दिनेश शुक्ल साहित्यकार श्री प्रताप राव कदम ,श्री गोविंद शर्मा सहित अनेक अग्रज अपनी कलम से हिंदी साहित्य को समृद्ध कर रहे हैं अग्रज साहित्यकार कीर्तिशेष जगन्नाथ प्रसाद चौबे वनमाली के सुयोग्य पुत्र साहित्यकार शिक्षाविद श्री संतोष चौबे भी वनमाली सृजनपीठ के माध्यम से यहां साहित्य सँस्कृति की अलख जगाए हैं द्य बस खण्डवा की इस संक्षिप्त यात्रा में यही मलाल रहा कि 'आने वाला पल जाने वाला है ' हम इस बात को समझें और किशोर दा के चाहने वालों को यह अवसर न दें कि वो गायें 'कोई हमदम न रहा कोई सहारा न रहा / 'दिल ऐंसा किसी ने मेरा तोड़ा ' गाना गाने का अवसर ना दें द्य अपनी पहचान अपनी विरासत को बचाएं जैसे अपना घर बचाते हैं ,जैसे दादा जी की जयंती गुरुपूर्णिमा पर पूरे नगरवासी पूरे जोश पूरे समर्पण से देशभर से आये दादा भक्तों की सेवा में समर्पित होकर लोगों का दिल जीत लेते हैं ,वैसे ही इस मत्वपूर्ण किशोर दा के घर को अपनी पहचान अपनी विरासत समझ उसको बचाने आगे आएं द्य चलते-चलते यह मेरे गीत याद रखना कभी अलविदा न कहना द्य

घनश्याम मैथिल 'अमृत'
भोपाल

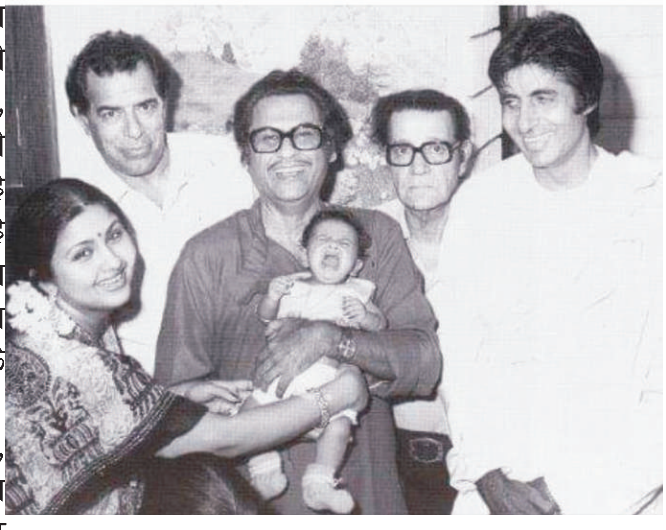

कहानी

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटस्एप करें

मैं कायर हूं

डा० पूरनसिंह

राकेश बाबू की शादी हुई तब वह ग्यारहवीं में पढ़ते थे। घर में सिर्फ तीन ही प्राणी थे - पिता , पत्नी और स्वयं राकेश बाबू । घर बहुत बड़ा नहीं था लेकिन काम चल ही जाता था । गुजर बसर हो ही जाती थी । पिता राजगीरी करते थे । राकेश बाबू की पत्नी आ जाने से घर - घर लगने लगा था नहीं तो पहले भूतों का अड्डा लगता था। राकेश बाबू की पत्नी राधा कोई बहुत सुन्दर नहीं थी । साधारण लम्बाई ,रंग सांवला, तीखे नयन और इन सबसे अच्छी बात यह थी कि पांचवीं कक्षा पास थी लेकिन उसने कभी अपने पांचवी पास होने का दंभ नहीं पाला था ।

राकेश बाबू पढ़ने लिखने में बहुत होशियार थे। रात - रात भर पढ़ते थे । दसवीं में वे प्रथम आए थे । बस उसी दिन से जिस दिन वे दसवीं में वे प्रथम आए थे पिता को पर लग गए थे । 'डह्क्टर बनाऊंगा राकेश को',हमेशा कहते थे राकेश बाबू के पिता। तब बी बी ए , एम बी ए, एम सी ए जैसे पाठ्यक्रम नहीं थे । तब तो जिसका बेटा डाक्टर होता वही सबसे अच्छा पिता माना जाता था । राकेश बाबू के पिता भी अच्छे पिता बनना चाहते थे । 'पैसे का जुगाड़ वे कर ही लेंगे' , ऐसा उनका मानना था । वे राजगीरी करने के साथ - साथ छोटे -मोटे ठेके भी ले लेते थे जिनसे चार पैसे और मिल जाते थे ।

राकेश बाबू स्कूल से आने के बाद घर पर पढ़ते और साथ ही साथ समय मिलने पर डाक्टरी की तैयारी भी करते रहते थे । जब तक वे पढ़ते उनकी पत्नी राधा उनके पास बैठी रहती । वह सोती नहीं थी चाहे रात के दो बज जाएं या चार । वह राकेश बाबू को पढ़ता देखकर मन ही मन खुश होती थी । राकेश बाबू ने कहा भी था कई बार , 'तुम क्यों जागती रहती हो मेरे साथ । मैं तो पढ़ता हूं तुम वैसे ही परेशान होती हो ।''परेशान , हाय राम , कैसी बात कर दई इन्ने ....और पढ़ते बखत तुम्हें पानी की प्यास लगी, चाय को मनु भओ तो कौन लाइके दिए ।' उसका तर्क था या पति प्रेम , कोई नहीं जानता । राकेश बाबू हार गए थे । पढ़ते - पढ़ते जैसे ही राकेश बाबू सिर उठाते वैसे ही राधा खड़ी हो जाती ',पानी लाएं ।राकेश बाबू मना कर देते थे । कुछ सोचने लगते तो वह परेशान हो जाती , 'कछु परेशानी है , लाओ माथो दवाइ दें । राकेश बाबू जो सोचते भूल जाते थे और खिसियाने लगते थे । जब कभी कुछ कंसेप्ट दिमाग में होता और उसे दिमाग तक लाना चाहते तो राधा उठकर खड़ी हो जाती , 'सब ठीक तो है ।' राधा का ऐसा बोलते ही राकेश बाबू का कंसेप्ट दिमाग से निकल जाता था । और वे कहते ,'अरे तुम परेशान मत हो , जाओ सो जाओ जाकर । मुझे अभी आर्गेनिक केमिस्ट्री का यह चेप्टर पूरा करना है । '

आर्गेनिक केमिस्ट्री क्या होती है और क्या होता है चेप्टर , राधा नहीं जानती थी । वह तो सिर्फ इतना जानती थी कि उसके राकेश बाबू को अभी और पढ़ना है सो वह भी वहीं जमींन पर बैठ जाती थी । राकेश बाबू जब पढ़ने के बाद सोने के लिए कहते तो राधा उनका विस्तर सजा देती थी । राकेश बाबू को अच्छी नींद आ जाए इसलिए राधा उनके माथे को हाथ से सहलाने लगती । उसका तर्क था, 'ज्यादा पढ़ने से माथा दर्द करता है। हाय राम 'इसलिए वह उनके माथे को सहलाने लगती थी । कोमल प्यारी सी अंगुलियां जब राकेश बाबू के माथे पर चलतीं तो नींद न जाने कब आ जाती थी उन्हें । राधा हमेशा राकेश बाबू को सुलाने के पश्चात् ही सोती थी ।

उस दिन राकेश बाबू बहुत खुश थे । असल में खुशी का कारण भी था - ग्याहरवीं पास करके राकेश बाबू बारहवीं में आ गए थे और उन्होंने सी पी एम टी का फार्म भी भर दिया था । नियमानुसार यदि वह बारहवीं पास कर लेते और सी पी एम टी की कम्पटीटिव एग्जाम भी पास कर लेते हैं तो उन्हें डाक्टरी की पढ़ाई के लिए कोई रोक नहीं सकता । उस दिन उन्होंने सी पी एम टी का फार्म भरा था । घर आकर पिता को भी बताया था ,दद्दा। यही तो कहते थे राकेश बाबू अपने पिताजी से , ' आज सी पी एम टी का फार्म भर दिया था ।' दद्दा क्या जानते सी पी एम टी का फार्म क्या होता है वह तो सिर्फ कन्नी , बसूली , छैनी ,फावड़ा तक ही सीमित थे । हां इतना जरूर था कि बेटे ने फार्म भरा है और वह डाक्टर बनेगा , उनके लिए खुशी का कारण था । रकेशा हम ना जान्त कछू तू जाने और तेरो काम जाने । बस तू डाकदरी पास कर ले पैसा की चिंता मति करिए । फिर अपने दोनों हाथ फैलाकर कहते , ' बहुत जान है इन हाथों में । '

राकेश बाबू पिता की बात पर खुश होते तो राधा अपने ससुर के आगे नतमस्तक हो जाती थी, 'कितने अच्छे हैं उसके ससुर राकेश को डाकदर बनाकर ही मानेंगे ।' तभी तो राकेशबाबू अपने पिता की खुशी में खुश होकर कहने लगे थे , 'मैं डाक्टर बन जाऊं तब देखना राधा ।' और राधा को पीछे से अपनी बाहो में भर लिया था । राधा का क्या जिसमें राकेशबाबू खुश उसमें वह खुश । राकेश ने इधर बारहवीं की परीक्षा दी और उधर परीक्षा के खत्म होते ही सी पी एम टी की एग्जाम भी दे दी थी । कुछ दिनों बाद परिणाम आया और राकेश बाबू ने युद्ध जीत लिया था । बारहवीं पास की थी वहीं सी पी एस टी की परीक्षा भी पास कर ली थी । अपने पिता को जब यह खबर सुनाई तो पिता पागलों की तरह नाचने लगे थे, ' मैं जान्त थो , रकेशा डाक्टर बनेगो ।' न जाने कैसे जानते थे कि उनका बेटा डाक्टर बनेगा । खैर उनके पिता की लीला वह ही जानें ।

जब राकेशबाबू डाक्टरी में एडमीशन लेने के लिए लखनऊ को चले थे तो जहां पिता की आंखो में खुशियों के अंबार थे तो राधा की आंखो में डर । यह डर क्यो था कोई नही जानता था वह खुश थी लेकिन डरी हुई भी थी । तभी तो राकेश बाबू ने पूछा था , 'हे राधा खुश नहीं दिखाई दे रही है । मैं ट्रेनिंग पर जा रहा हूं ,जब लौटकर आऊंगा तो डाक्टर बनकर आऊंगा और मेरे डाक्टर

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटसएप करें

व्यंग्य

बनते ही तुम डाक्टरनी कहलाओगी । ' न जाने कौन सा दर्द था जिसे सीने मे छिपा कर खुश होने की कोशिश करती रही थी राधा लेकिन कह नही पाई थी वह तो सिर्फ इतना ही बोली थी, 'ऐसी कौन सी औरत हुइए जो अपने आदमी की खुशी मे खुश न हो ए ......हाय राम । 'चल दिए थे राकेशबाबू स्टेशन के लिए । दूर तक जहां तक निगाह गई , देखती रही थी राधा । आंखों की कोरें नम हो गई थीं । साड़ी के पल्लू से पोंछ ली थीं ।कोई जान न ले ,नहीं तो औरतों की क्या है कहने लगेंगी, 'खसमासी है ,खसम चलो गओ अब रात मे संग सोने को नांहि मिलेगो जाइके मारे रोई रई है ।' शुरू में तो राकेशबाबू ने दो दिन बाद ही चिट्ठी डाल दी थी , 'दद्दा एडमीशन हो गया है ...कोई परेशानी नहीं है ,होगी तो बताऊंगा ...राधा का ध्यान रखना ।' चिट्ठी श्यामबीर का बेटा पढ़ रहा था । राधा का नाम आते ही राधा का चेहरा लाल हो गया था । ससुर ने जान लिया था राधा शरमा गई है । खुश हो गए थे उन्होंने कभी राधा को बहू नही माना था हमेशा सभी से कहते, राधा मेरी बहू नहीं मेरी बेटी है । यह समाज की लाज शरम थी कि मुंह ढाँकती थी राधा नहीं तो उनकी चलती तो मुंह ढाँकने के लिए भी रोक देते। ससुर का स्नेह देने के साथ-साथ सासु का भी प्यार देते थे वह राधा से । पिताई ...उन्हें चिट्ठी लिखवाओ तो एक बात मेई ओर से लिखवाइ दिओ ।' इतना कहकर आंखे शर्म से झुका ली थीं राधा ने । 'का बात'

'नहीं बताई थी बात । अंदर चली गई थी । ' बेटे को पत्र लिखवाने के बाद श्यामबीर के लड़के से कहा था , 'जा अपनी चाची से पूछ लिए का लिखवानो चाहि रही थी । बताइ दे तो लिख दिए ।'लड़का अन्दर चला गया था । राधा, श्यामबीर के लड़के को कैस बताती सो पेन लेकर खुद ही लिखने लगी थी, ' तूम बाप बनने वालो ही ।' पांचवीं तक ही तो पढ़ी थी जैसा आया लिख दिया था । लड़के ने कहा भी था, 'चाची आपने सही नहीं लिखा बाप बनने वाले हो ,लिखना था और आपने ...।' ' तू चुप रह । हम का पढ़े- लिखे नहि हैं , हाय राम ।' कहते हुए श्यामबीर के लड़के को डांट दिया था । लड़के ने लिफाफा बंदकर पता लिख दिया था और पत्र को डाक में डाल आया था ।

राकेश बाबू को पत्र मिला तो बल्लियों उछलने लगे थे । सारी खुशियां किसी को मिल जाए तो कोई क्या करे ? राकेश बाबू मेहनत से पढ़ते और अपने घर की राजी -खुशी लेना भी नहीं भूलते थे और उनके पिता समय से पैसे भेज देते थे । राकेश बाबू के साथ बहुत से लड़के -लड़कियां भी पढ़ते थे। उनमें से ज्यादातर अच्छे परिवारों के थे और अविवाहित थे । उन्हीं में से एक लड़की थी वंदना सक्सेना । वंदना सक्सेना बला की खूबसूरत थी । सुंदरता तो मानो उसके अंग-अंग से फूटती थी । पिता जिला जज थे । पैसों की कोई कमी नहीं थी । दोनों हाथों से खर्च करती थी । लड़के उसके आगे -पीछे घूमते थे । कुछ की निगाहें उसकी धन दौलत पर थी तो कुछ की उसके रूप सौंदर्य पर । लेकिन वह...... इन सभी को मिट्टी के भाव भी नहीं पूछती थी । उसका मन तो राकेश बाबू में रम गया था । क्यों । कोई नहीं जानता । राकेश बाबू भी उसकी ओर आकर्षित होने लगे थे । फिर क्या था - आकर्षण ने प्यार का जामा पहना तो ऊंचाइयां सममतल लगने लगी थीं ।

' पापा ही हैं मेरे ..... मां नहीं हैं .....कोई भाई - बहिन नहीं है .... पापा के लाड़ दुलार के बाद यदि कोई है तो ओनली यू...।' गले में बाहें डालते हुए वंदना ने अपने मन की बात आखिर एक दिन कह ही दी थी लेकिन राकेश बाबू कुछ भी नहीं कह पाए थे ।' इज एनीथिंग रोंग विथ यू ।' बाहें अभी गले में ही डाले थी वंदना । नथिंग .... एक्चुअली मैं कहना ... आई वांट टु से ....।'गले में पड़ी बाहों को हटाते हुए बोले थे राकेश बाबू, मेरी बहुत छोटी उम्र में शादी हो गई थी .... राधा नाम है उसका.... प्रिगनेंट है .....। मां तो मेरे भी नहीं है यू नो , यू केन अंडरस्टैड मी एंड माइ रियलिटी ।' मैं ने प्यार किया है राकेश ....तुम मुझे नहीं मिले तो ....।' पैसे से खेलने वाली लड़की जिससे चाहे उससे खेल सकती थी। दोनों के बीच क्या बातें हुईं कौन जाने लोग तो सिर्फ इतना जानते कि उन दोनों का प्यार सातवें आसमान पर था । तभी एक दिन एक पत्र मिला था राकेशबाबू को । पत्र राधा का था, 'लला भओ है तुम्पे ही गओ है .....एक बार देखि जाओ , हाय राम ।' खुश होना चाहिए था राकेश बाबू को लेकिन खुश नहीं हुए थे । वंदना एक दिन के लिए घर जाना चाहता था ।'

'व्हाइ ?'

'यार मेरी वाइफ के लड़का हुआ है । '

'और मै कौन हूं ?'

'तुम मेरी जिंदगी हो ।' राकेश बाबू जितने अकाडिमिक थे उससे भी ज्यादा चतुर। किसको कैसे खुश करना है वे वहुत अच्छी तरह जानते थे ।

दूसरे ही दिन घर पहुंच गए थे। दोपहर का समय था। पिता घर पर नहीं थे । राधा अकेली थी । उसके बिखरे बाल , शरीर से आती बच्चा जनने की दुर्गंध से परेशान होने लगे थे राकेश बाबू। बच्चे को देखकर बहुत ज्यादा खुश नहीं हुए थे ,'कल जाना है वापिस तुम्हारी बात रखनी थी इसलिए ....छुट्टी नहीं है .. ..एग्जाम सिर पर है । बजाय राजी खुशी पूछने के यही तो कहा था राकेश बाबू ने । ' तुम आए गए लले देखि लओ । हमने तुमे देखि लओ .... अब कोई बात नांहि ....चिट्ठी लिखि देओ करो।' न जाने कौन सा अधिकार था जिसमें आकंठ डूबी राधा पागलो की तरह बोले चली जा रही थी और राकेश बाबू ...... वह कितना सुन रहे थे कितना नहीं .... यह तो वही जानते थे। तभी तो राधा पुनः बोली थी 'इतनी चिंता पढ़ाई की है .... तो तुम ऐसो करो कि आजु संझा को ही चले जाओ ... पांच साल का हम तो पांच जिंदगियां तुमाई खुशी में निकाल दें।' निश्छलता , पवित्रता , और विश्वास की त्रिवेणी ,राधा कहां जानती थी कि सच क्या है ?

राकेश बाबू लखनऊ लौट गए थे और ऐसे लौटे कि फिर कभी वापिस ही नहीं गए थे। वंदना की केशराशि और शिखर पर पहुंचने की चाह ने सबकुछ पीछे छोड़ दिया था । बात छिपी नहीं

कान्ति की ग़ज़ले

यह अंक आपको कैसा लगा 7068990410पर वाटस्एप करें

रही थी। पिता और राधा को पता चला तो रो पड़े थे दोनों । 'जोई डर थो मोइ ' न जाने कब मुंह से निकल गया था राधा के। ससुर ने राधा का माथा चूम लिया था और कहा था , 'राधा ... मेरी लाडो . ... रकेशा की ओर से मैं तो से मांफी मांग रहे हैं ।'

नाहि दद्दा नांहि जामे तुमाओ हमाओ का दोष सब जाको खेलु है, ' और माथे पर हाथ रख कर बैठ गई थी राधा ।

नहि .... नांहि जब तक हम हैं चिंता नांहि करेगी मेरी बेटी ... ।'बेटी ही कहते थे हमेशा अपनी बहू से राकेश बाबू के पिता ।

लोग कहते हैं कि जब मुसीबत आती है तो आती ही चली जाती है। राकेश बाबू के पिता काम पर थे। जिस दीवार को चिन रहे थे, न जाने कैसे ढह गई थी । नीचे मजदूर काम कर रहा था उसे बचाने के लिए कूद पड़े थे। मजदूर बच गया था लेकिन... लेकिन दोनों बाहें लहू लुहान हो गई थीं। हास्पीटल ले जाया गया था ।गेंगरीन .सेप्टिक . बाहें काटनी पड़ेंगी।' इतना कहने के बाद डाक्टर साहब चले गए थे । बाद में दोनों बाहे काट दी गई थीं । इन बाहों में बहुत जान है कहने वाले राकेश बाबू के पिता की बाहें अब नहीं थीं । अपने ससुर का इलाज कराने में राधा का घर मकान बिक गया था। जिद्दी ससुर ने अपनी बेटी समान बहू से कह दिया था , अगर तुम मेरी सही बेटी हो तो रकेशा को खबर मति दिओ चाहे मैं मरि भले ही जाऊं।' और ऐसा कहने के एक दिन बाद राधा के ससुर हमेशा - हमेशा के लिए उसे अकेला छोड़ गए थे । राधा ने अपने पिता समान ससुर की बात नहीं मानी थी और उनकी मत्यु की खबर राकेश बाबू को दे दी थी । राकेश बाबू पहुंच गए थे । पिता का अंतिम संस्कार करके लौटते समय पूछा था राकेश बाबू ने , 'अब क्या करोगी राधा ।'

'जो नसीब कराइए सो ।'

बीस हजार रू० देने लगे थे राकेश बाबू । पैसे की कमीं नहीं थी । जज साहब खूब पैसा भेजते थे। आखिर वंदना की खुशी ही तो उनकी खुशी थी ।

'पैसा आदमी बन जइए का, ' राधा ने पैसे नहीं लिए थे ।

'तुम सच नहीं जानती हो राधा ।'

'मैं तो झूठओ नंहि जानती .....।'

'तुम पागल हो रही हो ।'

'पागल तो मैं हूं ही ।'

'तुम पागल ही नहीं जिद्दी भी हो ......बेवकूफ ...... ।' खिसियाने लगे थे राकेशबाबू।

'बेवकूफ नांहि होती .....तो .....बाल कटाइके ..... लिपिस्टिक लगाइके ......किड़बिड़ ....किड़बिड़ करके..... पराए आदमी को फांसि नंहि लेती, ' एक सांस में ही बोल गई थी राधा ।

'यू ब्लडी बिच......' वह कहां जान पाती कि राकेश बाबू क्या बोले थे । वह तो सिर्फ इतना जान पाई थी कि उसने जो कहा था वह राकेशबाबू सहन नहीं कर पाए थे ।

राकेशबाबू लौट गए थे। दो ,एक दिन मन परेशान रहा लेकिन वंदना के प्यार ने सब कुछ संभाल लिया था ।

पूरी मेहनत और लगन से एमबीबीएस कर डा० राकेशबाबू और डा० वंदना सक्सेना ने आसमान छूने के लिए पंख फैला दिए थे ।जज साहब ने शहर के बीचो बीच नर्सिंग होम बनवाया था । वंदना ब्लेसिंग यही नाम तो है उनके नर्सिंग होम का । अब डा० राकेशबाबू का नाम डा० राकेशबाबू नहीं था अब तो वह डा० आर के सक्सेना हैं । सभी लोग उन्हें डा० सक्सेना साहब के नाम से जानते हैं । जिस मरीज पर हाथ रख देते वह मानो सोने का बन जाता है । पूरे शहर में सक्सेना साहब का जलबा है जहां मरीज उन्हें भगवान समझते हैं वहीं समाज में उनकी प्रतिष्ठा सातवें आसमान पर है और उनकी इस प्रतिष्ठा के पीछे उनकी वंदना जी का हाथ है। कब, कहां, क्या करना है पूरा निर्धारण वंदना जी ही करती है ।

राधा के पास घर नहीं रहा, पति उसका हुआ नहीं। छोटे से बच्चे को लेकर जीवन से लड़ने लगी थी वह। बेटे को अपना दूध नहीं पिलाया था उसने, अपना रक्त पिलाकर बड़ा किया था। पांच - छ साल के बच्चे को लेकर जीवन की सच्चाइयों से जूझने लगी थी कि एक दिन पहुंच गई थी प्रिसिपल साहब के घर । शहर में ही देवभूमि इण्टर कालेज है। उसके प्रिसिपल हैं ....डा० नकुल शर्मा। शर्मा जी की पत्नी बहुत पहले ही उनका साथ छोड़कर दूसरी दुनियां में चली गई थी । कोई संतान नहीं हुई। अकेले रहते हैं। ब्राह्मण हैं लेकिन ब्राह्मणों जैसा कुछ नहीं । प्यार ममता,अपनत्व, विश्वास जितना उनमें कूट - कूट कर भरा है उतनी ही प्रशासनिक दक्षता भी है । कालेज की राजनीति को किस तरह से घुमाना है कोई उनसे सीखे ।

घर में अकेले बैठे थे। बेटे की अंगुली पकड़े 'साब, ' कहकर दोनों हाथ जोड़ दिए थे राधा ने। दोनों हाथ जोडकर अभिवादन स्वीकार कर लिया था प्रिंसिपल साहब ने 'मेरो कोई नाहि है जा दुनिया में' पहला ही वाक्य जिसमें अथाह दर्द,पीडा उड़ेल दी थी राधा ने ।

'मैं आपके लिए क्या कर सकता हूँ , 'बिल्कुल सधे हुए शब्द ।

'मेरो जोई बेटा है .....आदमी नंहि.....। तुमाऐ घर में ....झाडूं पौछा,बर्तन' ..फिर वेदना लेकिन स्वाभिमान की सीमाएं ।

'लेकिन मेरे पास तो नौकरों के अम्बार लगे हैं और रही बात मेरी , तो मेरा क्या अकेला प्राणी ......।' राधा की पीड़ा से व्यथित किसी कोने में छिपी पीड़ा होठों तक आ गई थी प्रिंसिपल साहव के ।

शुरू से लेकर आखिर तक की पूरी कहानी बांच दी थी राधा ने प्रिंसिपल के सामने । ऊपर से पत्थर दिखने वाले प्रिंसिपल साहव अंदर से मोम के होंगे , राधा को पता ही नहीं था। तभी छलक पड़े थे प्रिंसिपल साहव , ' मैं करता हूं कुछ ,देखो क्या कर पाता हूं ।'

अपने ही घर में रख लिया था राधा को । राधा जितनी ईमानदार थी उतनी ही कर्तव्यपरायण भी। उसने प्रिंसिपल साहव का मन जीत लिया था। तभी एक दिन बोल पड़ी थी , ' साब , लला को अपने स्कूल में दाखिला कराइ लेते ।' 'अरे, राधा ऐसा नहीं है मेरा कालेज तो छठवीं क्लास से शुरू होता है लेकिन कोई बात नहीं ..... मैं करता हूं कुछ ।' बोले थे प्रिंसिपल साहव और अगले ही

कहानी

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटस्एप करें

दिन उन्होंने फोन मिला दिया था , ' हैलो ।'
' हैलो'
'कौन साहव बात करना चाहेंगे।' दूसरी तरफ सरस्वती विद्या मंदिर के प्रधानाध्यापक की आवाज थी ।
'मैं नकुल बोल रहा हूं देवभूमि इंटर कालेज से ।'
'सर ....सर....... सर.......।'सिर्फ इतनी ही आवाज आ रही थी दूसरी तरफ से ।
'एक बच्चे का एडमीशन करना है देख लीजिए, राधा नामकी एक महिला आपके पास आएगी ।'
' सर .... आपको फोन करने की जरूरत नहीं थी यदि वह महिला आपका नाम ही ले देती तब भी पर्याप्त था ।' दूसरी तरफ प्रधानाध्यापक गिड़गिड़ा रहा था ।
'आभार ।' कहकर प्रिंसिपल साहव ने फोन काट दिया था ।

दूसरे ही दिन राधा ने अपने बेटे का एडमिशन सरस्वती विद्या मंदिर में करवा दिया था । बेटा पढ़ने में बेहद होशियार था। समय गुजरता गया और जैसे ही उसने पांचवी पास की प्रिंसिपल साहव ने छठवीं क्लास में अपने ही कालेज में उसका एडमिशन करवा लिया था । राधा की ममता और प्रिंसिपल साहव का प्रशासन ,बेटे ने दसवीं में कालेज ही नहीं जिले में भी टॉप कर दिया था तभी तो प्रिंसिपल साहव ने राधा से कहा था , 'राधा'
जी साब '
' तुम्हारे बेटे ने जिले मे टॉप किया है ।'
' मतबल'
'मतबल' फिर संभलते हुए बोले थे , ' मतलब यह कि तुम्हारा बेटा बहुत ब्रिलिएंट है .....मुझे लगता है तुम्हारा बेटा आई ए एस भी कर सकता है ।'
'साब आई एस फाई एस हम कछु नांहि जांत लेकिन एक बात बताओ साब ......' 'क्या?'
'हमाओ लला डाक्टर बनि जइए ।'मन में छिपी पीड़ा साक्षात् हाने लगी थी ।
'राधा ,डाक्टर से बड़ा होता है आई ए एस । '
'हम बड़ो छोटो कछु नांहि जांत......सिर्फ बताओ डाक्टर बन जइए या नांहि । 'कभी - कभी जिद भी कर जाती थी राधा, प्रिंसिपल साहव से ।

प्रिंसिपल साहव जान गए थे कि राधा अपने बेटे को डाक्टर ही क्यों बनाना चाहती है , 'तो हमारी राधा चाहती है कि उसका बेटा डाक्टर बने .... राइट ।' प्रिंसिपल साहव राधा को नाराज नहीं करना चाहते थे । दरअसल जिस दिन से राधा उनके घर में आई थी उन्हें अपना घर - घर लगने लगा था । एक सफल गृहणी की तरह पूरे घर को संभाल लिया था राधा ने । प्रिंसिपल साहब ने कई बार आजमाया भी था। तिजोरी की चाबी,जरूरी कागजात छोड़कर चले गए लेकिन मजाल है कि एक चीज भी इधर की उधर हो गई हो । इतना विश्वास, इतनी आस्था उन्हें कहां मिलती ।
'जी, साहब '

बेटे ने बारहवीं पास की तो एक बार फिर उसने डिस्ट्रिक टाप किया था । प्रिसिपल साहब खुश थे और साथ ही खुश थी उसकी मां राधा। बेटा अब समझदार हो गया था। मां के पैर छूकर कहने लगा था, ' मम्मा .....मैने ।'
अभी आगे बोल भी नहीं पाया था कि बीच में ही राधा बोल पड़ी थी, 'मम्मा ....मम्मा को का मतबल।' फिर थोडी देर चुप होकर कहने लगी थी ,'मम्मा तो तेरे कोई था ही नांय...तू मम्मा किनसे कह रहो । '
' ओह मा....मम्मा का मतलब मां होता है । समझ गई आप ।'
' हाय राम...अब मैं कोई पढ़ी लिखी थोड़े ही हूं ।'
फिर न जाने क्या हुआ था कि प्रिंसिपल साहव की ओर देखने लगी थी मानो कुछ मांगना चाह रही हो
' क्या कहना चाह रही हो राधा ।'
' लला मम्मा कह रहो थो । मेरे कोई भइया तो हतो नंहि । अम्मा मोइ जनम दे के मरि गई । बाप शादी के बाद चले गए । अब मै कहां से बाय मम्मा लाइके दें । 'इतना ही बोली थी राधा।
' मैं समझ गया तुम जो चाहती हो राधा .... ठीक है आज से रामदास से कहो कि मुझसे मामा ....। ' स्नेह, अपनत्व से शुरू हुआ बंधन आज सचमुच रिश्ते में बदल गया था ।

बेटा प्रिंसिपल साहव को मामा कहने लगा था । प्रिंसिपल साहव ने उसे पढ़ाने - लिखाने में जमीन आसमान एक कर दिए थे । सी पी एम टी की एग्जाम में टाप तो नहीं पर तीसरे स्थान पर रहा था बेटा ।

तुम्हारा बेटा डाक्टरी की एग्जाम में पास हो गया है । जैसा तुम चाहती थी वैसा ही हो रहा है राधा....तुम्हारी मेहनत तुम्हारी ईमानदारी ....तुम्हारी .....।'
हाथ जोड दिए थे राधा ने , ' नहीं साब नहीं ....आप नहीं होते तो ....।' बेटे की खुशी पर खुश होना चाहिए था लेकिन ......रो पड़ी थी राधा।
बेटे ने मेहनत की थी। पांच साल तक जैसे कोई तपस्या करता है , वैसे करता रहा था। जहां प्रिसिंपल साहब ने पैसे की कमी नहीं रखी वहीं राधा ने दुआओं के अम्बार लगा दिए थे ।

एम बी बी एस के अंतिम वर्ष का परिणाम आया तो बेटे ने गोल्ड मैडल हासिल किया था ।डा० रामदास , एम बी बी एस ,गोल्ड मैडलिस्ट जब घर लौटे तो प्रिसिपल साहब ने उसे अपने सीने में छिपा लिया था मानो किसी कर्तव्य को पूरा कर लिया हो और राधा ने अपने आंचल मे छिपा लिया था मानो किसी बुरी नजर से बचाना चाह रही हो। और बेटा दोनों का प्यार पाकर धन्य हो गया था । बेटा जहां भी फार्म एप्लाई करता चयनित हो जाता था । लेकिन मां न जाने क्या चाहती थी , 'ए लला ,बाई जगह पर नौकरी करिए जहां तेरे पि......।'

बेटा समझ गया था। प्रिसिंपल साहब भी समझ गए थे कि राधा के मन में छिपी चिंगारी अब दहकने लगी है ।बेटे ने उसी शहर में नौकरी की जहां उसके पिता का नर्सिंग होम था , वंदना

कहानी

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटसएप करें

ब्लेसिंग । पूरे शहर में एक छत्र राज था वंदना ब्लेसिग का ।रात-दिन में कोई फर्क नहीं रहा था डा० रामदास के लिए। प्रिंसिपल साहब सेवानिवृत्त हो गए थे । 'हम चाहते है मामा और मां दोनो मेरे साथ रहें' एक दिन बोला था बेटा ।

'आप जैसा चाहते हैं वैसा ही होगा, सर' प्रिंसिपल साहब ने जब ऐसा कहा तो बेटा सहम गया था । फिर क्या था बेटा प्रिंसिपल साहब और मां दोनों को अपने पास रखकर बेहद खुश था । तभी एक दिन मां बोली थी , ' ए लला अब ब्याउ कर लेतो ।'

'माँ , अभी ।'

'हाँ तो कब । और लला अगर तेरे मन में कोई बलकट्टो....गोरी मेम.....ऊंची जाति वाली......होइ तो बताइ दे......हम का करि लिएं ।'कहीं कुछ कांटे सा कसकता था राधा के मन में ।

'नहीं मां, जो आप करेंगी वही होगा ।' बेटा तो मां का भक्त था जो मां कहती वही देववाणी थी उसके लिए ।

खुश हो गई थी मां

'लला वा दिन गनेशा को फोन आओ तो, अरे वो ई ...... मेरो दूर को भैया..... अरे वोई नाय ....बाकी लली ने बारहों पास करो है ....अच्छी है । तू कहे तो...।' सेकड़ो डाक्टर लड़कियां उसकी दीवानी थीं लेकिन जो मां चाहती वही हो..यही तो उसका जीवन है, यदि आपको ठीक लगता है तो आप देख लीजिए ।

'आप देख लीजिए...का मतबल....तू खुशी -खुशी हां करे तो बात करें ।' थोडी सी नाराज लगी थी राधा ।

'नहीं मां ....मैने हां कर दी ।'

'अच्छा ठीक ।'

दूर के रिश्ते के गनेश भैया ने राधा के बुरे समय में कभी मुड़कर नहीं देखा था । बेटे के आसमान छूते ही, जिजी जिजी करके आ पहुंचा था । पंद्रह दिन के अतंराल में ही बेटे की शादी करके मां ने मानो सब कुछ पा लिया था ।राजेश्वरी अपनी सासु को कभी मां या सासु मां नहीं कहती थी । हमेशा बुआ ही कहती थी और राधा उसे कभी बहू नहीं कहती थी हमेशा लली ही कहती थी और डाक्टर साहब बेहद मेहनत करके पैसा इकट्ठा कर रहे थे । रात -दिन में कोई फर्क नहीं था उनके लिए ।

'मामा, मैं चाहता हूं शहर में एक नर्सिगहोम खोल दें अगर आप आज्ञा दे तो ।' प्रिसिंपल साहब के आगे प्रस्ताव रखते हुए बोले थे डा० रामदास ।

'लेकिन पैसा.....प्रस्ताव तो अच्छा है ।'

'पैसे की आप चिंता न करें मैंने काफी इकट्ठा कर लिया है .... कुछ लोन ले लेंगे ।' बेटे की बात सुनकर प्रिंसिपल साहब बहुत खुश थे और सोच रहे थे कि राधा का बेटा कहीं अपने पिता के प्रति विद्रोही तो नहीं होना चाह रहा । फिर सोचने लगे थे विद्रोह है या प्रतिशोध दोनों ही अच्छे हैं ।बस फिर क्या था । गुप्ता मार्केट के सामने ही नर्सिंग होम का शिलान्यास कर दिया गया था। शिलान्यास पर शहर के बड़े बडें लोग इकट्ठे हुए थे ।यह खबर शहर में फैल गई थी और फैलती - फैलती डा० राकेश बाबू सक्सेना तक भी पहुँच गयी थी ।'अच्छा तो अपना बेटा लांच कर रही है आपकी राधा रानी, यू नो, देखते हैं कितना टिक पाता है हमारे ग्रेन्जर के आगे, ' डाक्टर वंदना सक्सेना, डाक्टर होने के साथ - साथ औरत भी तो थी ।

डा० राकेशबाबू सक्सेना कुछ नहीं बोले थे । न जाने क्यों पहली बार मन में खुशी हुई थी जिसे बाहर नहीं आने देना चाहते थे । तीन साल में नर्सिंग होम बनकर तैयार हुआ था । नर्सिंग होम क्या एक तरह से फाइव स्टार होटल बना था। पैसों की कुछ कमीं पड़ी थी जिसे प्रिन्सपल साहब ने पूरा कर दिया था ।राधा नर्सिग होम नाम ठीक रहेगा' ,यही तो बोला था बेटा ।'हाय राम राधा ......।'अपना ही नाम सुनकर भौचक्की रह गई थी राधा ।पूरे शहर में नर्सिंग होम के उद्घाटन की खबर पहुंचा दी गई थी । एम पी, एम एल ए, डाक्टर , एस पी से लेकर समाज सेवी और न जाने कौन कौन थे जिन्हे बेटे ने बुलावा भेजा था और इन्हीं सब में एक कार्ड डा० राकेशबाबू सक्सेना एण्ड हिज वाइफ के नाम भी था ।

'डा० राकेशबाबू सक्सेना एण्ड हिज फैमिली' क्यों नहीं लिखा था इसके पीछे भी तर्क था.... डा० वंदना सक्सेना बहुत ही ख्याति प्राप्त गाइनाकालोजिस्ट थीं लेकिन उनके संतान नहीं थी । कार्ड देखकर खिसियायी थी डा० वंदना सक्सेना, 'देखा आपने , बेशर्मी की सभी सीमाएं पार कर दीं आपके सपूत ने।डा० राकेशबाबू सक्सेना एण्ड हिज वाइफ, हिज फैमिली लिखने में क्या हाथ कट जाते। पॉजीटिवली, हाथ ही कट जाते । 'ऐसे मत कहो वंदना जी ....।' न जाने कैसे निकल गया था डा० राकेशबाबू सक्सेना के मुंह से ।

'ओह यस , राइट , चिंगारी अभी बाकी है। तो जाओ और पैर छुओ उस काली, कलूटी , बेशऊर औरत के और कहो जाकर माफी दे दो मुझे। बोली थी वंदना जी । डह० राकेशबाबू सक्सेना चुप रहे थे । सहम गए थे । निश्चित समय पर उद्घाटन कार्यक्रम शुरू हुआ था । नर्सिंग होम को दुल्हन की तरह सजाया गया था । नर्सिंग होम पर बिल्कुल ठीक सामने ही सबसे ऊपर लिखा था , राधा नर्सिंग होम । मंडप को फूल मालाओं से सजाया गया था । दीप रखा था जिसे प्रज्ज्वलित करके उद्घाटन किया जाना था । शहर के तमाम नामी गिरामी लोग सामने बैठे थे । पहली ही पंक्ति में कलेक्टर साहव , एस पी साहव , सी एम ओ साहव , क्षेत्र के एम पी , एम एल ए और न जाने कौन - कौन बैठे थे। संयोग की बात थी कि बिल्कुल ठीक सामने डा० राकेशबाबू सक्सेना और उनकी अर्धांगिनी डा० वंदना सक्सेना बैठी थी ।

स्वच्छ , निर्मल सी सफेद साड़ी में लिपटी, किसी राजमाता के सदृश राधा, उसके साथ प्रिंसिपल साहब और राधा का हाथ पकड़े उसकी बहू और साथ में डा० रामदास और इन सभी के साथ डाक्टरों और नर्सा का बहुत बड़ा झुण्ड था । राधा धीमे धीमे कदमों से दीप के पास पहूँच गई थी । बहुत सुन्दर से

कहानी

यह अंक आपको कैसा लगा 7068990410पर वाटसएप करें

एक अन्य जलते हुए दीप को राधा के हाथ में देते हुए कोई बोला था, दीप प्रज्ज्वलित कीजिए।'

राधा ने जैसे ही दीप प्रज्ज्वलित करने के लिए हाथ बढ़ाया कि उसकी निगाह सामने बैठे डा० राकेश बाबू पर पड़ गई थी । क्या हुआ ,कोई नहीं जानता, राधा दूसरे दीपक को हाथ में लिए ही अचानक गिर पड़ी थी । चारों तरफ हाहाकार मच गया था । उद्घाटन का क्या हुआ ,कुछ पता नहीं था । स्ट्रेचर पर लिटाकर ले जाया गया था राधा को । डाक्टरों का एक बहुत बड़ा दल उसकी देख रेख में जुट गया था । हालत लगातार बिगड़ती जा रही थी । हाथ का इशारा करके अपने पास बुलाना चाहा था राधा ने अपने बेटे को लेकिन हाथ नहीं उठा पाई थी। बहुत मुश्किल से आंखें खोली थीं । खुली आंखों से इशारा करके अपने पास बुला लिया था बेटे को। सभी लोग बाहर चले गए थे । कमरे में सिर्फ प्रिंसिपल साहव ,बहू और बेटा ही थे ।

'अब समे आइ गओ , ' बहुत कोशिश के बाद बोल पायी थी राधा । 'नहीं मां .... नहीं .... न ... .न... ने ... नाट .... नेवर ....ऐसे कैसे समय आ गया मां । मैं पूरी दुनियां के डाक्टर इकट्ठे कर दूंगा । आपको कुछ नहीं होगा मां ..... आपको .., ' बेटा छलकने लगा था ।

'हाँ ... हां ... तू कर देगा .... मेरा बेटा है न ....लेकिन ... . देख एक बात सुन मेरी .... मेरो एक काम कर दिए ..।'

'मा बस आप चुप रहो ... मैं सब ठीक कर दूंगा , ' जल बिन मछली की तरह तड़प रहा था बेटा ।

'मेरी चिता को आग देने के लिए...... अपने पिता को बुलाइ लिओ ..... मेरी इतनी बात मान ...... लि..... ।' इसके आगे के शब्द गले में ही फंस गए थे । एक बार खुली आंखें फिर बंद नहीं हुई थीं ।

बेटे ने देखा कि मां तो चली गई अरे वह तो पूरा जीवन ही हार गया तो पूरी ताकत लगाकर चीखा था , अ....म्. ...म........... अम्मा ।' तब एक बार तो लगा था कि नर्सिंग होम की इमारत हरहराकर ढह जाएगी .... कि उसकी चीख से सूरज सहम कर छिप जाएगा .... कि नदियों का बहाव विपरीत दिशा में चला जाएगा । प्रिंसिपल साहब ने बेटे को अपनी गोद में भर लिया था। गोद में समाया बेटा तड़प रहा था . ..मामा .... मां चली गई । चारों ओर मातम छा गया था। दुल्हन की तरह सजा संवरा नर्सिंग होम किसी विधवा के उजड़ी मांग सा दिखाई दे रहा था । 'माँ नहीं रही ...उसकी अंतिम इच्छा थी कि उसकी चिता को आप आग दें ।' न कोई संबोधन, न कोई अभिवादन उस छोटे से कागज को लेकर नौकर को डा० राकेशबाबू सक्सेना के घर भेज दिया गया था । नौकर कागज डा० वंदना सक्सेना के हाथ में दे आया था ।

'तुम्हारी पतिवृता पत्नी की अंतिम यात्रा है । आपसे आग मांग रही है ....जाइए.... ' मानो किसी ने सिर पर हाथोड़ा मार दिया हो डा० राकेशबाबू के । शांत बैठे थे । कुछ नहीं बोल पा रहे थे तभी फिर बोली थी डा० वंदना, 'तुम्हारी नाक नीची करने के लिए ही तैयार किया था उसने उस सपोले को... यू नो.....वर्ना यही शहर रहा गया था नर्सिंग होम खोलने को .....। खैर तुम्हारी मर्जी मैं रोकूंगी नहीं । देख लो .... योर चोइस यू केन चूज । '

शांति फिर शांति....मानो तालाब में पानी ठहर गया हो । डा० वंदना चली गई थीं । ऐसा लग रहा था मानो किसी पारवी के पंख काट दिए गए हों और कोई उससे कह रहा हो उड़ो..... जाओ,उड़ जाओ । बड़ी देर तक सोचते रहे थे । ऐसा लग रहा था मानो कोई कह रहा हो 'प्रायश्चित करने का समय आ गया है डा० साहब जाओ चले जाओ ...' .फिर सब कुछ गडमड होने लगा था '....यही शहर रह गया था नर्सिंग होम खोलने को .....नाक नीची करने के लिए ही तैयार किया है ।....... चले जाओ डा० साहब नहीं तो लोग कहेंगे आप कायर हैं ....वंदना जी के दवाब में है .....आप कायर है .....कायर है आप....।'

'हाँ .....हाँ ....मैं कायर हूँ .....मैं हूँ कायर ......।' बड़ी तेज आवाज निकली थी डा० राकेश की और गर्दन एक तरफ लुढ़क गई थी । डा० वंदना अंदर से भागती हुई आई थीं , क्या हुआ , 'ओह माइ गाड.....अब क्या होगा, एम्बुलेस बुलाओ अभी....हरी....फास्ट ।' एबुलेस आ गई थी । डा० साहब को उनके नर्सिंग होम ले जाया गया था ।

डा0पूरन सिंह
पटेल नगर, नईदिल्ली

कहानी

सफर से हमसफ़र

ये सीट मेरी है, विजयवाड़ा स्टेशन पर इतना सुनते अमित ने पीछे मुड़कर देखा तो एक हमउम्र की लड़की एक हाथ में स्मार्ट फोन और दूसरे हाथ में बैग पकड़े खड़ी थी। जी मेरा सीट ऊपर वाला है ये शायद आपका है अमित ने कहा। ठीक है, अब आप अपना सामान हटा लीजिए और बैठने दीजिए मुझे मेरी सीट पर। इतना सुनते अपना समान हटाते हुए अमित कहने लगा, मेरा नाम अमित है और मुझे बनारस तक जाना है, आप कहा तक जाएंगी? उधर से कोई प्रतिक्रिया आते ना देख अमित चुप हो गया। थोड़ी देर बाद अपना बैग सीट के नीचे रखकर मोबाइल को चार्ज में लगाते हुई वह लड़की बोली मेरा नाम सुमन है और मैं कह्लेज की छुट्टियों में मम्मी के यहां पटना जा रही हूं। अच्छा तो आप बिहार से है और यहां विजयवाड़ा में पढ़ाई करती है, अमित को इतने पर रोकते हुए सुमन ने कहा मैं बिहार से हूं लेकिन केरला में एमटेक की पढ़ाई करती हूं और विजयवाड़ा में अपने दोस्त के शादी में आई थी। अब छुट्टियों में घर जा रही हूं, आप क्या करते हो अमित, सुमन ने पूछा । आपके तरह मैं भी इंजीनियर हूं और मां की तबियत सही नहीं है इसलिए गांव जा रहा हूं मां से मिलने। क्या हुआ आपकी मां को सुमन के पूछने पर अमित ने बताया कि मां की तबियत अकसर खराब रहती है और इस समय थोड़ा ज्यादा खराब हो गई है इसलिए गांव जा रहा हूं। इतने में टिकट -टिकट कहते हुए टीटी की आवाज सुनाई पड़ती है, अमित ने अपना टिकट टीटी को दिखाकर सुमन से कहा कि मेरी सीट ऊपर वाली है और थोड़ी देर में डिनर करके मैं अपनी सीट पर चला जाऊंगा। कोई बात नहीं मैं भी डिनर के बाद सोऊंगी तब तक बैठ सकते है आप। थोड़ी देर बाद अपनी टिफिन खोलते हुए अमित ने कहा आप भी लीजिए। नहीं आप खाइए, मैं टिफिन साथ लाई हूं सुमन से इतना सुनते अमित ने कहा चलिए फिर साथ में डिनर करते हैं। डिनर के बाद सुमन ने अमित से कहा आपका खाना तो काफी अच्छा था, आपने खुद बनाया था? नहीं-नहीं अह्फिस से पैक कराया था मैने अमित ने जवाब दिया। चलो अच्छा है आप हिंदी बोल लेते हो। शायद पूरे बोगी में हम दो ही हिंदी भाषी हैं। आपकी सीट पास में नहीं होती तो मैं बोर हो जाती। इतना सुनते अमित ने कहा अरे ऐसे कैसे ? आप बोर न हो तभी तो भगवान ने मुझे यहां भेजा हैं, इतने पर दोनो जोर से हंस पड़े।

पूरें सफर में दोनो एक दूसरे के पसंद-नापसंद, परिवार, पढ़ाई इत्यादि को लेकर ऐसे बात कर रहें थे जैसे उनकी ये पहली मुलाकात नहीं बल्कि बरसों पुरानी जान पहचान हो। अगले सुबह भोर में अमित का स्टेशन आ गया, उसने सुमन की तरफ देखा वह सो रहीं थी, उसकी नीद खराब न हो इसलिए अमित ने उसे जगाना जरूरी नहीं समझा और सीट के नीचें से अपना बैग निकालने लगा। इसी बीच सुमन घबरा कर उठी और नीद में कौन हो, कौन हो कहने लगी। अरे सुमन, मैं अमित मेरा स्टेशन आ गया और मैं अपना बैग निकाल रहा था। क्या बनारस आ गया, अमित? मुझसे बिना मिले जा रहें थे तुम, जगाना भी जरूरी नहीं समझा ? अरे सुमन ! मैंने सोचा तुम्हें क्यों परेशान करूं इतना सुनते ही सुमन बोल पड़ी बिना मिले जाते तो मैं क्या परेशान नहीं होती ? सुमन के इन शब्दों से अमित को वही अहसास हुआ जो उसके दिल में हो रहा था। फिर उसने सुमन से कहा - सुमन, चाहता तो मैं भी नहीं था की बनारस स्टेशन इतनी जल्दी आए पर अब मेरी मंजिल आ गई और हमारा सफर यहीं खत्म हुआ। कैसा सफर अमित, हमारी तो ट्रेन की सफर खत्म हुई है दोस्ती की नहीं सुमन ने जवाब दिया। इतने में ट्रेन ने बनारस छोड़ने का हह्र्न बजा दिया और अमित सुमन को बाय कहते हुए अपना बैग निकाल कर चल पड़ा सुमन भी दरवाजे तक अमित को बाय -बाय कहते हुए छोड़ने आई।

अगले कुछ महीनों तक दोनों एक दूसरे से बात करते रहें और कुछ महीनों बाद सुमन ने भी अपनी पढ़ाई पूरी कर लिया और अब नौकरी करने लगी। फिर एक दिन दोनों ने निश्चय किया क्यों न इस दोस्ती के सफर को कभी न खत्म होने वाली सफर बना लें। फिर दोनों अपने-अपने घर में एक दूसरे के बारे में बताकर शादी करने की बात कहीं। घर वालों ने भी उनकी खुशी के लिए उनको एक दूसरे का हमसफ़र बना दिया।

जीवन के कई साल साथ बिताने पर जब अमित और सुमन अपने खुशी भरे परिवार और बच्चें को देखते है तो उनकी जुबां से निकल पड़ता है की ये बच्चें, हमारे जीवन में ट्रेन के उस डिब्बे की तरह है जिसके सफर ने हमें हमसफ़र बना दिया।

अंकुर सिंह
हरदासीपुर, चंदवक,
जौनपुर, उत्तर प्रदेश- 222129
मोबाइल नंबर - 8367782654.
व्हाट्सअप नंबर - 8792257267.

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटस्एप करें

कविता

कल किसी ने कहा ,

पायल ,झुमकी ,आकाश,धरती है कविता
कोई बोला ,
ममता ,मर्यादा ,संभ्यता ,संस्कृति है कविता
किसी की नजरों में
चाँद ,सितारे ,फूल ,तितली है कविता
किसी के लिए
पहाड़ ,पंछी , मंदिर ,नदी है कविता
मगर असलियत कुछ और है
हकीकत में कोई दूसरा ही छोर है
कविता तो प्रसव पीड़ा सी कहानी है
जिसमें अपनी या अपनों की जिंदगानी है
पीर है ,पीड़ा है ,
क्रन्दन है कविता
आग है , तेजाब है ,
नुकीला पत्थर है कविता
टूटा दिल है ,
कभी बहता सन्नाटा है
गुलाब के बीच
चुभता सा कांटा है कविता
विरह, वेदना ,संकोच ,संवेदना है
दर्द ,दारुण ,अड़चन,अवहेलना है कविता
सिर्फ सकारात्मकता नही ,
आक्रामकता भी दिखाती है कविता
नकारात्मकता मिटा
सच्चाई का रास्ता भी ,
बताती है कविता
कविता
अंतरात्मा की आवाज़ है
कविता
सृजन है ,लेखक के लिए रिवाज़ है
कलम से बहता
आँसूं है ,रक्त है ,पसीना है
कविता संग मरना,
कविता संग ही अब जीना है ,
कविता संग ही अब जीना है।

नेहा नाहटा ,दिल्ली

यह अंक आपको कैसा लगा 7068990410पर वाटस्एप करें

ग़ज़ल

झरोखे से मकां भी झाँकता है फिर बहाने से,
कहीं कोई बशर होगा बचायेगा विराने से।

कहर क्यूँ टूटता है बेकसी के काफिले पे यूँ,
फ़क़त साँसे चला करती हसीं लाशे चलाने से।

अजल का क्या बकाया है किसी भी रूप में आती,
करम का सोज़ है शायद चली आती जलाने से।

शबाबे शब बहकती थी दिलों का नूर रोशन था,
मगर फुर्सत नहीं थी बेवफ़ा को छल सजाने से

बहाने से रुलाते है कभी रूठों मनाते है,
कहीं आते नहीं वो बाज़ हमको भी सताने से।

नहीं हूँ जिस्म मै बस माँ मुझे क्यूँ घर जलाते हैं,
मे भी हूँ रूह से जिंदा तिजारत क्यूँ ज़माने से।

प्रज्ञा देवले
महेश्वर, खरगोन, मध्यप्रदेश

साहित्य सरोज शार्ट फिल्म योजना के तहत कलाकारों की खोज 9451647845

लेख

यह अंक आपको कैसा लगा 7068990410पर वाटसएप करें

लव जिहाद

' लव जिहाद 'ये शब्द आपने कई बार सुना होगा...क्या होता है ये लव जिहाद..। अगर इसे सरल शब्दों में कहें तो लव जिहाद या जिहाद मुस्लिम पुरुषों द्वारा गैर-मुस्लिम समुदायों से जुड़ी महिलाओं को इस्लाम धर्म में परिवर्तित कराने के लिए प्रेम का जाल बुनना है। आपने भी देश में लव जिहाद के दिल दहला देने वाले किस्से सुने होंगे, लव जिहाद दो शब्दों से मिलकर बना है। अंग्रेजी भाषा का शब्द लव यानि प्यार, मोहब्बत या इश्क और अरबी भाषा का शब्द जिहाद। जिसका मतलब होता है किसी मकसद को पूरा करने के लिए अपनी पूरी ताकत लगा देना। जब एक धर्म विशेष को मानने वाले दूसरे धर्म की लड़कियों को अपने प्यार के जाल में फंसाकर उस लड़की का धर्म परिवर्तन करवा देते हैं तो इस पूरी प्रक्रिया को लव जिहाद का नाम दिया जाता है।

कुछ घटनाओं का मै आज जिक्र करते हुए वहाँ आपका ध्यान ले जाना चाहूँगी...

एक हिन्दू लड़की ने एक मुसलमान लड़के के प्रेम जाल में फँस कर उससे शादी की, जिसके जीवित बीबी से दो बच्चे थे, और इस बात को वो जानती थी। उसके बावजूद भी लड़की आग में कूदी तो कसूरवार तो लड़की भी है, ये कहना था सभी लोगों का.. जब कि वो एक साज़िश का शिकार बनी थी न कि प्यार था, जिसका परिणाम ये हुआ कि मुस्लिम लड़के ने उसे प्रताड़ित किया बहुत सी यातनाएँ दी जिससे तंग आकर लड़की अपने पिता के घर वापस लौट आई परंतु जब उस मुद्दे पर उसके परिवार ने अपनी आवाज़ बुलंद की तो उस लड़के के परिवार एवं मौहल्लेवालों को हिन्दू होने के नाते उस लड़की के साथ खड़े होने की बजाए सख्ती से कहा था, "ऐसी२लड़की को ठोकर मार कर घर से ही नहीं मोहल्ले से भी निकालो। जिसने जानबूझकर बाल-बच्चो और पहली बीबी वाले से शादी की है।" आज भी ऐसे लोगों को समाज सिर पर बैठाए हुए है।

कहने का मतलब यह है, जब तक परिवार पश्चिमी सभ्यता को त्याग भारतीय संस्कृति को नहीं अपनाएंगे, देश विरोधी इसका लाभ उठाकर अपने "गजवा-ए-हिन्द" के मकसद में कामयाब होते रहेंगे। "गजवा-ए-हिन्द" को दफ़न करने के लिए हमें सर्वप्रथम, देश से गंगा-जमुनी तहजीब, सेक्युलर शब्दों का जनाजा निकाल कर समुद्र से अधिक गहरे गड्ढे में दफ़न करना होगा, अन्यथा देश इस आग में जलता रहेगा।

अभी नागरिकता संशोधक कानून विरोध धरनों और प्रदर्शनों में खुले आम हिन्दुत्व को अपमानित करवाया जा रहा था, और बेशर्म लालची गैर-मुस्लिम कड़कती ठंठ में अपने दूध पीते बच्चों को रात को धरने पर बैठ रहे हैं, चाय बांट रहे हैं, लंगर लगा रहे हैं। जिन-जिन राज्यों में इस तरह के हिन्दू विरोधी नारे लगे थे, वहां की सरकारों ने तुरन्त कार्यवाही क्यों नहीं की? जिन्हें ये बेशर्म नेता गरीब, मजलूम, असहाय और नासमझ कहकर जनता को गुमराह कर अपनी तिजोरियां भर रहे हैं, ये हिन्दुओं के खिलाफ मुस्लिमों के साथ मिलकर षड़यंत्र रचते हैं अपनी राजनीति की रोटियाँ सेकते हैं, सत्ता की लालच ने नेताओं को धृतराष्ट्र बना दिया है यही लोभ इनके विनाश का कारण बन्न सकता है, हमारे हिन्दुस्तान की पहचान इसकी सभ्यता,संस्कृति से जिसे बचाए रखना हम सभी का कर्तव्य है, हम सभी संकल्प लें कि अपने देश को,अपने धर्म अपनी संस्कृति को बचाए रखने हेतु प्रयासरत रहेंगे।

हमारा राष्ट्र हमारी पहचान
हमारी धड़कन हिन्दुस्तान

ज्योति राय
सोनभद्र/बलिया

कविताएं

यह अंक आपको कैसा लगा
7068990410पर वाटसएप करें

इंसान

मन में
विचार उठते
सोने कहाँ देते

जब बता दो
उन्हें समाज को
बैठने नहीं देते

सुसुप्ता अवस्था
परिवर्तित होकर
जाग्रत कर देते
फिर सोने का
मन खोते

समाज के लिए
उठना-बैठना
और सोचना
सब के बस में
कहाँ होते

स्वयं के लिए
जानवर भटकते
इंसान तो
बाकि के लिए
ही सोचते

अगर ऐसा नहीं
फिर वह
इंसान काहे का
बस पुतला है
प्राण तो पहले ही
उड़ चुका
बेजान है

सूर्यदीप कुशवाहा
वाराणसी- उत्तर प्रदेश

"विश्वास"

बंधनों की देह में जब,
भाव सब निश्वास होंगे।
क्या प्रिय तब भी तुम्हारा,
प्रेम पर विश्वास होगा!!

चेतना की जलधि पर जब,
मेघ चिंता के घिरेंगे,
कहे वचन होंगे कटु जब,
मोती अश्रु बन झरेंगे,
प्रेम से झंकृत हृदय जब,
व्यथा का आवास होगा।
क्या प्रिय तब भी तुम्हारा,
प्रेम पर विश्वास होगा!!

ऊँचे अभिलाषाओं से,
जब कभी कर्तव्य होंगे,
मन विकारों से घिरेगा,
भिन्न से वक्तव्य होंगे,
भावनाओं में बही क्या,
प्रीत का विन्यास होगा।
क्या प्रिय तब भी तुम्हारा,
प्रेम पर विश्वास होगा!!

वंचनाओं से घिरुँ जब,
संग क्या तब भी रहोगे,
कुपित होगा मन कभी जब,
मान क्या मेरा रखोगे,
आवृत दुविधाओं से जब,
प्रेम का आकाश होगा।
क्या प्रिय तब भी तुम्हारा,
प्रेम पर विश्वास होगा!!

वेदना से, क्षोभ से प्रिय,
जब ग्रसित यह प्राण होंगे,
अवसाद से घिर कर कभी,
कष्ट जब अविराम होंगे,
कहे गये शब्दों में क्या,
सांत्वना का वास होगा।
क्या प्रिय तब भी तुम्हारा,
प्रेम पर विश्वास होगा!!

मौन भावों की अपेक्षा,
शब्द कहना व्यर्थ होगा,
प्रेम में लिये वचनों का,
तभी सार्थक अर्थ होगा,
प्रेम की चिर परीक्षा में,
सुख-दुख अनायास होगा,
क्या प्रिय तब भी तुम्हारा,
प्रेम पर विश्वास होगा!!

मानसी शर्मा
आयु-15
प्रदेश-दिल्ली
स्वरचित

कविताएं

यह अंक आपको कैसा लगा 7068990410पर वाटसएप करें

पोष की सर्दी

पहाड़ों वाली
सारी सर्दी ,
मैदानों में
पसर गयी ।

बीच रास्ते
किरणें सारी
आसमान में
बिखर गयी ।

पोष की सर्दी
शिखर पर ,
खिड़कियों के
कांच है नम ।

सब घरों में
बंद हुए हैं ,
बाहर बस
आलाव सहारा ।

दिन बौना-सा
रात तन्हा ,
शाम-से ही
कर्फ्यू सम ।।

ऊन से सब
लदे हुए है ,
हर तरफ है
यही नजारा ।।

खूब कोहरा
धूप ओझल,
जिधर जिधर भी,
नजर गयी ।

पुरवाई पर
मावठ आई ,
सर्दी तन मन
उतर गयी ।

धरती का हर
जर्रा जर्रा ,
राह धूप की ,
रहा देखता ।

पहाड़ों वाली
प्यारी सर्दी ,
मैदानों में
पसर गयी ।

दांत किट किट
तन कंपाए ,
पर भास्कर
कहां देखता ।।

मुकेश अमन
गीतकार
बाड़मेर राजस्थान
8104123345

"तुम न आओगे क्या?"

उमेश कुमार पाठक 'रवि'

दिल तड़पने लगा, तुम न आओगे क्या?

लाल ,पीला, गुलाबी ये गेंदा खिला,
पहरा अब ठंड का भी कड़ा हो चला,
कुछ न आकर हिफाजत दिखाओगे क्या?

देख लो यह उषा भी विहँसने लगी,
धूप निकल बाल टोली चहकने लगी,
है हिमकर मन रुठा, न हँसाओगे क्या?

सुवर्ण सा सेहरा, सज उठा धान का,
मनभावन कलरव अब खगकुल गान का,
पहुँच तू मित्रता न निभाओगे क्या?

पराग रंजित मारुत, सुध-बुध खो रहा,
अभाव आलस थका, बेखबर हो रहा,
याद आने लगी, तुम न आओगे क्या?

अपना सागर किनारा बना लो मुझे,
नित्य टकरा के लहरें, जहाँ पर रिझें,
प्यास मरने लगी, जल पिलाओगे क्या?

चाँद को तो केवल चाँदनी चाहिए,
शाम होते ही उसको अदा चाहिए,
चाँदनी की सुधा तुम पिलाओगे क्या?

देख लो सूखा तट, धूप तपने लगी,
सृष्टि क्षणभंगुर कामों में सजने लगी,
आह! उठने लगी, तुम न आओगे क्या?

---–विश्वामित्र कालोनी,
चरित्रवन,
बक्सर, बिहार-–802101
मोव नव 8825211125

7वाँ गोपाल राम गहमरी साहित्यकार सम्मेलन एवं सम्मान समारोह 2021 एक रिपोर्ट

09 सितम्बर 2021 को प्रकाशित हुई कार्यक्रम की अधिसूचना के बाद से लेकर 28 दिसम्बर 2021 को दोपहर 12 बजे पटियाला पंजाब से आये बांका बहादुर अरोड़ा के जाने के बाद अतिथियों के जाने का सिलसिला समाप्त होने के साथ गोपाल राम गहमरी साहित्यकार सम्मेलन एवं सम्मान समारोह 2021 जो अगले वर्ष से गोपाल राम गहमरी साहित्यकार महोत्सव (निर्णयकर्ता -सरंक्षक सुभाषचंदर जी) के नाम से जाना जायेगा समाप्त हो गया।

कार्यक्रम के अतिथियो के रूप में सबसे पहले पूना से 23 दिसम्बर को मेरे बड़े भाई मार्ग दर्शक प्रभू घोष जिसे दुनिया प्रबुद्ध घोष के नाम से जानती है गहमर पहुँचे, उसके बाद विजय मिश्र दानिश जी भाई जो सम्मान प्राप्त करने कम व्यवस्था संभालने अधिक आये थे जयपुर से गहमर पहुँचे, उसके बाद तो सिलसिला चल निकला। 24 की सुबह लखनऊ से रमेश श्रीवास्तव जी, और दोपहर में वृक्षमित्र के नाम से प्रसिद्व सुनील दुबे जी एवं उनकी धर्मपत्नी सुधा दुबे जी जो खुद राष्ट्रपति पुरस्कार विजेता शिक्षक थी का गहमर आगमन हुआ। शाम होते होते मथुरा से राधे-राधे के जयघोष करते हुए संतोष शर्मा शान जी अपने पुत्र के साथ गहमर पहुँच गई।

24 को ठीक 3 बजे गहमर इंटर कालेज के प्रागंण में गहमर के युवा प्रधान बलवंत सिंह बाला के द्वारा द्वीप प्रज्जवलित कर 7वें गोपाल राम गहमरी साहित्यकार सम्मेलन एवं सम्मान समारोह 2021 का शुभारंभ किया। इस अवसर कम्पोजिट विद्यालय भतौरा, कम्पोजिट विद्यालय गहमर, एवं गहमर इंटर कालेज गहमर के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम की प्रस्तुति की गई। कार्यक्रम का संचालन कम्पोजिट विद्यालय भतौरा के प्रधानाचार्य साक्षी गोपाल चौबे जी ने किया। शाम 5 बजे प्रथम दिन का कार्यक्रम समाप्त हुआ। रात 11 बजे पंजाब मेल जो अपने समय से 4 घंटा विलम्ब से गहमर आई पठानकोट से बांका बहादुर अरोड़ा जी, हरदोई से रणविजय सिंह जी, पागल जी,शालू जी,अनिल अनिकेत जी, समेत 3 अन्य साहित्यकार गहमर पहुँचे।

25 दिसम्बर की सुबह श्रमजीबी एक्सप्रेक्स से सुभाषचंदर सर,डॉ पूनम सिंह जी, उ0नि0 रणजीत यादव जी, केन्द्रीय सहायक शिक्षा निदेशक दीपक पाण्डेय जी गहमर पहुँचे, उस समय मैं सो रहा था, मेरे सर में काफी दर्द था, उनको स्टेशन से लाने के लिए विजय मिश्र दानिश भाई के साथ रेलवे स्टेशन से रिसीव कर घर पहुँचा कर मैं अपनी तैयारीयों में जुट गया।

ठंड का असर था कार्यक्रम एक घंटा विलम्ब से शुरू हुआ। सुबह 10 बजे हल्द्वानी में मीना अरोड़ा जी, और गहमर में हम मीना जी के वापसी के तत्काल टिकट में जुट गये, किसी तरह प्रथम वातानुकुलित शयनशान का टिकट जो वेटिंग 2 और 3 दिखा रहा था होते होते वेटिग 8 पर पहुँच गया, काफी प्रयास हुआ उनके टिकट का लेकिन सब तरफ से निराशा हाथ लगी, 26 को बरेली जाने वाली अधिकाश ट्रेने निरस्त होने के कारण एक ही ट्रेन पर लोड अधिक हो गया, जो तत्काल न हो पाने का मुख्य कारण समझ में आया, अंत में उनका आने का टिकट भी निरस्त करना पड़ा।

प्रथम सत्र में छंद मुक्त कविता के स्वरूप पर कार्यशाला आयोजित हुई। कार्यशाल की अध्यक्षता सुभाषचंदर सर ने, किया, कार्यशाल में डॉ पूनम सिंह , दीपक पाण्डेय जी ने भाग लिया। यह कार्यशाला छंद मुक्त कविता पर एक कारगर कार्यशाला साबित हुई। कार्यशाला चल ही रही थी कि सिरसा चण्डीगढ़ से श्रीमती डा0 शील कौशिक" एवं "डा0 मेजर शक्ति राज जी, सोनभद्र से ज्योति राय जी, भोपाल से सतीश चन्द्र श्रीवास्तव जी का आगमन हुआ।

छंद मुक्त कविता पर परिचर्चा के बाद केन्द्रीय सहायक शिक्षा निदेशक श्री दीपक पाण्डेय जी द्वारा व्यंग्य श्री सुभाषचंदर जी के अध्यक्षता में अन्तराष्ट्रीय शार्ट फिल्म समरोह का शुभारंभ किया गया। जिसमें 10 देशों की 80 से अधिक फिल्मों से चुनी हुई 8 फिल्मों का प्रदर्शन हुआ। प्रदर्शन के बाद शार्ट फिल्म समारोह के अन्तराष्ट्रीय सदस्य श्री प्रबुद्धा घोष ने फिल्मों एवं इस समारोह के उद्वेश्य पर प्रकाश डालते हुए कहा कि हमारे रक्षा बजट से कई गुना अधिक फिल्म उद्योग का बजट है, लेकिन शायद ही कोई भारतीय फिल्म अन्तराष्ट्रीय स्तर पर अपनी छाप छोड पाती है। हमारे यहाँ प्रतिभाओं की कमी नहीं है, लेकिन हम अपने स्वार्थ में प्रतिभाओं को दबा कर पहुँच को आधार बना कर कलाकारों का चयन करते हैं। उन्होंने शार्ट फिल्म निर्माण एवं उससे धनोपार्जन कैसे करें इस पर विस्तृत जानकारी दिया।

दोपहर में भोजन के बाद लघुकथा वाचन का एवं उस पर समीक्षा का कार्यक्रम हुआ जिसमें समीक्षक के रूप में सुभाषचंदर सर, सुनील दुबे जी, एवं दीपक पाण्डेय जी रहे। लघुकथा वाचन में संतोष शर्मा शान जी, रणजीत यादव जी, पागल जी, सुधा दुबे जी, ने भाग लिया।

शाम के 5 बजे सेहत से सफलता का कार्यक्रम प्रारंभ हुआ जिसमें धमेन्द्र सिंह जी एवं ममता सिंह जी के द्वारा सेहत से सफलता की ओर कैसे जाये, एवं अपने सेहत का ख्याल कैसे रखें बताया गया।

शाम 7 बजे पागल जी के संचालन में कवि सम्मेलन शुरू हुआ जिसमें पागल जी, मिथिलेस गहमरी, शालू सिंह, सतीश चन्द्र श्रीवास्तव जी, अनिल अनिकेत, उमेश श्रीवास्तव जी इत्यादि ने कविता पाठ किया। कवि सम्मेलन के पूर्व गाजीपुर सिविल बार एशो० के अध्यक्ष चुने जाने पर गहमर निवासी धीरेन्द्र सिंह जी का सम्मान कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। इस प्रकार गोपाल राम गहमरी साहित्यकार सम्मेलन का दूसरा दिन हसते खेलते बड़ी आसानी के साथ अपने उद्वेश्यों की पूर्ति करते बीत गया। कार्यक्रम के दौरान पता ही नहीं चला कि कब सुबह से शाम हो गई। आये हुए सारे अतिथि अपने वास्तविक सुख-सुविधा को भूल कर हमारी सुविधा में मस्त दिखे, जिसे जो मिला खाया, जगह मिली सोया, महिलाएं घर के अंदर अपनी बैठके लगा रही थी, उन्हें बाहर की व्यवस्था से कोई सरोकार नहीं था। वृक्षमित्र जी एवं उमेंश चन्द्र श्रीवास्तव पिता जी के हाल में उनके साथ चर्चाओं में मस्त। एक परिवारिक रूप में कार्यक्रम का दूसरा दिन उत्सव सरीखा व्यतीत हुआ। जिसके लिए सभी को नमन करता हूँ।

दूसरा दिन बीत चुका था, 26 दिसम्बर की सुबह तीसरे दिन का प्रथम सत्र गंगा स्नान और कामाख्या माँ दर्शन पूजन का था। प्रत्येक वर्ष से अलग इस वर्ष मैं न सिर्फ सुबह देर तक सोता रहा बल्कि 7 सालो के इतिहास में पहली बार सबके के साथ गंगा घाट पर भी गया। इस का कारण यह था कि वर्ष 2017 में कान्ति माँ की मौजूदगी के बाद पहला वर्ष था जब पत्रिका का कोई पदाधिकारी मेरे ठीक पीछे दिवाल बन कर सुभाषचंदर के रूप में खड़ा था। इस लिए मैं पूर्ण रूप से निरंकुश और मनमाना हो गया था। मैं काम तो कर रहा था लेकिन काम कैसा होगा इसकी चिंता मुझे सुभांषचंदर भाई साहब के कारण बिल्कुल नहीं थी।

मैं भी सभी के साथ गंगा घाट पर पहुँचा। अपने शहर में एक कदम पैदल न चलने वाले साहित्यकार गहमर में गंगा घाट तक पैदल यात्रा किये और गंगा स्नान का आंन्दन उठाये। गंगा घाट से लौट कर बडी बडी लक्जरी गाड़ीयो में बैठने वाले हमारे अतिथि गहमर से माँ कामाख्या दरवार तक की यात्रा साधारण आटो रिक्सा में बैठ कर तय किये। मैं गंगा घाट से ही लौट आया था, मेरे लिए कुछ सम्मान पत्रों का गलती से न छप कर आ पाना एक गंम्भीर समस्या बन गया।

रविवार का दिन होने के कारण गाजीपुर में किसी प्रिंटर की दुकान खुली नहीं थी। भदौरा के हमारे बड़े भाई कुमार प्रवीण ने एक नम्बर दिया उनसे संम्पर्क स्थापित किया गया तो वह प्रिन्टर भी रविवार को काम करने में असमर्थ था। तभी हमारे गाजीपुर के जी न्यूज के पत्रकार आलोक भाई ने गाजीपुर के एक प्रिन्टर से बात करके सम्मान पत्र छापने पर राजी किया। मैं प्रिन्टर को सम्मान पत्र मेल कर करके खाली हुआ। उसी दौरान मुँगेर से अंजनी सुमन जी और एक अन्य पटना से आये। दर्शन पूजन से लौट कर सभी ने नास्ता किया । अभी नास्ते का कार्यक्रम चल ही रहा था कि गहमर इंटर

कालेज के गेट पर दिल्ली से जामिया इस्लामिया विश्वविद्यालय की हिंदी की विभागााध्यक्ष श्रीमती इंदू विरेन्द्रा जी की गाड़ी खड़ी हो गई। हसमुख स्वभाव की सादगी लिये वह खुद भी और उनके पतिदेव भी, आराम से सभी ने नास्ता खत्म किया और चल दिये तीसरे दिन के द्वितीय सत्र कहानी के परिचर्चा के लिए। कहानी के सत्र की अध्यक्षता श्रीमती इन्दू विरेन्द्रा ने किया, उनके साथ गाजियाबाद से आई डॉ पूनम सिंह एवं सिरसा चंडीगढ़ से आई शील कौशिक जी ने किया, इसमे कहानी लेखक एवं वर्तमान कहानी के स्वरूप पर प्रकाश डाला गया। कहानी पर कार्यशाला का संचालन विजय मिश्र दानिश जी ने किया।

तीसरे दिन का तीसरा सत्र सांस्कृतिक कार्यक्रम में पठानकोट पंजाब से आये बांका बहादुर अरोड़ा के द्वारा जब जागो तभी सबेरा नाम के एकांकी के प्रस्तुतिकरण से हुई, एकांकी के बाद काठमांडू नेपाल से आई हुई अंजली पटेल ने गायन से सभी का दिल जीत लिया।

इस अवसर पर मुख्यअतिथि सिंह लाइफ केयर हास्पिटल के एम डी डाक्टर राजेश सिंह ने कहा कि गाजीपुर में देश के विभिन्न भागो से आये साहित्यकारों एवं कलाकारों की मौजूदगी एक सुखद एहसास देती है। गाजीपुर जपनद भले अन्य संसाधनो के मामले में पिछड़ा हुआ है लेकिन जनपद यहाँ के वीर सिपाहीयों ने, साहियकारों ने और राजनेताओं ने अपनी वीरता का लोहा पूरे देश को मनवाया है।

इस सत्र के बाद चौथा सत्र विमोचन का सत्र था, जिसमें लखनऊ से आई आरती वाजपेई की पुस्तक तनाव कम करें भागवत गीता के माध्यम से एवं दिलदारनगर के लेखक आनंद कुशवाहा की पुस्तक बेटियाँ अब बड़ी हो रही हैं का लोकार्पण सिंह लाइफ केयर हास्पीटल गाजीपुर के एम डी डाक्टर राजेश सिंह, व्यंग्य श्री सुभाषचंदर जी, केन्द्रीय सहायक शिक्षा निदेशक दीपक पाण्डेंय जी द्वारा किया गया। लोकार्पण कार्यक्रम का संचालन कुमार प्रवीण ने किया एवं लेखक आनंद कुशवाहा एवं आरती वाजपेई ने अपनी-अपनी पुस्तक पर प्रकाश डाला।

विमोचन के बाद भोजन का कार्यक्रम था, आज भोजन बनने में काफी विलम्ब हो गया था, लगभग 3 बज गये थे। इस दौरान सम्मान समारोह में भाग लेने चंदौली से उमेश प्रसाद सिंह, गाजीपुर से अनुश्री एवं डॉ अक्षय पाण्डेय जी का आगमन हुआ।

कार्यक्रम के पाचवें चरण में हिंदी साहित्य की कई विधाओं के देश भर से आये रचनाकारो एंव लेखको का सम्मान जमांनिया विधायक श्रीमती सुनीता सिंह के द्वारा किया गया, सम्मान समारोह में कहानी के क्षेत्र में डॉ भावना शर्मा गोपाल राम गहमरी कहानीकार सम्मान।

व्यंग्य के क्षेत्र में श्रीमती मीना अरोड़ा हल्द्वानी गोपाल राम गहमरी व्यंग्य साधक सम्मान, एकांकी लेखन में "डॉ बांका बहादुर अरोड़ा" पंजाब गोपाल राम गहमरी एकांकीकार सम्मान, छंद मुक्त के क्षेत्र में "डॉ पूनम सिंह" को गोपाल राम गहमरी छंद-मुक्त गौरव सम्मान, पंडित कपिल देव द्विवेदी स्मृति साहित्य प्रेरक सम्मान "राष्ट्रीय सरल साहित्य अकादमी" हरदोई ,शिक्षा के क्षेत्र में "डॉ इन्दू वीरेन्द्रा" हिंदी विभागाध्यक्ष जामिया इस्लामिया केन्द्रीय विश्व विद्यालय नई दिल्ली को मान्धाता सिंह शिक्षक गौरव सम्मान , गोपाल राम गहमरी अभिनेता सम्मान "श्री विजय मिश्र दानिश" जयपुर राजस्थान, "ज्योति राय" सोनभ्रद गोपाल राम गहमरी नवप्रवेशी महिला साहित्यकार सम्मान, लेख-आलेख में "डॉ दीपक पाण्डेंय" गोपाल राम गहमरी लेखक सम्मान, "संतोष कुमार शर्मा" को समाजसेवा के क्षेत्र में गोपाल राम गहमरी गौरव सम्मान,अंजली पटेल नेपाल को गोपाल राम गहमरी गायिका सम्मान 2021, राज धाम देव साहित्य शिखर सम्मान पुरूष श्री सुभाषचंदर जी नई दिल्ली, लघुकथा के क्षेत्र में सतीश चन्द्र श्रीवास्तव जी को गोपाल राम गहमरी लघु कथाकार सम्मान, प्रदान किये गये।

इस अवसर पर विधायक श्रीमती सुनीता सिंह ने कहा कि आप साहित्यकारों की यही खूबी सभी को प्रेरणा देती है कि आपको मौसम का एहसास नहीं होता, जहाँ दिल मिला वही चल दिये, आपके आने से यह धरा धन्य हुई है। आप साहित्यकारों के गहमर में आने से यहां के क्षेत्रीय लोगो को बहुत सीखने का मौका मिलेगा, गोपाल राम गहमरी कोई मामूली व्यक्ति नहीं थे, उन्होंने हिंदी और हिंदी साहित्य की दिशा और दशा बदल दिया।

सम्मान के बाद मुख्यअतिथि श्रीमती सुनीता सिंह जी ने अपनी गाड़ी से कुछ साहित्यकारों को

दिलदारनगर रेलवे स्टेशन तक भेजवाया, जहां से वह साहित्यकार मगध एक्सप्रेक्स से दिल्ली रवाना हुए।

कार्यक्रम के अंतिम चरण काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया, कुमार प्रवीण के संचालन एवं शील कौशिक जी अध्यक्षता में विजय मिश्र दानिश जी, संतोष शर्मा शान जी, ज्योति राय जी, संतोष शर्मा जी, रणविजय सिंह सोमवंशी जी, का तकेय मिश्रा जी इत्यादि के काव्यपाठ किया। इसके बाद सभी प्रतिभाग करने वालो को प्रतिभाग प्रमाण पत्र पत्रिका के नये पदाधिकारी राम भोले शर्मा पागल जी एवं रमेश यादव जी के द्वारा दिये गये। काव्य पाठ से पहले सेवराई बार ऐशोसिएशन के अध्यक्ष अशोक कुमार जी का गहमर के व्यवसाई अरूण सिंह, संजय उपाध्याय जी एवं उमेश सिंह जी के द्वारा किया गया।

काव्यपाठ के बाद बांका बहादुर अरोडा जी, संतोष शर्मा शान जी, सतीश चन्द्र श्रीवास्तव जी, अंजली पटेल जी, सुनील दुबे वृक्षमित्र जी ने वर्तमान कार्यक्रम पर अपने अपने विचार रखें।

अखंड गहमरी की कलम से

गोपाल राम गहमरी साहित्यकार सम्मेलन के शुरू हुए 7 साल हो चुके हैं परन्तु अभी भी मैं जिस प्रकार का रूप इस कार्यक्रम को देना चाह रहा था, वह अभी तक नहीं दे पाया हूँ, लेकिन मैनें सुभाष भैया से अपने उस रूप की चर्चा न सिर्फ किया बल्कि उनसे उस रूप में कार्यक्रम को कैसे बदला जाये इस पर मार्ग दर्शन भी माँगा, मुझे उम्मीद है कि सुभाषचंदर भैया जी द्वारा आगामी गोपाल राम गहमरी साहित्यकार सम्मेलन एवं सम्मान समारोह जिसका नाम कान्ति माँ एवं सुभाषचंदर भैया के द्वारा “गोपाल राम गहमरी साहित्यकार महोत्सव” कर दिया गया में देखने को आपको मिलेगा।

गोपाल राम गहमरी साहित्यकार सम्मेलन को मैं देश के सारे सम्मेलनों से हट कर सनातनी एवं ग्रामीण जीवन पर आधारित कार्यक्रम के रूप में बनाना चाहता हूँ। जहाँ शहरों से आना वाला हर अतिथि कम से कम तीन तो शहरी भागदौड़, पर्यावरण से दूर प्राकृति के गोद में रहे। पुरानी ग्रामीण परम्पराओं के आधार पर भोजन करें, माँ गंगा का आशीर्वाद ले, माँ कामाख्या के चरणों में अपना शीश झुकाये और हसते- हसाते, खिलखिलाते न सिर्फ विधाओं को सीखे बल्कि सिखाये भी, एक दूसरे को अपने विषय मे बताये एक दूसरे के विषय में जाने, चौपाल में बैठे, अपनी सुनाये हमारी सुने। वह अपने बचपन की यादों में जाकर सास्कृतिक कार्यक्रम में वह गायन, नृत्य, वादन, एकांकी प्रस्तुति करें जो जिम्मेदारीओं के बोझ तले, पद के गरिमा के बोझ तले जो दब कर अब नहीं उसके लिए सपना हो गया है। उसका जो चुलबुला पन उसका खो गया है वह कम से कम तीन दिन के लिए ही सही जीवित हो जाये।

7वें गोपाल राम गहमरी साहित्यकार सम्मेलन में इस वर्ष गहमर पहुँचे साहित्यकारों को मैं नमन करता हूं जो अधिक ठंड और कोरोना के तीसरे लहर की बात को नकारते हुए गहमर पहुँचे। 65 से अधिक बंसत देखने वाली डॉ मेजर शक्तिराज एवं शीलकौल का सिरसा चंडीगढ़ से आना अपने आप में एक अद्‌भुत साहस का कार्य था। भोपाल से सतीश मिश्रा जी एक्सीडेंट में पैर घायल होने के बाद भी गहमर पहुँचे उनके इस जज्जे को मैं नमन करता हूँ। सुभाषचंदर भैया जो अभी कोरोना के मार से बाहर आये और लगातार तबीयत खराब रहने के बाद भी गहमर पहुँच गये यह वही कर सकता है जिसके रग-रग में साहित्य और मेरे लिए छोटे भाई का प्रेम दिल में बसा हो। हरदोई से रणविजय सिंह जी पत्नी के हृदयघात होने के बाद भी गहमर पहुँचे मैं उनको भी नमन करता हूँ।

कार्यक्रम बीत जाने के बाद दो दिनो तक मेरे आवास पर रहे पठानकोट के बॉका बहादुर अरोड़ा जी को देख कर तो मैं आश्चर्य चकित रह गया, उसका एक बैग तो केवल दवाओं से भरा था। हर घंटे पर कोई न कोई न दवा, भोजन एक बार, पूरा जिगर ही उनका खुला था। धन्य है वह साहित्य का पुजारी जो इस भीषण अवस्था में भी गहमर पहुँचा, उनको अखंड गहमरी का नमन।

मैं उस महिला का स्नेह ही कहूँगा इसे कि वह दिल्ली से हवाई जहाज से अपने पतिदेव के साथ गाँव के उस कार्यक्रम में पहुँची जहाँ सुविधाओं के

अखंड गहमरी की कलम से

नाम पर केवल असुविधा ही थी, परन्तु 2 मिनट के अंदर उसी व्यवस्था में न सिर्फ वो खुद को ढाल ली बल्कि उनके पतिदेव भी उसमें खुश दिखे, नहीं तो आज कल तो पति चाहे जहाँ लेकर पत्नी को चला जाये लेकिन पत्नी यदि कही पति को लेकर जाये तो उसके पत्नी उसे व्यवस्थाओं और मान का ताना ही देते हैं, एक युगल जोड़े जिसे दुनिया डॉ इन्दू विरेन्द्रा एवं श्री विरेन्द्रा के रूप में जानती हैं मैं माँ से प्रार्थना करता हूँ कि वह उनकी स्वस्थ एवं सुखी जीवन प्रदान करें। और अपने एक मार्गदर्शक व बड़ी बहन के रूप में उनको प्रणाम करता हूँ।

25 दिसम्बर को कार्यक्रम स्थल गहमर इंटर कालेज गहमर के गेट पर सुभाषचंदर भैया और प्रबुद्व घोष के बीच उनके द्वारा कही बाते सुनकर मैं परेशान हो गया कि इनकी व्यवस्था कैसे और कहां करूँ। विदेश भ्रमण, विदेश चर्चा एवं वहाँ की बाते सुनकर मुझे लगा कि मुझे सम्मान चयन करते समय पद भी देखना चाहिए था। मैं तनाब में आ गया, लेकिन सुभाषचंदर सर के साथ उनके होने के वज़ह से कुछ राहत की सांस थी। लेकिन मेरा डर निर्थक निकला, वह शहरों की चकाचौंध व व्यवस्था का आदी व्यक्ति मेरे परिवेश में ऐसा ढला कि खुद अपनी व्यवस्था न सिर्फ बनाने लगा, बल्कि खेतों से मूली मिर्च और कूटी हुई चटनी को चटकारे लेकर खाने लगा, ऐसे बड़े भाई जैस भारत सरकार के सहायक शिक्षा निदेशक दीपक पाण्डेंय जी को मैं नमन करता हूँ, जो बता गये हरा पेड़ झुकता है।

कार्यक्रम जब प्रारंभ हुआ 24 दिसम्बर को तो गहमर इंटर कालेज गहमर बच्चों के बीच अपने से पहुँच कर उनको कतार में खड़ा कर जीवनदायक पौधों की जानकारी जब वह व्यक्ति देने लगा तो मुझे यह समझ में ही नहीं आया कि हो क्या रहा है। उनकी बातें सुन कर धीरे धीरे गहमर इंटर कालेज के अध्यापक भी अब उनके समीप जा रहे थे। जिसे बड़ी उपाधि मिली हो वह इतना नम्र देखकर आश्चर्य होता है अपनी पत्नी जो कि खुद राष्ट्रपति पुरस्कार विजेता थी शिक्षा के क्षेत्र में लेकर गहमर पहुँचे श्री सुनील दुबे जी एवं उनकी धर्म पत्नी सुधा दुबे जी को नमन करता हूँ कि वह इस कार्यक्रम में आकर कार्यक्रम की शोभा बढ़ाये। मैं उनकी योग्यता को पहचान न सका नहीं तो उनका एक विशेष कार्यक्रम गहमर के मंच पर जरूर करता।

हाथरस से आई संतोष शर्मा शान जी हर बार की तरह राधे-राधे के जयघोष से पूरे माहौल को मथुरा बना रही थी, अपनी बेबाकी के लिए जाने जानी वाली संतोष जी एक कोने में चुपचाप पड़ी रहती थी। निगाहे व्यवस्था पर जहां कमी दिखे खुद हाजिर, उनके साथ आये उनके पुत्र तो अतिथि होते हुए भी मेरे छोटे भाई की तरह सेवा में लग गये, मैं उन दोनो को नमन करता हूँ।

सुभाषचंदर सर के साथ आई डॉ पूनम सिंह मंच पर आते ही जिस प्रकार आधुनिक कविता यानि छंद मुक्त कविता की दिशा और दशा बदलने वालो पर प्रहार किया, उसकी जितनी तारीफ की जाये वह कम है। उन्होंने मेरी एक सोच कि जब तक हम एक दूसरे की सभ्यता और संस्कृति उसके दिल में उतर कर नहीं देखेगें तब तक लेखन संभव ही नहीं है। शहरी परिवेश में रहते हुए जिस प्रकार सादगी का परिचय दिया और छोटे भाई के रूप में मुझे संबोधन दिया मैं अपनी बड़ी बहन के रूप में उनको प्रणाम करता हूँ।

भारत के बाहर नेपाल से आई अंजनी पटले की हिम्मत का तो मैं कायल हो गया, नेपाल की सर्द रात में बस का सफर, बार्डर पर तमाम समस्याएं , अकेले रात में रक्सौल स्टेशन पर बैठना और गाजीपुर से गहमर बस से आने के बाद तुरंत कार्यक्रम प्रस्तुत करना और उसके बाद अचानक विद्यालय से फोन आने के कारण बस से गोरखपुर, सनौली होते हुए नेपाल पहुँचा अपने आप में पुरूषों के लिए कठिन था लेकिन वह महिला अपनी बहादुरी से हालतों पर विजय प्राप्त कर गहमर के कार्यक्रम को सफल बनाने में अपने तन-मन का सहयोग दिया, सबके साथ हसना बोलन मिलना, मैं उन्हें नमन करता हूँ उनकी इस जीवता के लिए।

गहमर ही नहीं बल्कि पूरे गाजीपुर जनपद के इतिहास में फिल्म प्रदर्शनी का आयोजन पहली बार हुआ। अपनी तमाम व्यस्ताओं के बीच अधिसूचना निकालना, उसे सभी को भेजना, फिल्में मॉगाना, उसको नेट से भेजना, मेरे कम्प्यूटर से निकाल कर उसको प्रदर्शन हेतु ले जाना इतने सारे काम एक साथ यदि कोई कर सकता है तो वह इस फिल्म प्रदर्शनी के आयोजन का सबसे बहादुर योद्धा प्रबुद्धा घोष जिसे मैं प्रभू पूना कहता हूँ ही है। कलाओं का अथाह समुन्द्र हैं हमारे प्रभू भाई पेंटिग, खेती, फिल्में, लेखन और न जाने कितनी प्रतिभाओं को छुपाए हुए हैं वह अपने अंदर, उन्हें मैं जितना

अखंड गहमरी की कलम से

समझने की कोशिश करता हूँ लगता है उतना ही कम है, और उनसे मिलीए तो लगता है कि एक सहज सरल इंसान जो केवल जीता खाता है। पूना से गहमर आकर पूरे कार्यक्रम को संभालना और हर व्यवस्था में मेरे साथ साथ चलने वाले प्रभू भाई को मैं सादर प्रणाम करता हूँ, और माँ कामाख्या से प्रार्थना करता हूँ कि वह उनका साथ हमेशा बनाये रखे उन्हें स्वस्थ व सुखी रखे।

जयपुर से पधारे क्राइम पेट्रोल एवं अन्य कई सिरियलों एवं नाटको का मंचन करने वाले विजय मिश्र दानिश भाई का लगातार दूसरे वर्ष गहमर पहुँच जाना मेरे लिए न सिर्फ सुखद रहा बल्कि हसने हसाने का मौका मिल गया। गहमर आते समय ट्रेन में टी0टी0 द्वारा 100 रूपये उनकी पेनाल्टी लग गई, और जाते समय श्रमजीवी एक्सप्रेक्स कैंसिल हो गई। मंच पर हाजिर जबाव एवं अपनी शायरी से सभी को प्रभावित करने वाले विजय मिश्र दानिश भाई जिंदादिलों के साथी और मुर्दो के दुश्मन हैं, जो कहना है बेबाकी से कह दिया। हाँ तो हाँ और ना तो ना, इतनी ठंड के मौसम में ट्रेनों को बदलते हुए गहमर पहुँचे विजय भाई को मैं नमन करता हूँ। अधिक कुछ लिखूँगा तो बेगानगी का एहसास उनको भी होगा और मुझे भी।

पंजाब मेल से 24 की रात पूरी एक टीम लेकर गहमर पहुँचे और पहुँच कर संचालन एवं सम्मान समारोह के आयोजन की जिम्मेदारीयाँ लेने वाले राम भोले शर्मा ऊर्फ पागल जिन्हें मैं 8934 बार राम भरोसे शर्मा ही कह जाता हूँ कार्यक्रम की अधिसूचना निकलने के बाद से ही कई विषयों पर हमारे साथ हो लिए, चर्चा करना, उसके मूर्ति रूप देना, व्यवस्थाओं को समझना, अपने क्षेत्र से लोगो को जोड़ना कार्यक्रम के दो दिन पूर्व तक चलता रहा। पत्रिका के पदाधिकारी के रूप में जब उनका चुनाव किया गया तो सिर्फ इतना ही कहा कि मैं पदाधिकारी रहूँ ना रहूँ आपके साथ तन मन से हूँ, और उसका अक्षराशं उन्होंने पालन भी किया मैं उनको भी नमन करता हूँ, और उनके साथ आये शालू सिंह, अनिल जी सहित सभी साहित्कारों का हृदय से आभार व्यक्त करता हूँ जो अपना बहुमुल्य समय हमें दिये। हमारी व्यवस्थाओं में अपने आपको ढाल लिये।

कार्यक्रम से महज कुछ दिन पूर्व सोशलमीडिया के माध्यम से मुलाकात हुई, कार्यक्रम के दिन भी मुख्यमंत्री महोदय के कार्यक्रम में उनकी डियूटी लगी थी उसके बाद भी रात भर का सफर तय करके गहमर पहुँच उ0नि0 रणजीत यादव लगता ही नहीं कि वह पुलिस जैसी सेवा में हैं। व्यवहार सरल, लेखनी सरल, बिल्कुल अगल अंदाज। कार्यक्रम स्थल पर सभी अतिथियों को स्वागत, उनकी सेवा, उनकी व्यवस्था, उनके भोजन, उनका बैग उठाना लगता ही नहीं था कि यह व्यक्ति वर्दीधारी भी है। अपने कर्म से अपनी पहचान बनाने वाले उ0नि0 रणजीत यादव के अंदर सेवा भावना कूट कूट कर भरी है जो उन्हें अपने जीवन में बहुत ही आगे ले जायेगी। गंगा स्नान से लेकर मंच के सम्मान तक बहुत ही सरलता के साथ रहने वाले रणजीत यादव जी को मैं नमन करता हूँ कि वह भारी व्यस्तता में समय निकला कर पूरे दो दिनो तक हमारी सेवा को स्वीकार किये।

25 दिसम्बर को श्रमजीवी एक्सप्रेक्स से आयी ज्योति राय जी चुपचाप दर्शक दिर्घा में बैठी रही। महिलाओ के साथ हसना बोलना इत्यादि तो रहा ही होगा लेकिन पूरे 24 घंटे का समय बिना किसी आयोजन में भाग लिये केवल देखना सुनना आज आर्श्चय की बात लगात है। सम्मान समरोह के बाद रात की गाड़ी से वापस जान में पूरा समय था लेकिन मंच की तब भी यह नहीं कि मंच की गरिमा को तोड़ते हुए लम्बा समय लिया जाये। बागी बलिया की इस बेटी ने बागी बलिया के नाम की तरह महज 3 मिनट के काव्य पाठ में सनातन और वीरता के क्षेत्र में मंच को जो ऊचाई प्रदान किया, जिस जोश के साथ कविता का पाठ किया वह निश्चित तौर पर नमन योग्य है, जाड़े की रात में बस के द्वारा सोनभ्रद से बनारस और बनारस से गहमर पहुँची पहुँची ज्योति राय जी के हौसले एवं उनकी व्यवस्था को स्वीकार करने की क्षमता के लिए नमन करता हूँ। आशा करता हूं माँ कामाख्या उनके तेज को बनाये रखेगीं।

इसी के साथ मैं कार्यक्रम में आये कार्तिक मिश्रा, अनिल जी, एवं तमाम ऐसे मेरे अतिथि साहित्यकार जिनका नाम मैं नहीं ले पा रहा हूँ उनको उनकी जीवटता के लिए नमन करता हूँ। एवं अपने क्षेत्र से आये पत्रिका के सहायक संपादक उमेश जी, रमेश यादव जी, मंच संचालक एवं स्थानीय स्तर पर साहित्यकारों को जोड़ने, पुस्तको का विमोचन मंच से कराने एवं मुझे मार्गदर्शित करने वाले कुमार प्रवीण जी एवं उनकी टीम, आनंद कुशवाहा जी और आरती वाजपेई जी जिनकी पुस्तक का विमोचन हुआ मैं

अखंड गहमरी की कलम से

सातवें गोपाल राम गहमरी साहित्यकार सम्मेलन की खास बातें

(01) जो अतिथि जोड़े से आये थे सम्मान ग्रहण करते समय एक दूसरे का मंच पर माल्यार्पण किये और इसके पूर्व एक दूसरे का माल्यापर्ण उन्होंने कब किया था उसके बारे में भी बताये। यह कार्यक्रम पूर्व घोषित नहीं था अचानक की उपज थी। इस कार्यक्रम से सभी आश्चर्य में पड़ गये, लेकिन सभी को अच्छा लगा, यहाँ तक की खुद मुख्यअतिथि जमानियां विधायक श्रीमती सुनीता सिंह ने इसकी तारीफ किया।

(02) 7वें गोपाल राम गहमरी साहित्यकार सम्मेलन 2021 में कुल 7 सम्मान अतिथियों के न पहुँच पाने के कारण निरस्त किये गये।

(03) 7वें साल पहली बार माता जी के पीहर के गृह जनपद मुँगेर से गहमर कार्यक्रम में पहुँचे एक बड़े साहित्यकार जिनका मैं न पद जानता हूँ न काम बस मुँगेर के नाम पर दिल का सम्मान और पत्रिका में महत्पपूर्ण पद अपने लालच वश कि वह मुँगेर में इस सरोज नाम को पटल पर लायेगें आये और अपनी उपयोगिता न समझ पाने के कारण रोकने के वावजूद चले गये, उनका इतर जाना कुछ जिद दे गया। जब पत्रिका अपने दम पर अपनी संस्थापिका के पीहर में अपनी पहचान बनायेगी।

(04) 7 सालो में पहली बार कार्यक्रम के दूसरे दिन मैं देर तक सोता रहा और गंगाघाट पर भी गया, इसका मुख्य कारण सुभाषचंदर सर की गहमर मौजूदगी रही। पूरे कार्यक्रम में विजय भाई और प्रभू पूना के वजह से हडबड़ी-गड़बडी नहीं दिखी।

(05) कार्यक्रम शुरू होने के एक दिन पहले तक घर में हुई चोरी और कार्यक्रम के दिन पिता जी के बिमार पड़ने के कारण कोई तैयारी नहीं हो पाई थी, सारी तैयारी 23 दिसम्बर को पूरी हुई।

(06) इस कार्यक्रम में पर्दे के पीछे से कान्ति माँ डा0 राम कुमार चतुर्वेदी और संदीप अवस्थी जी हमारे साथ दूर से ही चल रहे थे, हर कार्यक्रम की सूचना एवं व्यवस्था का जायजा वह ले रहे थे।

(07) इस बार का कार्यक्रम कम शुरू हुआ कब समाप्त हो गया पता ही नहीं चला, आप सब के आने से इतनी ऊर्जा का संचार हुआ कि लगता है दस दिन का भी कार्यक्रम आराम से हो गया होता।

कविता

सुनो यामिनी
हृदय द्वार पर
आती मेरी पुकार।
हर आहट पर
खोजती निर्बाध मुझे
क्या अब भी करोगी
आहत स्वयं को?
यही पूछा था न तुमने
उस बेला में,
जब सूर्य बादलों के
कांधे से उतर
सागर की गोद में
थक कर सो गया,
जब शाम
मधुर मिलन की
आस में
जलती बुझती
रात के
अंधकार में खो गई,
और उस तम को
विच्छेदित करने को
कोई दीपक मुंह उठाये
प्रकाश बिखेरता
देने लगा यह संदेश
कि समय नहीं ठहरता
किसी भी पड़ाव पर
न दुख में व्याकुल
न सुख को आतुर
फिर कैसे जाना तुमने
कि कुछ ठहर गया है
हमारे और तुम्हारे मध्य
क्यों?
क्यों इतनी देर लगा दी
तुमने हमसे ये कहने में?
और उधर वो समय
वो कह रहा है कि
मुझे जाना है, जाना ही होगा
अपना रीता मन और
नैनों की अथाह प्यास
इनको संभालना होगा,
इसलिए व्यथित हृदय के
द्वार से लौट आओ
कर अनसुनी पुकार
यामिनी, तुम लौट आओ।

आशु अंडमानी

शार्ट फिल्म

यह अंक आपको कैसा लगा 7068990410पर वाटसएप करें

एआईझ्रएम" इंटरनेशनल डिजिटल शार्ट फिल्म फेस्टिवल (इंडिया) 2020

पहले "एआई एम" इंटरनेशनल डिजिटल शार्ट फिल्म फेस्टिवल (इंडिया) 2020 की दूसरी स्क्रीनिंग 24 दिसम्बर 2021 से 26 दिसम्बर 2021 पर गहमर, उत्तर प्रदेश में आयोजित की गई। तीन दिनों तक चलने वाले इस स्क्रीनिंग का शुभारंभ भारत सरकार के सहायक शिक्षा निदेशक श्री दीपक पाण्डेय ने 24 दिसम्बर को द्वीप प्रज्जवल कर एवं किया। शुभारंभ के बाद भारत के प्रसिद्व साहित्यकार व्यंग्यश्री सुभाषचंदर ने रिमोट के जरिये फिल्मों को दर्शकों के लिए प्रारंम्भ किया।

यह यूएनआईसीए (फिल्म और वीडियो के लिए विश्व संगठनों में से एक है और यूनेस्को के आईएफटीसी के सदस्य हैं) के तत्वावधान में आर्ट इनसाइट मीडियम द्वारा "साहित्य सरोज" पत्रिका के समर्थन से आयोजित किया गया था।

इस अवसर पर महोत्सव निदेशक प्रबद्व घोष ने जानकारी दी है कि सार्थक फिल्मों को बढ़ावा देने के लिए यह उनका ड्रीम प्रोजेक्ट है। वे सभी लघु-फिल्म निर्माताओं को उनके आगे के विकास और बेहतर दर्शकों की संख्या के लिए एक अंतरराष्ट्रीय मंच प्रदान करना चाहते हैं। सर्वश्रेष्ठ फिल्म का पुरस्कार (दादासाहेब फाल्के सेसक्विसेंटेनियल अवार्ड) नीदरलैंड के "स्ट्रेंज बर्ड्स" को जाता है और निर्देशक हेलेन डालसिन को सत्यजीत रे जन्म शताब्दी सर्वश्रेष्ठ निर्देशक का पुरस्कार मिलता है। मराठी फिल्म "दारमजाल" को निर्देशकों की पसंद मिली है, जबकि बंगाली "शेशेर कथा" को भारतीय श्रेणी के लिए सर्वश्रेष्ठ लघु फिल्म मिली है। बीजू दास को उनकी फिल्म "देवी" के लिए सर्वश्रेष्ठ कहानी पुरस्कार के लिए चुना गया है, जुडिथ बोसचोटेन को वेलेंटाइन (नीदरलैंड) के लिए सर्वश्रेष्ठ फोटोग्राफी पुरस्कार मिला है और ब्लेक लैटनर, हकीम रीगन को उनकी फिल्म "द अमेरिकन ड्रीम" के लिए सर्वश्रेष्ठ पटकथा से सम्मानित किया गया है।

आस्ट्रियाई वृत्तचित्र "फॉरगॉटन बाय द वर्ल्ड" को सर्वश्रेष्ठ वृत्तचित्र फिल्म पुरस्कार के साथ-साथ सर्वश्रेष्ठ फिल्मों में से सर्वश्रेष्ठ श्री पी के नायर मेमोरियल पुरस्कार के लिए चुना गया।

हिंदी लघु फिल्म "देश भक्त" और "दैट ट्री ऑफ माई लाइफ" (भारत) को क्रमशः सर्वश्रेष्ठ माइक्रो लघु फिल्म और सर्वश्रेष्ठ माइक्रो एनिमेशन फिल्म का पुरस्कार मिला है। बंगाली लघु फिल्म "निशि" को विशेष जूरी पुरस्कार मिला है। संजीव नायडू के "कैलासा मंदिर, एलोरा" (भारत) ने सर्वश्रेष्ठ संपादक (वृत्तचित्र) के साथ सराहना की है और पीपुल्स च्वाइस अवार्ड (वृत्तचित्र) भी प्राप्त किया है।

महोत्सव निदेशक प्रबुद्व ने यह भी बताया है कि उन्होंने विश्वव्यापी महामारी के दौरान इस मुफ्त उत्सव की व्यवस्था की है और इसे आयोजित करना वास्तव में एक कठिन काम था। लेकिन वह 10 देशों से सत्तर प्रविष्टियां पाकर खुश हैं। प्रबुद्ध को लगता है कि यह निश्चित रूप से समानांतर लघु फिल्म निर्माताओं को बढ़ावा देगा और उसी बिरादरी के उत्साही लोगों का समर्थन करना जारी रखेगा। "यूनिका ने भी अपने आधिकारिक मिस्टर वोल्फगैंग एलिन के माध्यम से एक सफल शो के लिए हमारा समर्थन किया है"।

लघु फिल्म महोत्सव में गहमर का उत्कृष्ट योगदान रहा है, पहले इसे यहां प्रदर्शित किया जा रहा है और दूसरी "साहित्य सरोज" पत्रिका की संस्थापक स्वगह्वय श्रीमती सरोज सिंह के नाम पर 'महिला सशक्तिकरण पुरस्कार' दिया गया है। लेखक और फिल्म समीक्षक ऋषिकेश जोशी, कलाकार स्वामी जेन वर्तन जूरी सदस्यों में शामिल थे।

इस संबंध में कार्यक्रम के व्यवस्थापक श्री अखंड गहमरी ने बताया कि एआईएम ने विभिन्न सामाजिक क्षेत्रों से फिल्मों की भावना प्राप्त करने की कोशिश की है। वह लगातार इस क्षेत्र में बहुत ही अच्छा कार्य कर रही है। हमें इसके साथ जुड़ कर खुशी होगी। अखंड गहमरी ने आगे कहा कि वह इस संस्था के साथ मिल कर साहित्य सरोज पत्रिका की संपादिका श्रीमती सरोज सिंह की पुण्य तिथि 02 अप्रैल को प्रत्येक वर्ष "साहित्य सरोज शार्ट फिल्म डे"के रूप में मनाने का फैसला किये हैं। जिसके तहत ग्रामीण क्षेत्रों में शार्टफिल्म के निर्माण का सेटप लगाया जायेगा तथा वहॉ के लेखक, कलाकार, निर्माता, एवं शार्ट फिल्म निमार्ण से जुड़े हर विधा के लोगो को आगे बढ़ाया जायेगा।

1st AIM INTERNATIONAL
DIGITAL SHORT FILM FESTIVAL
(INDIA) 2020
Under the auspices of
UNICA
Screening Location : Gahmar, Uttar Pradesh, India
Organized by
ART
INSIGHT
MEDIUM
Managed by :
SAHITYA SAROJ MAGAZINE & AKHAND PRATAP SINGH
CONFERENCE 2021

1st AIM INTERNATIONAL
DIGITAL SHORT FILM FESTIVAL
UNICA

साहित्य
9451647845
धर्म क्षेत्र
स्मृति में साहित्य सरोज पत्रिका
7वें वर्ष आयोजित तीन दिवसीय
एवं सम्मान समारोह
24-26 दिसम्बर 2021
कलाकारों, मुख्यअतिथि,
स्वागत एवं अभिनंदन है।
7 वाँ गोपाल राम गहमरी साहित्यकार सम्मेलन 2021
24-26 दिसम्बर 2021, गहमर, गाजीपुर, उ0प्र0
सेहत से सफलता की ओर
स्वास्थ्य जागरण अभियान के अन्तर्गत
25 दिसम्बर 2021 सायः 05 बजे
गहमर इन्टर कालेज गहमर
ममता सिंह
7985798456
धर्मेन्द्र सिंह